ॐ

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला का अट्ठाईसवाँ पुष्प

सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य नेमिचंद्र के महान ग्रंथ गोम्मटसार पर आधारित

श्री गोम्मटसार विधान

राजमल पवैया

संपादक

श्री डॉ. देवेन्द्र कुमार शास्त्री नीमच

अध्यक्ष अ. भा. दि. जैन विद्वत परिषद

प्रकाशक

भरत पवैया एम. काम. एल. एल. बी.

संयोजक

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला

४४ इब्राहीमपुरा भोपाल - ४६२ ००१

प्रथम आवृत्ति	रक्षा बंधन वीर संवत् २५२२ अगस्त १९९६	न्योछावर २५/-

प्रकाशकीय

दसवीं शताब्दी में हुए सिद्धान्त चक्रवर्ती आचार्य श्री नेमिचंद्र द्वारा रचित करणानुयोग के महान ग्रंथ पर आधारित श्री गोम्मटसार विधान प्रकाशित करते हुए हम अत्यंत गौरव का अनुभव कर रहे हैं।

इसके कंपोजिंग के लिए शुभ श्री ऑफसेट प्रोसेसर्स के श्री नीरज जैन एंव अयोध्या ग्राफिक्स के श्री नीरज भार्गव सुन्दर मुद्रण के लिए धन्यवाद के पात्र हैं, संपादन के लिए श्री डॉ देवेन्द्र कुमार जी शास्त्री नीमच एव प्राक्कथन के लिए लिए वाणी भूषण प ज्ञान चद्र जी विदिशा *के हम आभारी है। ग्रंथमाला के संरक्षकों को उनके हार्दिक सहयोग के* लिए धन्यवाद।

हमे हर्ष है कि विधान में तीर्थंकर नेमिनाथ एवं उनके भ्राता बलभद्र एवं नारायण का अत्यंत दुर्लभ चित्र साथ ही आचार्य नेमिचद्र सिद्धान्त चक्रवर्ती और उनके प्रिय शिष्य वीर चामुन्डराय अपर नाम गोम्मटराय का भी चित्र दे रहें है। पूज्य आचार्य श्री ने अपने प्रिय शिष्य के नाम पर ही इस महान ग्रथ का नाम गोम्मटसार रखा। यह उनकी महान उदारता का परिचायक है। विधान में पूज्य आचार्य श्री का चित्र तो है ही साथ ही कवर पर उनके द्वारा प्रतिष्ठित भगवान गोम्मटेश्वर की जगत विख्यात मूर्त्ति का श्रवण वेला गोला सुस्थित चित्र भी दे रहे है।

४४ इब्राहीमपुरा भोपाल
भोपाल ४६२ ००१
फोन ५३१३०९

रक्षा बंधन
वीर सं २५२२

भरत पवैया
संयोजक
तारादेवी पवैया ग्रंथमाला

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान

विषय सूची

ॐ

तारादेवी पवैया ग्रंथमाला

संरक्षक सूची

प्रधान संरक्षक

१९०१/- परम आदरणीय महामहिम राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल जी शर्मा
राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली

११०१/- भारत की प्रथम महिला परम आदरणीय श्री. सौ. विमला शर्मा ध. प.
राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल जी शर्मा, राष्ट्रपति भवन नई दिल्ली

संरक्षक

२१,०००/- श्री स्व. माते श्वरी सुबा बाई ध. प. स्व रतन लाल जी पहाड़िया पीसांगन
की पुण्य स्मृति में श्री रिखब चंद जी नेमी चंद्र जी पहाड़िया परिवार

१०,०००/- श्री दि. जैन मुमुक्षु मंडल, झवेरी बाजार, बंबई

५,०००/- श्री पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली

११०१/- श्री डा. गौरीशंकरजी शास्त्री एम.ए. (ट्रिपल) सप्ततीर्थ पी.एच.डी. अध्यक्ष
म.प्र.स्वतंत्रता संग्राम सैनिक संघ भोपाल

११०१/- श्री सौ. डा. राजकुमारी देवी ध.प. श्री डा. गौरीशंकरजी शास्त्री भोपाल

११०१/- बाल. ब्र. पद्मश्री सुमतिबेन शहा संस्थापक श्राविका संस्थान सोलापुर
द्वारा बा.ब्र. विद्युल्लता शहा सोलापुर

२५००/- स्व. बालचन्दजी, अशोक नगर द्वारा चौधरी फूलचन्दजी, बंबई।

१६००/- श्री इन्द्रध्वज मण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर, तलोद

११००/- श्रीमती बसन्ती देवी धर्मपत्नी स्व. डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन, भिण्ड

११००/- कु. लिटिल (पल्लवी) सुपुत्री पूर्णिमा धर्मपत्नी शैलेन्द्र कुमार जैन, भिण्ड

११००/- श्रीमती सुहागबाई धर्मपत्नी बदामीलाल जैन, भोपाल

११००/- श्री मोहनलाल जैन म. प्र. ट्रांसपोर्ट, भोपाल

११००/- श्री हुकुमचन्द सुमतप्रकाश जैन, भोपाल

११००/- श्रीमती सुशील शास्त्री धर्मपत्नी श्री के. शास्त्री, नई दिल्ली

११००/- सौ. सुशीलादेवी धर्मपत्नी ताराचन्द जैन, इटावा

११००/- श्री जैन युवा फेडरेशन मुरार से प्राप्त सम्मान राशि

११००/- सौ. शशिप्रभा धर्मपत्नी महेशचन्द जैन, फिरोजाबाद

११००/- सौ. प्यारीबाई धर्मपत्नी बाबूलाल जी विनोद, भोपाल

११००/- स्व. [illegible] देवी धर्मपत्नी [illegible], भोपाल

११००/- सौ. स्नेहलता धर्मपत्नी चन्द्रप्रकाश सोनी, इन्दौर

११००/- सौ. रानी देवी धर्मपत्नी सुरेशचन्द पांड्या, इन्दौर

११००/- श्री दि. जैन महिला मंडल, भोपाल से प्राप्त सम्मान राशि

१०००/- श्री दि. जैन स्वाध्याय मंदिर, राजकोट

१०००/- देवलाली कवि सम्मेलन से प्राप्त सम्मान राशि

१०००/- सौ. निर्मला धर्मपत्नी भरत पवैया, भोपाल

१०००/- श्री भरत पवैया, भोपाल

१०००/- श्री उपेन्द्र कुमार नगेन्द्र कुमार पवैया, भोपाल

१०००/- श्री चौधरी फूलचन्दजी, बंबई

१०००/- श्री कुन्दकुन्द कहान स्मृति सभागृह, आगरा

१०००/- श्री उम्मेदमल कमलकुमारजी बड़जात्या, बंबई

१०००/- श्री हुकुमचन्दजी सुमेरचन्दजी, अशोकनगर

१०००/- सौ. राजबाई धर्मपत्नी राजमल जी लीडर, भोपाल

१०००/ सौ. सुधा धर्मपत्नी महेन्द्रकुमार जी अलंकार लाज, भोपाल

१०००/- सौ. मधु धर्मपत्नी जितेन्द्र कुमार जी सराफ, भोपाल

११०१/- सौ. कमलादेवी धर्मपत्नी खेमचन्द जैन सराफ, भिण्ड

११०१/- सौ. मधु धर्मपत्नी डां. सत्यप्रकाश जैन, नई दिल्ली

५५५५/- श्री परमागम दि. जैन मंदिर ट्रस्ट, सोनागिर

११००/- सौ. जिनेन्द्रमाला धर्मपत्नी हेमचन्दजी जैन, सहारनपुर

११००/- सौ. श्री कान्तादेवी ध. प. शान्तिप्रसाद जैन, दिल्ली (राजवैद्य एंड सस)

११००/- सौ. रतनबाई धर्मपत्नी श्री सोहनलालजी जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर

११००/- सौ. वैजयंती देवी धर्मपत्नी बाबूलालजी पाड्या लाला परिवार, इन्दौर

११००/- पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली

२५०१/- सौ. लाभुबेन ध. प. श्री अनिल कामदार, दादर

१०००१/- पू. कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली

११०१/- सौ. माणिकबाई धर्मपत्नी फूलचदजी झांझरी, उज्जैन

११०१/- सौ. सुनीता ध. प. विनय कुमार जी जैन ज्वेलर्स, देहरादून

११००/- सौ. अनीता ध. प. मोहित कुमार जी मेरठ

११००/- सौ. [illegible]बाई ध. प. चौधरी फूलचंदजी, बंबई

११००/- सौ. स्व. तुलसाबाई ध. प. स्व. बालचंदजी अशोक नगर

११०१/- सौ. प्रेमबाई ध. प. शान्तिलाल जी [illegible]

११०१/- सौ. स्नेहलता ध. प. देवेन्द्रकुमार जी बड़कुल अरविन्द कटपीस, भोपाल

११०१/- सौ. शान्तिबाई ध. प. श्री श्रीकमलजी एडवोकेट, भोपाल

११०१/- सौ. [illegible]बाई ध. प. श्री छन्नूलाल जी मदन मेडिको, भोपाल

११०१/- श्रीमती जैनमती ध. प. स्व. मदनलालजी भोपाल

११०१/- सौ. कमलाबाई ध. प. श्री माणिकचंद जी पाटोदी, लुहारदा

११०१/- सौ. तेजकुंवर बाई ध. प. श्री उम्मेदमल जी बड़जात्या दादर, बंबई

१००१/- श्री दि. जैन मुमुक्षु मंडल नवरंगपुरा अहमदाबाद

११०१/- सौ. कोकिला बेन ध. प. श्री हिम्मतलाल शाह कहान नगर दादर, बंबई

११०१/- श्री सुरेशचंदजी सुनीलकुमारजी, बैंगलोर

१०००/- श्री पूज्य कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली

११०१/- सौ. सविता जैन एम. ए. सुपुत्री प्रेफेसर महेशचंद जैन, गोहद

११०१/- सौ. सुशीलादेवी ध. प. श्री चंद्र जैन सुभाष कटपीस, भोपाल

१००१/- श्री सौ. चन्द्रप्रभा, ध. प. डा. प्रेमचंदजी जैन ४ अरविन्द मार्ग, देहरादून

११०१/- श्री आचार्य कुन्दकुन्द साहित्य प्रकाशन समिति, गुना

११०१/- सौ. शान्तिदेवी ध. प. श्री बाबूलालजी (बाबूलाल प्रकाश चद्र), गुना

११०१/- सौ. उषादेवी ध. प. श्री राजकुमारजी (बाबूलाल प्रकाश चंद्र), गुना

११०१/- सौ. अशरफीदेवी ध. प. ज्ञानचंदजी धरनावदवाले, गुना

११०१/- सौ. पद्मादेवी ध. प. श्री डा. प्रेमचंद जी जैन, गुना

११०१/ सौ. धन्यकुमारजी विजयकुमारजी, गुना

११०१/- सौ. आशादेवी ध. प. अरविन्द कुमारजी, फिरोजाबाद

११०१/- सौ. श्री ज्ञानचंदजी मनोज कटपीस, भोपाल

११०१/- सौ. रजनीदेवी ध. प. श्री नरेन्द्र कुमारजी जियाजी सूटिंग, ग्वालियर

२००१/- सौ. मंजुला बेन ध. प. श्री मणिलालजी, दादर

११०१/- स्व. सुआबाई मातुश्री रिखबचन्द्र नेमीचंद पहाड़िया, पीसांगन (अजमेर)

११०१/- सौ. तुलसाबाई ध. प. श्री नवलचंदजी जैन, भोपाल

११०१/- सौ. रत्नाबाई ध. प. श्री सरदारमलजी वर्फी हाउस, भोपाल

११०१/- श्री नवल कुमारी ध. प. स्व बाबूलालजी सोगानी, भोपाल
११०१/- श्रीमती कमलश्री बाई ध. प. स्व डालचंदजी जैन, भोपाल
११०१/- श्री परमागम मंदिर ट्रस्ट, सोनागिर
११०१/- श्री दि. जैन मुमुक्षु मंडल, हिम्मत नगर
११०१/- सौ. मंजुला ध. प. शान्तिलाल गांधी, मैनेजर, सेन्ट्रलबैंक, जोरहाट
११०१/- श्रीमती सुखवती बाई ध.प. स्व. श्री बाबूलाल जी ठेकेदार, भोपाल
११०१/- स्व. श्रीमतीबाई ध. प. कालूरामजी, सत्यम टेक्सटाइल, भोपाल
११०१/- सौ. शकुन्तलादेवी ध. प. रतनलाल श्री सोगानी, भोपाल
२५००/- सौ. रमाबेन धर्मपत्नी सुमन भाई माणेकचंद्र दोशी, राजकोट
११००/- सौ. मीनादेवी एडवोकेट धर्मपत्नी डां. राजेन्द्र भारिल्ल, भोपाल
१०००/- श्रीमती पुष्पा पाटोदी, मल्हारगंज, इन्दौर
११००/- श्री जेठाभाई एच. दोशी सेक्रिन ब्रदर्स, सिकंदराबाद
११००/- सौ. सुशीलाबाई धर्मपत्नी लक्ष्मीचन्द जैन विकास आटो, भोपाल
११००/- सौ. मीना जैन धर्मपत्नी राजकुमार जैन सेन्ट्रल इन्डिया बोर्ड एन्ड पेपर मिल, भोपाल
११००/- सौ. रजनी जैन धर्मपत्नी अरविन्द कुमार जैन अनुराग ट्रेडर्स, भोपाल
१०००/- स्व. गुलाब बाई धर्मपत्नी स्व. पातीराम जी जैन, भोपाल
११००/- सौ. शान्तिदेवी धर्मपत्नी श्री नरेन्द्र कुमार आदर्श स्टील, झांसी
१०००/- श्रीमती मातेश्वरी चौधरी मनोज कुमार जैन माटुंगा, बंबई
११००/- श्री कोकिलाबेन पंकजकुमार पारिख दादर, बंबई
११००/- स्व. श्री कंकुबेन दिलवदास जी द्वारा शान्तिलालजी दादर
११००/- श्री हीराभाई चिमनलाल शाह प्रदीप सेल्स पाव धुनी बंबई
११००/- श्रीमती रक्षाबेन विनयचन्द्र चेरिटेबल ट्रस्ट दादर, बंबई
१०००/- सौ. फैन्सीबाई धर्मपत्नी सेवामलजी कानज, पूना
११००/- स्व. सौ. मिश्रीबाई धर्मपत्नी राजमल जी फर्म एल रतनलाल, भोपाल
१.१००/- सौ. हीरामणी धर्मपत्नी श्री मांगीलालजी जैन, भोपाल
११०१/- सौ. पूनम जैन धर्मपत्नी श्री देवेन्द्र कुमार जैन, सहारनपुर
२१०१/- श्री पंडित कैलाशचंद जी कुन्द-कुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर देहरादून
११०१/- सौ. मनोरमादेवी धर्मपत्नी श्री जयकुमार जी बज कोहेफिजा, भोपाल
११०१/- श्री मथुरालालजी भंडारी, बेंगलोर

११०१/- श्री फूलचंदजी विमलचंद जी झांझरी, उज्जैन
११११११/- स्व. श्री जयकुमार जी की स्मृति में मेसर्स मनीराम मुंशी लाल उद्योग समूह, फिरोजाबाद
११०१/- सौ. अनीता धर्मपत्नी राजकुमार जी, भोपाल
११०१/- सौ. मीनादेवी धर्मपत्नी चन्द्रप्रकाश जी, इटावा
११०१/- सौ. मोतीरानी धर्मपत्नी कैलाश चंद्र जी , भिण्ड
११०१/- सौ. ब्रजेश धर्मपत्नी अभिनंदन प्रसाद जी, सहारनपुर
२१०१/- सौ. रत्नप्रभा धर्मपत्नी मोतीचंदजी लुहाडिया, जोधपुर
५१११/- श्री केशरीचंद जी पूनमचंद जी सेठी ट्रस्ट, नई दिल्ली
११०१/- सौ. मीनादेवी धर्मपत्नी केशवदेव जी, कानपुर
११०१/- श्री श्यामलाल जी विजयवर्गीय पी. बी. ज्वेलर्स, ग्वालियर
११०१/- सौ. मधु धर्मपत्नी विनोद कुमार जी, ग्वालियर
११०१/- स्व. कैलाशीबाई धर्मपत्नी स्व. रतनचंद जी, ग्वालियर
११०१/- स्व. रत्नादेवी धर्मपत्नी स्व. छुन्नामल जी , ग्वालियर
११०१/- सौ. अरुणा धर्मपत्नी निर्मलचंद जी, ग्वालियर
११०१/- स्व. चमेलीदेवी धर्मपत्नी निर्मल कुमारजी एडवोकेट, ग्वालियर
११०१/- स्व. रघुवरदयाल जी की स्मृति में खेमचंद जी सत्यप्रकाश जी, भिण्ड
११०१/- चि. अंकुर पुत्र सौ. सुधा ध.प.सुनील कुमार जैन, भिण्ड
११०१/- सौ. मायादेवी धर्मपत्नी सुभाष कुमार जी, भिण्ड
११०१/- सौ. विमलादेवी धर्मपत्नी उत्तम चंद जी बरोही वाले , भिण्ड
११०१/- स्व. श्री मूलचंद भाई जैचंद भाई भू. पूर्व मंत्री तारंगा जी
११०१/- श्री दोसी बसंतलाल जी मूलचंद जी , बंबई
११०१/- श्री कनुभाई एम. दोसी, बंबई
११०१/- श्रीमती लीलावती बेन छोटालाल मेहता, बंबई
११०१/- सौ निर्मलादेवी धर्मपत्नी छोटेलालजी एन. पाण्डे, बंबई
११०१/- श्री शान्तिलाल जी रिखवदास जी दादर, बंबई
११११११/- स्व. मातेश्वरी सुवाबाई धर्मपत्नी स्व. रतनलालजी, प्रीमांगन की स्मृति में श्री रिखवचंदजी नेमीचंदजी पहाड़िया परिवार द्वारा
११०१/- सौ. कृष्ण देवी ध. प. श्री पदम चंद्र जी आगरा
११०१/- कुन्द कुन्द स्मृति भवन आगरा

२५०१/- श्री शान्तिनाथ दि. जैन ट्रस्ट केकड़ी द्वारा श्री मोहनलाल कटारिया
११०१/- श्री दि. जैन समाज, भीलवाड़ा
११०१/- श्री रामस्वरूपजी महावीर प्रसाद जी अग्रवाल, केकड़ी
११०१/- श्री लादूराम श्री ताराचंदजी अग्रवाल, केकड़ी
२१०१/- सौ. चमेली देवी धर्मपत्नी शिखरचंद जी सर्राफ, विदिशा
११०१/- सौ. सुषमादेवी धर्मपत्नी श्री डा. आर. के. जैन, विदिशा
११०१/- श्रीमती बदामी बाई धर्मपत्नी स्व. श्री बाबूलाल जी (५०१), भोपाल
११०१/- स्व. शक्कर बाई धर्मपत्नी स्व. बिहारीलाल जी, बैरसिया
११०१/- स्व. लक्ष्मीबाई धर्मपत्नी स्व. बंशीलाल जी, भोपाल
११०१/- सौ. रतनबाई ध.प. नन्नूमल जी भंडारी, भोपाल
११०१/- सुश्री बा .ब्र. पुष्पा बेन झाझरी, उज्जैन
११०१/- श्रीमती ताराबाई झांझरी. ध.प. स्व. श्री राजमल जी झाझरी, गौतमपुरा
५००१/- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, लशकरी गोठ, गोराकुन्ड, इन्दौर
११०१/- सौ. चदन बाला ध.प. श्री प्रकाशचद जी भंडारी, भोपाल
११०१/- सौ. राजकुमारी ध प. श्री महावीर प्रसादजी सरावगी, कलकत्ता
११०१/- सौ. स्नेह प्रभा ध.प. श्री सुगन चंद जी मानोरिया, अशोकनगर
२५०१/- श्री भरतभाई,खेमचंद जेठालाल शेठ राजकोट.
११०१/- ब्र. सुशीला श्री, ब्र. कंचनबेन, ब्र. पुष्पा बेन, सोनगढ़
११०१/- सौ. विमलादेवी ध.प. श्री बाबूलालजी, हाटपीपलावाले, भोपाल
११०१/- श्रीमती विमलादेवी ध.प. स्व. श्री भगवानदासजी भडारी, गजबासोदा
११०१/- स्व. कुमारी शिखा सुपुत्री श्री नीलकमल बागमलजी पंवैया. भोपाल
११०१/- सौ. स्नेहलता ध.प. श्री जैनबहादुर जैन, कानपुर
२१०१/- सौ कचनबाई ध.प. श्री सौभाग्यमलजी पाटनी, बबई
२५०१/- श्री ताराबाई मातेश्वरी श्री मागीलालजी पदमचंदजी महाड़िया, इन्दौर
११०१/- सौ. शशिबाला ध.प. श्री सतीश कुमारजी सुपुत्र श्री पन्नालालजी, भोपाल
११०१/- श्री आनद कुमारजी देवेन्द्र कुमारजी पाटनी, इन्दौर
११०१/- सौ. प्रभादेवी ध.प. श्री गुलाबचदजी जैन, बेगमगज
११०१/- श्री समरतबेन ध.प. श्री चुन्नीलाल रायचंद मेहता, फतेपुर
११०१/- श्री ताराबेन ध.प. स्व. धर्मरत्न बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता, फतेपुर
११०१/- कुमारी ममता सुपुत्री श्री आशादेवी पाड्या सुपुत्री स्व. श्री किशनलालजी पाड्या, इन्दौर

११०१/-	स्व. श्री राजकृष्णजी जैन (श्री प्रेमचंद्र जी जैन के पिता जी) दिल्ली
११०१/-	स्व. श्रीमती कृष्णादेवी ध. प. श्री स्व. राजकृष्ण जी
११०१/-	स्व. श्रीमती पद्मावती ध. प. श्री प्रेमचन्द्रजी जैन अहिंसा मंदिर (दिल्ली)
११०१/-	सौ. श्रीमती चन्द्रा ध.प. श्री उमेश चन्द्र जी जैन द्वारा श्री संजीवकुमार राजीव कुमारजी, भोपाल.
११०१/-	सौ. पाना बाई ध. प. श्री मोहन लाल जी सेठी गौहाटी (आसाम)
३००१/-	श्रीमती रत्नम्मा देवी ध. प. स्व. श्री रत्न वर्मा हैगड़े मातेश्वरी राजर्षि श्री वीरेन्द्र हैगड़े धर्माधिकारी धर्मस्थल (कर्नाटक)
१५००/-	आकाशवाणी एवं दूरदर्शन केन्द्र, भोपाल के प्राप्त पारिश्रमिक
११०१/-	सौ. कलाबेन श्री हसमुख भाई वोरा, बम्बई
११०१/-	श्री स्वर्गीय जसवंती बेन श्री प्रवीण भाई वोरा, बम्बई
११०१/-	सौ. पुष्पाबेन कान्तिभाई मोटाणी, बम्बई
११०१/-	पूज्य श्री स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली ६४ ऋद्धि विधान के समय कवि सम्मेलन में
११००/-	सौ. वसुमति बेन श्री मुकुन्दभाई खारा, बम्बई
११०१/-	श्री कटोरी बाई ध.प. स्व. जयकुमार जी जैन मातेश्वरी ब्रिगेडियर श्री एम.के.जैन, दिल्ली
११०१/-	स्वर्गीय पानाबाई ध.प. सत्यनारायण सरावगी मातेश्वरी राजूभाई, कानपुर
११०१/-	सौ. राजकुमारी ध.प. श्री कोमलचन्दजी गोधा जयपुर
२१००/	सौ. रतनबाई ध.प. श्री मोहनलालजी जयपुर प्रिन्टर्स, जयपुर
११०१/-	प्रदीप सेल्स कारपोरेशन पायधुनी, बम्बई
११०१/-	सौ.कमलाबेन हिराभाई शाह, प्रदीप सेल्स पायधुनी, बम्बई
११०१/-	श्री दिलीप भाई प्रदीप सेल्स कार्पोरेशन, बम्बई
११००/-	प्रदीपभाई प्रदीप सेल्स कार्पोरेशन पायधुनी, बम्बई
११०१/-	सौ. कुसुमबाई पाटनी ध.प. श्री शान्तिलालजी पाटनी, छिंदवाड़ा
११०१/-	सौ. मंजु पाटनी ध.प. श्री संतोषकुमार पाटनी बासिम
११०१/-	स्व. कुसुम देवी ध. प. स्व. श्री कोमल चद जी की स्मृति में अजय राज जी जैन भोपाल
११०१/-	सौ. इन्द्राणी देवी ध. प. श्री बागमल जी पवैया भोपाल
११०१/-	सौ. शकुन्तला ध. प. श्री धीरेन्द्र कुमार जी जैन भोपाल
११०१/-	स्व. पुतली बाई ध. प. स्व दीपचंद जी पाड्या (अतुल पब्लिसिटी भोपाल)
११०१/-	श्री झकारी भाई खेमराज बाफना चेरीटेबिल ट्रस्ट खैरागढ़
१११०१/-	सौ. कमल प्रभा ध. प. श्री मानिक चंद जी लुहाड़िया नई दिल्ली
१११०१/-	स्व. श्री उमरावदेवी ध. प, श्री जगनमल जी सेठी इम्फाल

११०१/- सौ. आभा देवी ध. प. प्रकाश चंद जी जैन रायपुर
११०१/- सौ. कमला देवी ध. प. श्री राधेश्याम जी अग्रवाल भोपाल
११०१/- श्री अमर सिंह जी अमरेश समस्तीपुर (बिहार)
२५०१/- श्रीमती रतन बाई ध. प. स्व. श्री केशरी मल जी पाड्या इन्दौर
११०१/- सौ. मधु ध. प. श्री वीरेन्द्र कुमार जी जैन नई दिल्ली
२१०१/- जैन जाग्रति मंडल गुना (म. प्र.)
११०१/- सौ. ज्योति ध. प. श्री सुरेश चंद जी जैन पारस स्टोर्स गुना
११०१/- श्री शकुन्तला देवी ध. प. स्व. श्री दरबारी लाल जी जैन दिल्ली
११०१/- श्री सौ. रोहिणी देवी ध.प.श्री मनोहरजी श्री धनचंद्रजी अथणे कोल्हापुर
११०१/- श्री शान्तिदेवी ध.प. स्व. पांडे मूलचंदजी जैन इटावा मातेश्वरी श्री वीरेन्द्र कुमार, सिलचर नरेन्द्र कुमार जी भोपाल
११०१/- सौ. सुमनेश ध.प. श्री वीरेन्द्रकुमार जैन सिलचर (आसाम)
११००१/- श्रीमत सेठ शितावराय जी लक्ष्मी चद जी साहित्योद्वारक फड विदिशा
११०१/- श्री सौ किरण चौधरी ध. प. श्री महेन्द्र कुमार जी चौधरी भोपाल
११०१/- श्री सौ शशि ध प श्री आदित्य रंजन जैन राज ट्रेक्टर्स बीना
११०१/- श्री सौ. चमेली बाई ध प श्री कस्तूर चद जी जैन सिलवानी वाले भोपाल
११०१/- सौ कमलेश ध. प गेदालाल जी सराफ चदेरी
११०१/- श्री रामप्रसाद जी हजारीलाल जी भडारी भोपाल
११०१/- श्री विश्वभर दास जी महावीर प्रसाद जी जैन सराफ दिल्ली
५००१/- श्री फूलचद जी विमलचंद जी झाझरी उज्जैन
११०१/- श्री दि. जैन शिक्षण समिति, रामाशाह मदिर, मल्हारगंज, इन्दौर
११०१/- सौ कुसुम अजय सोगानी मोटर हाऊस भोपाल
११०१/- स्व. शान्ताबेन ध प श्री शान्ति भाई जवेरी बबई
११०१/- श्री बसती बाई ध.प स्व. श्री हरख चंद जी छावडा बबई
११०१/- सौ शशि ध प श्री अशोककुमारजी छावडा सूरत
११०१/- स्व कान्ताबेन मोतीलालजी पारिख की स्मृति में प्र रमा बेन पारिख देवलाली
११०१/- श्री मदन लाल अनिल कुमार जैन, अनिल बेंगल्स, भोपाल
११०१/- श्रीमती राजूबाई मातेश्वरी श्री मानिक चंद जी जैन गुड़ वाले, भोपाल
११०१/- श्री जिन प्रभावना ट्रस्ट प्रो सुमत प्रकाश जी जैन भोपाल
११११/- श्री जैन स्वाध्याय मंडल पंढरपुर
११००१/- श्री केशरी चंद्र जी पूनम चंद्र जी सेठी ट्रस्ट, नई दिल्ली
११०१/- सौ प्रतिभा देवी ध प श्री मनोज कुमार जैन मुजफ्फर नगर
११०१/- सौ ममता देवी ध फ श्री आदीश कुमार जी पीरागढी नई दिल्ली

११०१/-	प्रमिला देवी ध प. श्री मांगीलाल जी पहाड़िया इन्दौर
११०१/-	श्री गोकल चंद जी चुन्नी लाल जी की स्मृति में सुपुत्र श्री मांगी लाल जी पहाड़िया इन्दौर
११०१/-	सौ. सुधा ध प. श्री प्रवीण कुमार जी लुहाड़िया नई दिल्ली
११०१/-	सौ पुष्पादेवी ध प श्री सतीश कुमार जी जैन नई दिल्ली
११०१/-	सौ. रमा जैन ध. प श्री दृगेन्द्र कुमार जी नई दिल्ली
११०१/-	अशोक कुमार जी सुपुत्र श्री दरबारीमल जी नई दिल्ली
११०१/-	श्री स्व. मेमोदेवी ध प श्री अजित प्रसाद जी पीतल वाले नई दिल्ली
११०१/-	सौ कौशल्या देवी ध. प श्री इन्द्र सेन जी शाहदरा दिल्ली
११०१/-	स्व. निर्मला देवी ध प श्री पृथ्वी चंद्र जी जैन नई दिल्ली
११०१/-	सौ विमला देवी ध प. श्री विमल कुमार जी सेठी इन्दौर
११०१/-	सौ कमला देवी ध. प वाणी भूषण प. ज्ञान चंद्र जी विदिशा
११०१/-	श्री कंचन बाई ध प स्व हुकुम चंद्र जी पाटनी मातेश्वरी आनंद कुमार जी देवेन्द्र कुमार जी इन्दौर
११०१/-	श्री स्व. सुन्दर बाई ध प श्री छोटेलाल जी पांडे झासी की स्मृति मे सुपुत्र श्री सुरेन्द्र कुमार जी
११०१/-	सिघई श्री सुन्दरलालजी सुभाष ट्रान्सपोर्ट प्रा लि भोपाल
११०१/	स्व पडित आनंदीलालजी जैन विदिशा
११०१/-	सौ ताराबाई ध प श्री राजमल जी मिट्ठूलाल जी नरपत्या, भोपाल
११०१/-	सौ कुसुम जैन ध. प प्रो श्री महेश चन्द्र जी जैन गोहद
११०१/-	सौ आशा देवी ध. प. श्री पी सी. जैन प्रबधक स्टेट बैक भोपाल
११०१/-	सौ धनश्री बाई ध प श्री कपूर चंद्र जी जैन भोपाल
११०१/-	सौ. सावित्री बाई ध प. चौधरी सुभाष चंद्र जी जैन भोपाल
११०१/-	श्री सौ. मीना जैन ध. प श्री सुरेश चंद्र जी जैन भोपाल
११०१/-	स्व श्री आभा देवी ध प श्री सुरेन्द्र कुमार जी सौगानी भोपाल
११०१/-	सौ श्री चंद्रकान्ता ध प श्री महेन्द्र कुमार जी जैन सामन सुखा भोपाल
११०१/-	सौ सविता देवी ध.प. श्री अरुणकुमारजी जैन, भोपाल
११०१/-	सौ चम्पा देवी ध. प श्री लक्ष्मी चंद्र जी महावीर टेन्ट हाऊस
११०१/-	सौ वीणा देवी ध. प. श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन आम्रपाली भोपाल
११०१/-	सौ विद्यादेवी ध. प श्री देवेन्द्र कुमार जी सौगानी भोपाल
११०१/-	श्री देवेन्द्र कुमार जी पाटनी मल्हारगंज इन्दौर
११०१/-	सौ. शकुन्तला देवी ध प श्री पदम चंद्र जी मौंच जयपुर
११०१/-	सौ भंवरी देवी ध प. श्री घीसालाल जी छावडा जयपुर

११०१/- सौ. कंचन देवी ध प. श्री जुगराज जी कासलीवाल कलकत्ता
११०१/- सौ. शान्ति देवी ध. प पारसमल जी पाटनी अजमेर
११०१/- श्री मोहन लाल जी आसामवाले
११०१/- सौ. गुलाब देवी ध प. शरी लक्ष्मी नारायण जी जैन शिवसागर आसाम
११०१/- स्व. प्रेमबती देवी ध प स्व. सेठ मनीराम जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ शान्ति देवी ध प. स्व. श्री सेठ मुन्शीलाल जी फिरोजाबाद
११०१/- सौ विमला देवी ध प. श्री सेठ चद्र कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ शकुन्तला देवी ध प स्व श्री जय कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ. उर्मिला देवी ध. प श्री अशोक कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ शशिबाला देवी ध. प. श्री राजेन्द्र कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ सुलोचना देवी ध प. श्री सुरेशचद्र जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ सुषमा देवी ध. प. श्री प्रमोद कुमार जी जैन फिरोजाबाद
११०१/- सौ. राजमती देवी ध. प श्री उग्रसेन जी सर्राफ फिरोजाबाद
११०१/- सौ निशादेवी ध प श्री प्रदीप कुमार जी सर्राफ फिरोजाबाद
११०१/- सौ विमला देवी ध प श्री चद्रसेन जी जैन बडामुहल्ला फिरोजाबाद
११११/- सौ सरोज देवी ध प श्री कोमल चद्र जैन बामौरा वाले भोपाल
११११/- श्री पूनम चद्र जी वरदीचद्र जी पाटनी पारमार्थक ट्रस्ट रतलाम
११११/- सौ विमला देवी ध प. स्व श्री सोहन लाल जी अग्रवाल रतलाम
११११/- श्री गोपी जी लखमी चद्र जी अजमेरा रतलाम
११११/- स्व. कचन बाई जुहारमल जी एव स्व अनिल पाटौदी की स्मृति मे दिगबर जैन सोशल ग्रुप रतलाम
११११/- श्री मुकेश मौठिया रतलाम
११११/- सौ. स्नेहलता ध. प डॉ सुरेन्द्र कुमार जी जैन रतलाम
११११/- श्रीमति सूरज बाई ध प स्व मन्नालाल जी जैन रतलाम
११११/- श्रीमति विमला देवी ध प. कैलाश चद्र जी पाटौदी रतलाम
११०१/- श्रीमति कुसुम जैन ध प श्री प्रो महेश चद्र जैन गौहद
११०१/- श्री सुरेश चद्र जी भोपाल
११०१/- स्व श्री लक्ष्मीबाई ध प श्री मिट्ठूलाल जी नरपत्या भोपाल
११०१/- श्री घीसालाल जी पदमचदजी आसाम

मूल्य कम करने हेतु

१५१/ श्री सौ सुहाग बाई ध प श्री बदामी लाल जी भोपाल
१०१/- कु प्राची (रुनझुन) प्रप्रौत्री तारादेवी पवैया
१०१/- कुमार ऐरावत प्रपौत्र राजमल पवैया

प्राक्कथन

पूज्य सिद्धान्त चक्रवर्ती श्री नेमिचन्द्राचार्य द्वारा रचित करणानुयोग का महान ग्रन्थ गोम्मटसार है- इसे गोम्मट संग्रह सूत्र, और पंच संग्रह भी कहा जाता है । पूर्व में भी कसाय पाहुड एवं षटखंडागम के आधार पर ये विषय पंच संग्रह के नाम से प्रसिद्ध थे - पंच संग्रह नाम के चार ग्रंथ उपलब्ध हैं- २ प्राकृत, २ संस्कृत में । पचसंग्रह में जीवसमास, प्रकृति समुत्कीर्तन, कर्मस्तवशतक और सप्तातिका आदि पंच संग्रहनाम भी उचित है पंच संग्रह के अंत में एक वाक्य लिखा है "इतिपंचसंगहो समत्तो।" संस्कृत पंच संग्रह में इसकी परिभाषा की है-जो बन्धक, बध्यमान, बंधक स्वामी, बंध के कारण और बंध के भेद कहता है वह पंचसंग्रह है । इस पंच संग्रह के लघु भ्राता का नाम गोम्मट संग्रह उचित भी है । प्राकृत भाषा में निबद्ध यह ग्रन्थ दो भाग मे विभक्त है प्रथम जीवकाण्ड, द्वितीय कर्मकाण्ड जीवट्ठाण, खुद्दाबन्ध, बन्ध स्वामी, वेदना खण्ड और वर्गणा खण्ड, इन पॉच महान सिद्धान्तों का समावेश होने से इसे पचसंग्रह भी कहते हैं-इस पर अनेको टीकाएं भी लिखी गई हैं यह जीव किस-किस प्रकार के कैसे-कैसे परिणाम करता है तथा उसका क्या फल होता है आदि सैद्धान्तिक विषयों का विस्तृत रूप से विवेचन आचार्य देव ने गाथाओं के माध्यम से सूक्ष्म से सूक्ष्म निरूपण किया है । जीवकाण्ड में जीव की अनेक अशुद्ध अवस्थाओं का या भावों का वर्णन किया है तथा कर्मकाण्ड में कर्मों की अनेक अवस्थाओं का वर्णन किया है । आचार्य देव की मूलगाथाओं और टीका को आधार बनाकर अनेकों विधानों के सफल रचयिता कविवर श्री राजमलजी पवैया ने श्री गोम्मटसार विधान विभिन्न छन्दों में लय पूर्वक लिखकर एक अपूर्व साहस का कार्य किया है ।

जिन्होंने कभी गोम्मटसार का अध्ययन भी नहीं किया उसके विषय वस्तु को नहीं समझा वह भी इस विधान पूजन के माध्यम से उसमें गर्भित सैद्धान्तिक विषयों को समझ सकते हैं पवैयाजी ने सरल सुबोध शैली में ३१ अध्यायों की ३१ पूजनें एवं, सामुहिक पूजन, जीवकाण्ड, कर्मकाण्ड आदि की विभिन्न पूजनें लिखी है -१७०६ गाथाओं पर आधारित ३१ अधिकारों पर पृथक-पृथक पूजने छन्द लिखना कठिन था। अगर लिखा भी जाता तो प्रकाशन असंभव था। अत: सभी पृथक-पृथक ३६ पूजनों में इसका सम्पूर्ण सार समाहित कर दिया है - पवैयाजी ने बडी सूझबूझ और चतुराई से गोम्मटसार की १७०६ गाथाएँ लब्धि सार एवं क्षपणासार ९२३ गाथाएं वाले महान ग्रंथ का अध्ययन करके मात्र ३६ पूजनों में इसे गर्भित कर दिया है, एक पूजन आचार्य नेमिचंद सिद्धान्त चक्रवर्त्ती की देकर उनसे उऋण होने का प्रयासमात्र किया है। आचार्य श्री द्वारा प्रतिष्ठित गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली की मूर्त्ति का चित्र एवं बाहुबली पूजन भी दी गई है। साथ ही विधान के अंत में लघु चारित्र शुद्धि विधान भी दिया गया है जो अपूर्व है इसके पढ़ने का आनंद ही कुछ और है। इसके लिए वे साधुवाद एवं बधाई के पात्र हैं।

आचार्य कल्प पं टोडरमलजी ने भी गोम्मटसार की टींका ३८०० लब्धिसार-क्षपणारूप की १३००० श्लोक प्रमाण टीका ढुंढारी भाषा में लिखकर हिन्दी भाषा भाषियों का महा कल्याण किया। जो सभी को सुलभ नहीं होती। अतएव इस विधान का महत्व बढ गया है। विधान करने वालों से निवेदन है कि वे विधान करते समय इसकी समुच्चय पूजन नित्य करें

आशा है पाठक गण इससे लाभान्वित होंगे।

३० जुलाई १९९६
(अष्टान्हिका पर्व)
के अवसर पर

पं. ज्ञानचन्द जैन
ज्ञानानन्द निवास
किला अन्दर विदिशा (म. प्र.)
४६४ ००१

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान

स्व. अध्यात्म योगी श्री १०८ वीर सागर महाराज की सुशिष्या

क्षुल्लिका श्री सुशीलमति जी एवं क्षुल्लिका श्री सुव्रता जी (महाराष्ट्र)
आपने गोम्मटसार विधान के बीजाक्षर एवं ध्यानसूत्र रचे हैं, एतदर्थ धन्यवाद।
- भरत पवैया

सम्पादकीय

दसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध आचार्य तथा जिनागम का दोहन कर ग्रन्थ रूपी पात्र में समाहित कर प्रस्तुत करने वाले दिगम्बर निर्ग्रन्थ आचार्य श्री नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती की सुप्रसिद्ध रचना 'गोम्मटसार' आज भी अद्वितीय है। इस रचना के दो भाग हैं- जीवकाण्ड और कर्मकाण्ड। जीव काण्ड में जीव की संयोगी अवस्थाओ का वर्णन मूल जिनागम की अनुयोग-पद्धति के आधार पर बीस प्ररूपणाओं के माध्यम से किया गया है। बीस प्ररूपणाएँ इस प्रकार हैं- गुणस्था, जीवसमास, पर्याप्ति, प्राण, संज्ञा, चौदह मार्गणाएँ और उपयोग। जीवकाण्ड में ७३३ गाथाएँ और कर्मकाण्ड में ९६४ गाथाएँ हैं। कर्मकाण्ड में ९ अधिकार हैं - (१) प्रकृतिसमुत्कीर्तन, (२) बन्धोदय सत्त्व, (३) सत्त्व स्थानभंग, (४) त्रिचूलिका, (५) स्थानसमुत्कीर्तन, (६) प्रत्यय, (७) भावचूलिका, (८) त्रिकरणचूलिका और (९) कर्मस्थिति रचना।

दिगम्बर जैन कर्मसाहित्य लगभग पाँच लाख श्लोक प्रमाण है। महाकर्म प्रकृति प्राभृत से समन्वितपाहुड मूल जिनागम का अवशेष है जो आज भी आचार्यों की परम्परा से लगभग दो हजार दो सौ वर्षों से सतत प्रचलित है। 'षट्खण्डागम' की रचना पर 'कसायपाहुड' का प्रभाव स्पष्ट रूप से लक्षित होता है। पं हीरालालजी सिद्धान्तशास्त्री के शब्दों में 'पुष्पदन्त और भूतबलि रचित षट्खण्डागम सूत्रों की रचना 'कसायपाहुड' से पीछे की है और उस पर 'कसायपाहुड' का स्पष्ट प्रभाव है।'

यद्यपि 'गोम्मटसार' में जीव की अशुद्ध अवस्था किंवा संसार अवस्था का वर्णन मुख्यता से किया गया है, तथापि आत्म द्रव्य के शुद्ध एवं त्रैकालिक ध्रुव सहज स्वरूप को भी प्रकाशित करता है। क्योंकि अशुद्ध

अवस्था को समझकर उससे निवृत्त होने का उपाय व पुरुषार्थ करना ही हमारा एकमात्र प्रयोजन है । किन्तु यह तभी सम्भव है जब हम अपने निश्चल शुद्धात्म स्वरूप का ज्ञान प्राप्त कर, उसकी पहचान कर उसे स्वीकार करे और निज शुद्ध स्वभाव के आश्रय से उस शुद्ध अवस्था को प्राप्त करे, जिसके लिए साधना तथा गुणस्थान की परिपाटी का निरूपण किया जाता है ।

प्रयोजन की उक्त बात साधारण पाठकों के ध्यान में आए- इस उद्देश्य से पूजा-विधान की रचना की जाती है। जैनो की पूजा निश्चय व व्यवहार भक्ति परक है, इसलिये उसे कर्मकाण्ड कहकर उसका उपहास नहीं किया जा सकता है । यह बात अवश्य है कि वह केवल दिखावा मात्र न हो । कविवर पवैयाजी ने इस तथ्य को ध्यान मे रखकर ही कर्मशास्त्र के कठिन ग्रन्थ को भी सरलता से समझाने का काव्य के माध्यम से जो प्रयास किया है, वह सराहनीय प्रशंसा के योग्य है ।

प्रयोजन की बात स्वय कवि ने निम्न लिखित पंक्तियो में कही है जो सदा के लिए अकित हो जाती है-

कर्मकान्ड को भी मैं समझूँ अष्टकर्म का करूँ विनाश ।
कर्म रहित मेरा स्वभाव है उसका ही मैं करूँ प्रकाश ॥

कवि का मंगल हो-मगल विधान से मगल की ही प्राप्ति हो-यही शुभ भावना है ।

रक्षा बंधन पर्व
वीर स २५२२
२४३ शिक्षक कालोनी
नीमच म. प्र

- देवेन्द्रकुमार शास्त्री
अध्यक्ष
अ भा दि जैन विद्वत परिषद

विनम्र निवेदन

करणानुयोग का महान ग्रंथ जो अपनी विशिष्टता के लिए प्रसिद्ध है ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ पर आधारित यह गोम्मटसार विधान जैसे तैसे लिखकर छप गया यह प्रसन्नता की बात है साथ ही लब्धिसार क्षपणासार पर आधारित पूजनें भी हैं ।

इन तीनों ग्रंथों की लगभग २६२५ गाथाओं को पद्य एवं अर्घ्य सहित देना संभव नहीं था। लिखा भी जाता तो मुद्रण असंभव था। अत बहुत विचार के बाद इनके सभी अधिकारों की पूजनें दी गई और जय मालाओं मे गाथाओं के भाव का अत्यत संक्षिप्त समावेश किया गया, और विधान पूरा हो गया। जिज्ञासु भाई मूल ग्रंथ का पाठ करे रुचि पूर्वक पढे तो उन्हे विशेष ज्ञान की उपलब्धि होगी।

जिनके पास गोम्मटसार पढने का समय नहीं हैं वे इस विधान को पढकर आनद ले सकते हैं। इसी भावना से इसे लिखा गया है। इसका समस्त श्रेय वीर चामुन्डराय के गुरु सिद्धान्त चक्रवर्तीआचार्य श्री नेमिचद्र को ही है। जिनकी कृपा से यह कार्य सपन्न हुआ। आचार्य नेमिचंद्र की आज्ञा से ही चामुन्डराय ने गोम्मटेश्वर बाहुबली की एक ही पाषाण से उत्कीर्ण ५७ फिट ऊँची विश्व विख्यात प्रतिमा का निर्माण कराया था। एक हजार वर्ष के बाद भी ऐसी प्रतीत होता है कि यह भव्य प्रतिमा अभी बनी है । विधान की रचना मे मेरा कुछ कर्त्तृत्व नहीं है बिना परिश्रम के ही मुझे अनायास श्रेय मिल जाता है। यह सब आचार्य श्री के आशीर्वाद का फल है। भूलों के लिए क्षमाप्रार्थी हूं।

इत्यलम् ।

रक्षाबंधन — ४४ इब्राहीमपुरा — राजमल पवैया
वीरसवत् २५२२ — भोपाल - ४६२ ००१
फोन ५३१३०९

जिनालय दर्शन पाठ

वीर-छन्द

श्री जिन मंदिर झलक देखते ही होता है हर्ष महान ।
सर्व पाप मल क्षय हो जाते है होता अतिशय पुण्य प्रधान॥
जिन मंदिर के निकट पहुँचते ही जगता उर में उल्लास।
धवल शिखर का नील गगन से बातें करता उच्च निवास॥
स्वर्ण कलश की छटा मनोरम सूर्य किरण आभा सी पीत।
उच्च गगन में जिन ध्वज लहराता तीनो लोको को जीत॥
तोरण द्वारों की शोभा लख पुलकित होते भव्य हृदय।
सोपानों से चढ मंदिर में करते है प्रवेश निर्भय॥
नि: सहि नि:सहि उच्चारण कर शीष झुका गाते जयगान।
जिन गुण सपत्ति प्राप्ति हेतु मंदिर में आए है भगवान॥

श्री प्रक्षाल पाठ

छंद-गीतिका

प्रक्षाल श्री जिन बिम्ब का नित हर्ष से सविनय करूँ ।
मूर्तिमान जिनेन्द्र प्रभु को भक्ति से वदन करूँ ॥
अरहंत परमेष्ठी जिनेश्वर वीतराग स्वरूप है ।
सर्वज्ञ तीर्थंकर महा प्रभु परम सिद्ध अनूप है ॥
दिव्य ध्वनि दिन रात गूंजे नाथ मेरे हृदय मे ।
ज्ञान धारा प्रवाहित हो आत्मा के निलय मे ॥
भेद ज्ञान महान दो प्रभु आप से है प्रार्थना ।
मुक्ति का सन्मार्ग पाऊँ मात्र यह है याचना ॥
आत्म धर्म महान मगलमय सभी को प्राप्त हो ।
विश्व का कल्याण हो प्रभु शान्ति जग में व्याप्त हो ॥
अहिंसा हो आचरण में सत्य हो व्यवहार मे ।
सब सुखी आनंद मय हो दुख न हो संसार में ॥

पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु
अरिहंतों को नमस्कार है, सिद्धों को सादर वंदन।
आचार्यों को नमस्कार है, उपाध्याय को है वन्दन॥१॥

और लोक के सर्वसाधुओं को है विनय सहित वन्दन।
पंच परम परमेष्ठी प्रभु को बार-बार मेरा वन्दन॥२॥
ॐ ह्रीं श्री अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः पुष्पांजलिं क्षिपामि।
मंगल चार, चार हैं उत्तम चार शरण में जाऊं मैं।
मन वच काय त्रियोग पूर्वक, शुद्ध भावना भाऊं मैं॥३॥
श्री अरिहंत देव मंगल है, श्री सिद्ध प्रभु है मंगल।
श्री साधु मुनि मंगल है, है केवलि कथित धर्म मंगल॥४॥
श्री अरिहत लोक में उत्तम, सिद्ध लोक में है उत्तम।
साधु लोक में उत्तम है, है केवलि कथित धर्म उत्तम॥५॥
श्री अरिहत शरण में जाऊं, सिद्ध शरण में मैं जाऊं।
साधु शरण में जाऊं, केवलि कथित धर्मशरणा जाऊं॥६॥

ॐ ह्रीं नमो अर्हते स्वाहा पुष्पांजलि क्षिपामि।

अर्घ्य

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य धरूँ।
जिन गृह में जिन प्रतिमा सम्मुख सहस्त्रनाम को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं भगवत् जिन सहस्त्रनामभ्यो अर्घ्यं नि

जल गंधाक्षत, पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ धरूँ।
जिन गृह में जिनराज पंच कल्याणक पाँचों नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं जिन पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं नि ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ्य करूँ।
तीन लोक के कृत्रिम अकृत्रिम जिन बिम्बों को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय जिन बिम्बेभ्यो अर्घ्यं नि. ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु ले दीप धूप फल अर्घ करूँ।
जिन गृह में सर्वज्ञ दिव्यध्वनि जिनवाणी को नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन मुखोद्भूत श्रुतज्ञानेभ्यो अर्घ्यं नि ।

जल गंधाक्षत पुष्प सुचरु लें दीप धूप फल अर्घ करूँ।
जिन गृह में पाँचों परमेष्ठी के चरणों में नमन करूँ॥

ॐ ह्रीं श्री अरहंत सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, सर्वसाधु पंच परमेष्ठीभ्यो अर्घ्यं नि ।

स्वस्ति मंगल

मंगलमय भगवान वीर प्रभु मंगलमय गौतम गणधर।
मंगलमय श्री कुन्द कुन्द मुनि मंगल जैन धर्म सुखकार॥१॥
मंगलमय श्री ऋषभदेव प्रभु मंगलमय श्री अजित जिनेश।
मंगलमय श्री संभव जिनवर मंगल अभिनंदन परमेश॥२॥
मंगलमय श्री सुमति जिनोत्तम मंगल पद्मनाथ सर्वेश।
मंगलमय सुपार्श्व जिन स्वामी मंगल चन्द्राप्रभु चन्द्रेश॥३॥
मंगलमय श्री पुष्पदंत प्रभु, मंगल शीतलनाथ सुरेश।
मंगलमय श्रेयांसनाथ जिन मंगल वासुपूज्य पूज्येश॥४॥
मंगलमय श्री विमलनाथ विभु, मंगल अनन्तनाथ महेश।
मंगलमय श्री धर्मनाथ जिन मंगल शांतिनाथ चक्रेश॥५॥
मंगल कुन्थुनाथ जिन मंगल मंगल श्री अरनाथ गुणेश।
मंगलमय श्री मल्लिनाथ प्रभु मंगल मुनिसुव्रत सत्येश॥६॥
मंगलमय नमिनाथ जिनेश्वर मंगल नेमिनाथ योगेश।
मंगलमय श्री पार्श्वनाथ प्रभु, मंगल वर्धमान तीर्थेश॥७॥
मंगलमय अरिहंत महाप्रभु, मंगल सर्व सिद्ध लोकेश।
मंगलमय आचार्य श्री जय मंगल उपाध्याय ज्ञानेश॥८॥
मंगलमय श्री सर्वसाधुगण , मंगल जिनवाणी उपदेश।
मंगलमय सीमन्धर आदिक, विद्यमान जिन बीस परेश॥९॥
मंगलमय त्रैलोक्य जिनालय, मंगल जिन प्रतिमा भव्येश।
मंगलमय त्रिकाल चौबीसी, मंगल समवशरण सविशेष॥१०॥
मंगल पंचमेरु जिन मंदिर, मंगल नन्दीश्वर द्वीपेश।
मंगल सोलह कारण दशलक्षण, रत्नत्रय व्रत भव्येश॥११॥
मंगल सहस्त्र कूट चैत्यालय मंगल मानस्तम्भ हमेश।
मंगलमय केवलि श्रुतकेवलि मंगल ऋद्धिधारि विद्येश॥१२॥
मंगलमय पांचों कल्याणक, मंगल जिन शासन उद्देश।
मंगलमय निर्वाण भूमि, मंगलमय अतिशय क्षेत्र विशेष॥१३॥
सर्व सिद्धि मंगल के दाता हरो अमंगल हे विश्वेश।
जब तक सिद्ध स्वपद ना पाऊं तब तक पूजूं हे ब्रह्मेश॥१४॥

पुष्पांजलि क्षिपामि:

ॐ

ओंकारं भक्ति संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ओंकाराय नमो नमः॥

णमोकार मंत्र

णमो अरिहंताणं। णमो सिद्धाणं। णमो आयरियाणं।
णमो उवज्झायाणं। णमो लोए सव्वसाहूणं॥
एसो पंच णमोयारो सव्वपावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं॥

चत्तारि पाठ

चत्तारि मंगलं, अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवली पण्णत्तो धम्मो मंगलं। चत्तारि लोगोत्तमा, अरिहंता लोगोत्तमा, सिद्धालोगोत्तमा, साहू लोगोत्तमा, केवली पण्णत्तो धम्मो लोगोत्तमा। चत्तारि शरणं पव्वज्जामि, अरिहंते शरणं पव्वज्जामि, सिद्धे शरणं पव्वज्जामि, साहू शरण पव्वज्जामि, केवली पण्णतो धम्मो शरणं प्रव्वज्जामि।

सिद्धाणं

सिद्धाणं बुद्धाणं पारगयाणं
परंपरगयाण णमो सयो सव्वसिद्धाण
जो देवाणं देवो जं देवा पंजली नमस्संति
त देवदेव महिय सिरसावंदे महावीरं
इक्कोविनमुक्कारो जिनवर वसहस्स वड्ढमाणस्स
संसार सायराओ तारेइ भव्य जीवाणं

महामंगल

अरिहंता मज्झ मंगलं, अरिहंता मज्झ देवया।
अरिहंते कित्तइत्ताणं, वोस्सरामि त्ति पावगं ॥१॥
सिद्धा य मज्झ मंगल, सिद्धा य मज्झ देवया।
सिद्धा य कित्तइत्ताणं, वोस्सिरामि त्ति पावगं ॥२॥
आयरिया मज्झ मंगलं, आयरिया मज्झ देवया।
आयरिए कित्तइत्ताणं, वोस्सरामि त्ति पावगं ॥३॥
उवज्झाया मज्झ मंगलं, उवज्झाया मज्झ देवया।
उवज्झाए कित्तइत्ताणं, वोस्सिरामि त्ति पावगं ॥४॥
साहू य मज्झ मंगलं, साहू य मज्झ देवया।
साहू य कित्तइत्ताणं, वोस्सिरामि त्ति पावगं ॥५॥

एए पंच मज्झ मगल, एए पंच मज्झ देवया।
एए पंच कित्तइत्ताणं, वोस्सरामि त्ति पावगं ॥६॥

लोगस्स

लोगस्स उज्जोयगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसंपि केवली॥१॥
उसभमजियं च वंदे, संभवमभिणंदण च सुमई च।
पउमप्पहं सुपासं, जिणं च चदप्पहं वंदे ॥२॥
सुविहंच पुप्फदंतं, सीयलसिज्जस वासुपुज्जं च।
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि ॥३॥
कुंथुं अरं च मल्लिं वंदे, मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमि, पासं तह वद्धमाणं च ॥४॥
एवं मए अभिथुआ, विहूय रयमला पहीणजरमरणा।
चउवीसंपि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु ॥५॥
कित्तियवंदियमहिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्गबोहिलाभ, समाहिवरमुत्तमं दिंतु ॥६॥
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं व पयासयरा।
सागर-वर-गंभीरा, सिद्धा सिद्धिं मम दिसन्तु ॥७॥

नमोऽत्थुणं

नमोऽत्थुण अरिहंताण भगवंताणं, आइगराणं तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाण लोगनाहाणं लोगहियाण लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं, अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं जीवदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं दीवोताणं, सरणगईपइट्ठाणं अप्पडिहयवरनणादंसणधराणं विअट्टछउमाणं जिणाणं, जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहियाणं, मुत्ताणं मोयगाणं, सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं, सिवमयल-मरुअ-मणंत-मक्खय-मव्वाबाह-मपुणरावित्ति-सिद्धिगइ- नामधेयं ठाणं संपत्ताणं (ठाणं संपाविउकामाणं) नमो जिणाणं जियभयाणं ॥

●●●

ॐ

तीर्थंकर श्री नेमिनाथ पूजन

स्थापना

वीरछंद

जय श्री नेमिनाथ तीर्थङ्कर बाल ब्रह्मचारी भगवान ।
हे जिनराज परम उपकारी करुणा सागर दया निधान ॥
दिव्यध्वनि के द्वारा हे प्रभु तुमने किया जगत कल्याण।
श्री गिरनार शिखर से पाया तुमने सिद्ध स्वपद निर्वाण॥
आज तुम्हारे दर्शन करके निज स्वरूप का आया ध्यान।
मेरा सिद्ध समान सदा पद यह दृढ़ निश्चय हुआ महान॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्री श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद ताटंक

समकित जल की धारा से तो मिथ्या भ्रम धुल जाता है।
तत्त्वों का श्रद्धान स्वयं का शाश्वत मङ्गल दाता है ॥
नेमिनाथ स्वामी पद पंकज की करता हूं पूजन ।
वीतराग तीर्थङ्कर तुमको कोटि कोटि मेरा वंदन ॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मिथ्यात्वमल विनाशनाय जलं निर्वपामीति. स्वाहा ।

सम्यक् श्रद्धा का पावन चन्दन भव ताप मिटाता है ।
क्रोध कषाय नष्ट होती है निज की अरुचि हटाता है ॥नेमि.॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्रोध कषाय विनाशनाय चंदनं नि ।

भव शुभाशुभ का अभिमानी मान कषाय बढ़ाता है ।
वस्तु स्वभाव जान ज्ञाता का मान कषाय मिटाता है ॥ नेमि.॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मान कषाय विनाशनाय अक्षतं नि ।

चेतन छल से पर भावों का माया जाल बिछाता है ।
भव भव की माया कषाय को समकित पुष्प मिटाता है ॥ नेमि.॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय माया कषाय विनाशनाय पुष्प नि ।

तृष्णा की ज्वाला से लोभी कभी नहीं सुख पाता है ।
सम्यक् चक्र से लोभ नाश कर यह शुचिमय हो जाता है ॥नेमि.॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय लोभ कषाय विनाशनाय नैवेद्यं नि ।
अन्धकार अज्ञान जगत में भव भव भ्रमण कराता है ।
समकित दीप प्रकाशित हो तो ज्ञान नेत्र खुल जाता है ॥नेमि.॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।
पर विभाव परिणति में फंसकर निज का धुआँ उड़ाता है ।
निज स्वरूप की गंध मिले तो पर की गन्ध जलाता है ॥ नेमि.॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय विभाव परिणति विनाशनाय धूपं नि ।
निज स्वभाव फल पाकर चेतन महा मोक्ष फल पाता है ।
चहुंगति के बन्धन कटते हैं सिद्ध स्वपद पा जाता है ॥ नेमि.॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्तये फल नि ।
जल फलादि वसु द्रव्य अर्घ से लाभ न कुछ हो पाता है ।
जब तक निज स्वभाव में चेतन मग्न नहीं हो जाता है ॥नेमि.॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं नि ।

श्री पंच कल्याणक

कार्तिक शुक्ला षष्ठी के दिन शिव देवी उर धन्य हुआ ।
अपराजित विमान से चयकर आये मोद अनन्य हुआ ॥
स्वप्न फलों को जान सभी के मन में अति आनन्द हुआ ।
नेमिनाथ स्वामी का गर्भोत्सव मंगल सम्पन्न हुआ ॥
ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कार्तिक शुक्ल षष्ठया गर्भ मङ्गल मण्डिताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण शुक्ला षष्ठी के दिन शौर्यपुरी में जन्म हुआ ।
नृपति समुद्र विजय आंगन में सुर सुरपति का नृत्य हुआ ॥
मेरु सुदर्शन पर क्षीरोदधि जल से शुभ अभिषेक हुआ ।
जन्म महोत्सव नेमिनाथ का परम हर्ष अतिरेक हुआ ॥
ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठयाँ जन्म मङ्गल मण्डिताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रावण शुक्ल षष्ठमी को प्रभु पशुओं पर करुणा आई ।
राजमती तज सहस्राम्र वन में जा जिन दीक्षा पाई ॥

इन्द्रादिक ने उठा पालकी अर्चित मङ्गलचार किया ।
नेमिनाथ प्रभु के तप कल्याणक पर जय जयकार किया ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय श्रावण शुक्ल षष्ठयाँ तपो मङ्गल मण्डिताय अर्घ्यं नि स्वाहा।

आश्विन शुक्ला एकम् को प्रभु हुआ ज्ञान कल्याण महान ।
ऊर्जयंत पर समवशरण में दिया भव्य उपदेश प्रधान ॥
ज्ञानावरण दर्शनावरणी मोहनीय का नाश किया ।
नेमिनाथ ने अन्तराय क्षय कर कैवल्य प्रकाश लिया ॥

ॐ ह्रीं नेमिनाथ जिनेन्द्राय आश्विन शुक्ल प्रतिपदायाम् ज्ञान मङ्गल मण्डिताय अर्घ्यं नि स्वाहा ।

श्री गिरनार क्षेत्र पर्वत से मङ्गल मोक्ष पद को पाया ।
जगती ने आषाढ़ शुक्ल सप्तमी दिवस मङ्गल गाया ॥
वेदनीय अरु आयु नाम अरु गोत्र कर्म अवसान किया ।
अष्ट कर्म हर नेमिनाथ ने परम पूर्ण निर्वाण लिया ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय आषाढ़ शुक्ल सप्तम्याँ मोक्ष मङ्गल मण्डिताय अर्घ्यं नि स्वाहा ।

जयमाला

छंद मत्त सवैया

जय नेमिनाथ नित्योदित जिन, जय नित्यानन्द नित्य चिन्मय।
जय निर्विकल्प निश्चल निर्मल जय निर्विकार नीरज निर्मय ॥
नृपराज समुद्र विजय के सुत माता शिव देवी के नन्दन ।
आनन्द शौर्यपुर में छाया जय जय से गूंजा पाण्डुक वन ॥
बालकपन में क्रीड़ा करते तुमने धारे अणुव्रत सुखमय ।
द्वारिकापुरी में रहे अवस्था पाई सुन्दर यौवन मय ॥
आमोद प्रमोद तुम्हारे लख पूरा यादव कुल हर्षाता ।
तब श्रीकृष्ण नारायण ने जूनागढ़ से जोड़ा नाता ॥
राजुल से परिणय करने को जूनागढ़ पहुंचे वर बनकर ।
जीवों की करुण पुकार सुनी जागा उर में वैराग्य प्रखर ॥
पशुओं को बन्धन मुक्त किया कङ्कन विवाह का तोड़ दिया।
राजुल के द्वारे आकर भी स्वर्णिम रथ पीछे मोड़ लिया ॥
रथ त्याग चढ़े गिरनारी पर जा पहुँचे सहस्राम्रवन में ।
वस्त्राभूषण सब त्याग दिये जिन दीक्षा धारी तन मन में ॥
फिर उग्र तपस्या के द्वारा निश्चय स्वरूप मर्मज्ञ हुए ।
घातिया कर्म चारों नाशे छप्पन दिन में सर्वज्ञ हुए ॥

तीर्थङ्कर प्रकृति उदय आई सुर हर्षित समवशरण रचकार ।
प्रभु गन्धकुटी में अन्तरीक्ष आसीन हुए पद्मासन धार ॥
ग्यारह गणधर में थे पहले गणधर वरदत्त महा ऋषिवर ।
थी मुख्य आर्यिका राजमती श्रोता थे अगणित भव्य प्रवर ॥
दिव्य ध्वनि खिरने लगी शाश्वत ओंकार घनगर्जन सी ।
शुभ बारह सभा बनी अनुपम सौन्दर्य प्रभा मणिकंचन सी ॥
जग जीवों का उपकार किया भूलों को शिव पथ बतलाया।
निश्चय रत्नत्रय की महिमा का परम मोक्ष फल दर्शाया ॥
कर प्राप्त चतुर्दश गुण स्थान योगों का पूर्ण अभाव किया ।
कर ऊर्ध्व गमन सिद्धत्व प्राप्त कर सिद्ध लोक आवास लिया॥
गिरनार शैल से मुक्त हुए तन के परमाणु उडे सारे ।
पावन मङ्गल निर्वाण हुआ सुरगण के गूंजे जयकारे ॥
नख केश शेष थे देवों ने माया मय तन निर्माण किया ।
फिर अग्निकुमार सुरों ने आ मुकुटानलसे तन भस्म किया॥
पावन भस्मी का निज निज के मस्तक पर सबने तिलक किया।
मङ्गल वाद्यों की ध्वनि गूंजी निर्वाण महोत्सव पूर्ण किया ॥
कर्मों के बंधन टूट गये पूर्णत्व प्राप्त कर सुखी हुए ।
हम तो अनादि से हे स्वामी ! भव दुख बन्धन से दुखी हुए॥
ऐसा अन्तर बल दो स्वामी हम भी सिद्धत्व प्राप्त कर लें ।
तुम पद चिन्हों पर चल प्रभुवर शुभ अशुभ विभावो को हर लें॥
परिणाम शुद्ध का अर्चन कर हम अन्तर ध्यानी बन जावें ।
घातिया चार कर्मों को हर हम केवलज्ञानी बन जावें ॥
शाश्वत शिव पद पाने स्वामी हम पास तुम्हारे आ जायें ।
अपने स्वभाव के साधन से हम तीन लोक पर जय पायें ॥
निज सिद्ध स्वपद पाने को प्रभु हर्षित चरणो में आया हूं ।
वसु द्रव्य सजा हे नेमीश्वर प्रभु पूर्ण अर्घ्य मैं लाया हूं ॥

ॐ ह्री श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय पचकल्याणक प्राप्ताय पूर्णार्घ्यं नि ।

वीरछंद

शंख चिन्ह चरणों में शोभित जय जय नेमि जिनेश महान ।
मन वच तन जो ध्याने लगाते वे हो जाते सिद्ध समान ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्य मंत्र ॐ ह्रीं श्री नेमनाथ जिनेन्द्राय नमः

卐卐卐

ॐ

श्री गोम्मटेश्वर बाहुबली पूजन

स्थापना

वरछंद

जयति बाहुबलि स्वामी जय जय करूं वन्दना बारम्बार ।
निज स्वरूप का आश्रय लेकर आप हुए भव सागर पार ॥
है त्रैलोक्य नाथ त्रिभुवन में छाई महिमा अपरम्पार ।
सिद्ध स्वपद की प्राप्ति हो गई हुआ जगत में जय जयकार ॥
पूजन करने मैं आया हूं अष्ट द्रव्य का ले आधार ।
यही विनय है चारों गति के दुख से मेरा हो उद्धार ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलि स्वामिन् अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलि स्वामिने अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ ।
ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबलि स्वामिन् अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद ताटंक

उज्ज्वल निर्मल जल प्रभु पद पंकज में आज चढ़ाता हूं ।
जन्म मरण का नाश करूं आनन्दकन्द गुण गाता हूं ॥
श्री बाहुबलि स्वामी प्रभु चरणों में शीष झुकाता हूं ।
अविनश्वर शिव सुख पाने को नाथ शरण में आता हूं ॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि स्वामिने जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् नि ।

शीतल मलय सुगन्धित पावन चन्दन भेंट चढ़ाता हूं ।
भव आताप नाश हो मेरा ध्यान आपका ध्याता हूं ॥ श्री बाहु.॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि स्वामिने संसार ताप विनाशनाय चन्दनम् निं ।

उत्तम शुभ्र अखण्डित तन्दुल हर्षित चरण चढ़ाता हूं ।
अक्षय पद की सहज प्राप्ति हो यही भावना भाता हूं ॥ श्री बाहु.॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि स्वामिने अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् नि ।

काम शत्रु के कारण अपना शील स्वभाव न पाता हूं ।
काम भाव का नाश करूं मैं सुन्दर पुष्प चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु.॥

ॐ ह्रीं सी बाहुबली स्वामिने कामबाण विनाशनाय पुष्पम् नि. ।

तृष्णा की भीषण ज्वाला में प्रतिपल जलता जाता हूं ।
क्षुधा रोग से रहित बनूं मैं शुभ नैवेद्य चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु.॥
ॐ ह्रीं श्री बाहुबली स्वामिने क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् नि ।

मोह ममत्व आदि के कारण सम्यक् मार्ग न पाता हूं ।
यह मिथ्यात्व तिमिर मिट जाये प्रभुवर दीप चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु.॥
ॐह्री श्री बाहुबली स्वामिने मोहान्धकार विनाशनाय धूपम् नि. ।

है अनादि से कर्म बंध दुखमय न पृथक् कर पाता हूं ।
अष्टकर्म विध्वंस करूं अतएव सु धूप चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु.॥
ॐ ह्री श्री बाहुबली स्वामिने अष्टकर्म विनाशनाय दीपम् नि. ।

सहज सम्पदा युक्त स्वयं होकर भी भव दुख पाता हू ।
परम मोक्ष पद शीघ्र मिले उत्तम फल चरण चढ़ाता हूं॥श्री बाहु.॥
ॐ ह्री श्री जिन बाहुबली स्वामिने मोक्ष फल प्राप्ताये फलम् नि ।

पुण्य भाव से स्वार्गादिक पद बार बार पा जाता हूं ।
निज अनर्घ पद मिला न अब तक इससे अर्घ चढ़ाता हूं ॥ श्री बाहु.॥
ॐ ह्री श्री जिन बाहुबली स्वामिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

जयमाला

छंद ताटंक

आदिनाथ सुत बाहुबली प्रभु मात सुनन्दा के नन्दन ।
चरम शरीरी कामदेव तुम पोदनपुरपति अभिनन्दन ॥
छः खण्डों पर विजय प्राप्त कर भरत चढ़े वृषभाचल पर ।
अगणित चक्री हुए नाम लिखने को मिला न थल तिल भर ॥
मैं ही चक्री हुआ अहं का मान धूल हो गया ध्वस्त तभी ।
एक प्रशस्ति मिटा कर अपनी लिखी प्रशस्ति स्वहस्त जभी ॥
चले अयोध्या किन्तु नगर में चक्र प्रवेश न कर पाया ।
ज्ञात हुआ लघु भ्रात बाहुबलि सेवा में न अभी आया ॥
भरत चक्रवर्ती ने चाहा बाहुबली आधीन रहे ।
ठुकराया आदेश भरत का तुम स्वतन्त्र स्वाधीन रहे ॥
भीषण युद्ध छिड़ा दोनों भाई के मन सन्ताप हुए ।
दृष्टि मल्ल, जल युद्ध भरत से करके विजयी आप हुए ॥

क्रोधित होकर भरत चक्रवर्ती ने चक्र चलाया है ।
तीन प्रदक्षिण देकर कर में चक्र आपके आया है ॥
विजय चक्रवर्ती पर पाकर उर वैराग्य जगा तत्क्षण ।
राजपाट तज ऋषभदेव के समवशरण को किया गमन ॥
धिक् धिक् यह संसार और इसकी असारता को धिक्कार ।
तृष्णा की अनन्त ज्वाला में जलता आया है संसार ॥
जग की नश्वरता का तुमने किया चिंतवन बारम्बार ।
देह भोग संसार आदि से हुई विरक्ति पूर्ण साकार ॥
आदिनाथ प्रभु से दीक्षा ले व्रत संयम को किया ग्रहण ।
चले तपस्या करने वन में रत्नत्रय को कर धारण ॥
एक वर्ष तक किया कठिन तप कायोत्सर्ग मौन पावन ।
किन्तु खटक थी एक हृदय में भरत भूमि पर है आसन॥
केवल ज्ञान नहीं हो पाया अल्प राग के ही कारण ।
परिषह शीत ग्रीष्म वर्षादिक जय करके भी अटका मन ॥
भरत चक्रवर्ती ने आकर श्री चरणों में किया नमन ।
कहा कि वसुधा नहीं किसी की मान त्याग दो हे भगवन् ॥
तत्क्षण राग विलीन हुआ तुम शुक्ल ध्यान में लीन हुए ।
फिर अन्तर्मुहूर्त्त में स्वामी मोह क्षीण स्वाधीन हुए ॥
चार घातिया कर्म नष्ट कर आप हुए केवलज्ञानी ।
जय जयकार विश्व में गूंजा सारी जगती मुस्कानी ॥
झलका लोकालोक ज्ञान में सर्व द्रव्य गुण पर्यायें ।
एक समय में भूत भविष्यत् वर्तमान सब दर्शाये ॥
फिर अघातिया कर्म विनाशे सिद्ध लोक में गमन किया ।
पोदनपुर से मुक्ति हुई तीनों लोकों ने नमन किया ॥
महामोक्ष फल पाया तुमने ले स्वभाव का अवलम्बन ।
हे भगवान् बाहुबलि स्वामी कोटि कोटि शत शत वन्दन ॥
आज आपका दर्शन करने चरण शरण में आया हूं ।
शुद्ध स्वभाव प्राप्त हो मुझको यही भाव भर लाया हूं ॥
भाव शुभाशुभ भव निर्माता शुद्ध भाव का दो प्रभु ज्ञान ।
निज परणति में रमण करूं प्रभु हो जाऊं मैं आप समान ॥

समकित दीप जले अन्तर में तो अनादि मिथ्यात्व गले ।
राग द्वेष परणति हट जाये पुण्य पाप सन्ताप टले ॥
त्रैकालिक ज्ञायक स्वभाव का आश्रय लेकर बढ़ जाऊं ।
शुद्धात्मानुभूति के द्वारा मुक्ति शिखर पर चढ़ जाऊं ॥
मोक्ष लक्ष्मी को पाकर श्री निजानन्द रसलीन रहूं ।
सादि अनन्त सिद्ध पद पाऊँ सदा सुखी स्वाधीन रहूं ॥
आज आपका रूप निरखकर निज स्वरूप का भान हुआ ।
तुम सम बने भविष्यत् मेरा यह दृढ़ निश्चय ज्ञान हुआ ॥
हर्ष विभोर भक्ति से पुलकित होकर की है यह पूजन ।
प्रभु पूजन का सम्यक् फल हो कटें हमारे भव बन्धन ॥
चक्रवर्ति इन्द्रादिक पद की नहीं कामना है स्वामी ।
शुद्ध बुद्ध चैतन्य परम पद पायें हे अन्तरयामी ॥

ॐ ह्रीं श्री जिन बाहुबली स्वामिने अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

घर घर मङ्गल छाये जग में वस्तु स्वभाव धर्म जानें ।
वीतराग विज्ञान ज्ञान से शुद्धातम को पहिचानें ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्य मन्त्र - ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनाय नमः

卐卐卐

गीत

कर्मों की आग मे ही हर वक्त जल रहा ।
नरकों के हिमालय में हर वक्त गल रहा ॥
पाता हूं महाभाग्य से नर भव कभी कभी ।
नर भव में भी ये मोह दुष्ट मुझे छल रहा ॥
सद्‌गुरु ने मुझको मोक्षमार्ग आके बताया ।
फिर भी मैं मूल भूल से रागों में पल रहा ॥
तरकीब बताई थी तत्वाभ्यास की ।
तत्वाभ्यास भी मुझे हरदम ही खल रहा ॥
माना न आज को किया कल पर ही भरोसा ।
वह कल नहीं मिला हमेशा इसर्फ कल रहा ॥

卐卐卐

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान

अत्यंत दुर्लभ प्राचीन चित्र
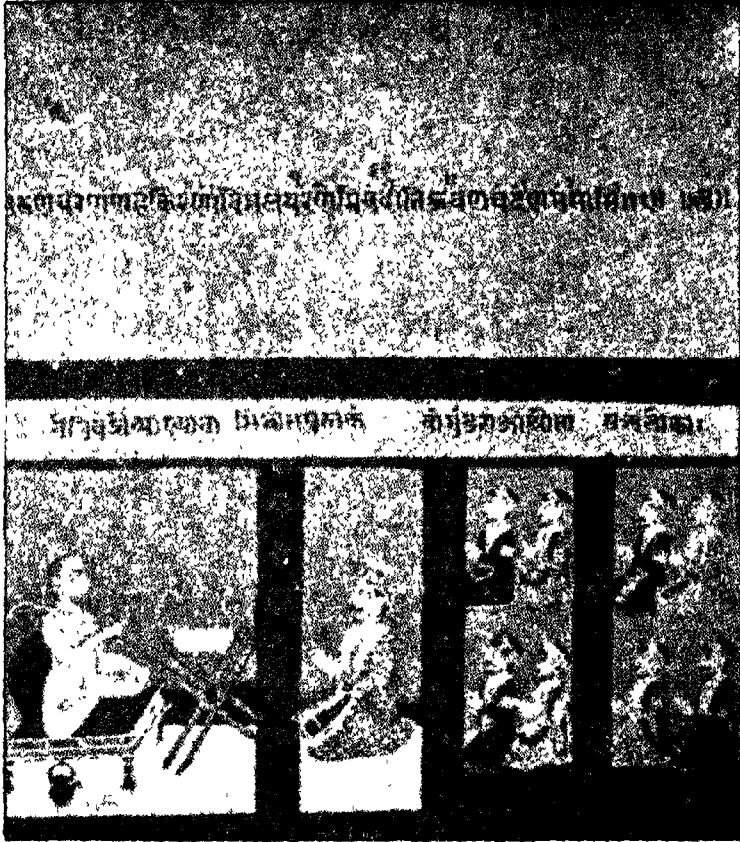
आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्त्ती

एवं उनके शिष्य गोम्मट चामुन्डराय जिनके नाम पर आचार्य श्री ने ग्रंथ का नाम ही गोम्मटसार रख दिया

धन्य गुरु धन्य शिष्य

श्री सप्तऋषि पूजन

जय जयति जय सुर मन्यु, जय श्री मन्यु, निचय, मुनीश्वरम्।
जय सर्व सुन्दर, पूज्य श्री जयबान, परम यतीश्वरम् ॥
जय विनय लालस और श्री जय मित्र, मुनि ऋद्धीश्वरम्।
जय ध्यानि पति, जय ज्ञान मति जिन साधु सप्त ऋषीश्वरम्॥
जय ऋद्धि सिद्धि महान धारी, महामुनि जगदीश्वरम् ।
जय सकल जग कल्याणकारी, दयानिधि अवनीश्वरम्॥

ॐ ह्री श्री सुरमन्यु, श्रीमन्यु, निचय, सर्व सुन्दर, जयवान, विनय लालस, जय मित्र, सप्त ऋषीश्वरा अत्र अवतर अवतर संवोषट् ।

ॐ ह्री श्री सुरमन्यु श्रीमन्यु, निचय, सर्व सुन्दर, जयवान, बिनय लालस, जय मित्र, सप्त ऋषीश्वरा अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनम् ।

ॐ ह्री श्री सुरमन्यु, श्रीमन्यु, निचय, सर्व सुन्दर, जयवान, विनय लालस, जय मित्र, सप्त ऋषीश्वरा अत्र नम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद-ताटंक

सप्त तत्व श्रद्धान पूर्वक आत्म प्रतीत करूँ स्वामी ।
सप्त भयों से रहित बनूँ मैं जन्म मरण नाशूँ स्वामी ॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुरमन्यु, श्रीमन्यु, निचय, सर्व सुन्दर, जयवान, विनय लालस, जय मित्र, सप्त ऋषिश्वरेभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलम् नि. ।

सप्त दश नियम नित पालन कर सप्ताक्षरी मन्त्र ध्याऊँ।
सप्तनरक, सुर, पशु, नर गतिमय भव आतप प्रभुविनशाऊँ॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिश्वर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुरमन्यु, श्रीमन्यु, निचय, सर्व सुन्दर, जयवान, बिनब लालस, जय मित्र, सप्त ऋषिश्वरेभ्यो संसारताप विनाशनाय चन्दनम् नि ।

श्री सप्तऋषि पूजन

सप्त सुगुण दाता के पाऊँ सप्त स्थान दान दूँ नित्य ।
सप्तव्यसन तज निजआतम भज अक्षयपद पाऊँ निश्चित॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्री श्री सुर मन्यु, श्रीमन्यु, निचय, सर्व सुन्दर, जयवान, विनय लालस, जय मित्र, सप्त ऋषिश्वरेभ्यो अक्षय पद प्राप्तये अक्षतम् नि.।

सप्त शुद्धिपूर्वक सामयिक करूँ त्रिकाल शुद्ध मन से ।
सप्तशील को पाल कामअरि नाश करूँ निज चिन्तन से॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुर मन्यु श्रीमन्यु निचय, सर्व सुन्दर, जयवान विनय लालस, जय मित्र, सप्त ऋषिश्वरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पम नि ।

सप्त कुम्भ व्रत चार शतक छयानवे महा उपवास करूँ।
इनमें इकसठ करूँ पारणा क्षुधा रोग फिर नाश करूँ ॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुर मन्यु, श्रीमन्यु, आदि सप्त ऋषिश्वर क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यम् ।

सप्त नयों के द्वारा स्वामी वस्तु तत्व का करूँ विचार ।
मोहनाश हित सात प्रतिक्रमण करके पा लूँ ज्ञानाचार ॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषीश्वर बन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चारित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्री श्री सुर मन्यु, श्रीमन्यु, आदि सप्त ऋषिश्वर मोहान्धकार विनाशनाय दीपम् ।

सप्त भग स्याद्वाद मयी जिनवाणी की छाया पाऊँ ।
केवल ज्ञान लब्धि को पाकर अष्ट कर्म पर जय पाऊँ॥

सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुर मन्यु, श्रीमन्यु, आदि सप्त ऋषिश्वरेभ्यो अष्ट कर्म विध्वंसनाय धूपम् ।

सप्त समुद्घातों में स्वामी केवलि समुद्घात पाऊँ ।
आठ समय पश्चात् मोक्ष पा पूर्ण शाश्वत सुख पाऊँ ॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुर मन्यु, श्रीमन्यु, आदि सप्त ऋषिश्वरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलम् ।

सप्त परम स्थानों में निर्वाण थान शिवपुर जाऊँ ।
पद अनर्घ ले सादि अनन्त सिद्ध सुख पाऊँ हर्षाऊँ॥
सुरमन्यु, श्रीमन्यु आदि जयमित्र सप्त ऋषिवर वन्दन।
श्रद्धा ज्ञान चरित्र शक्ति से काटूँ भव भव के बन्धन ॥

ॐ ह्रीं श्री सुर मन्यु, श्रीमन्यु, आदि सप्त ऋषिश्वरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घम् ।

जयमाला

दोहा

महा पूज्य पावन परम श्री सप्त ऋषिराज ।
आत्म धर्म रथ सारथी तारण तरण जहाज ॥

वीरछंद

तीर्थंकर मुनि सुव्रत प्रभु का जब था शासन काल महान।
रामचन्द्र बलभद्र नृपति के गूँजे थे जग में यश गान ॥
धर्म भावना से करते थे अगणित जीव आत्म कल्याण।
चारण आदि ऋद्धियाँ पाकर पा लेते थे मुक्ति विहान ॥
नगर पुर के अधिपति थे श्री नन्दन नृप वैभववान् ।
उनके सात सुपुत्र हुए धरणी रानी से अति विद्वान ॥

सुरमन्यु, श्रीमन्यु, निचय जयमित्र, सर्व सुन्दर जयवान।
श्री विनय लालस गुणधारी, सत्य शील से शोभावान ॥
लाड प्यार में पले सर्व भौतिक सुख से भूषित सुकुमार।
राजकाज भी देखा करते थे सातो ही राजकुमार ॥
नृप प्रीतंकर मुनि बन घोर तपस्या में रत हुए महान।
शुक्ल ध्यान धर घाति कर्म हर पाया अनुपम केवल ज्ञान॥
अगणित देवों ने स्वर्गों से आकर गाया जय जय गान।
पिता सहित सातो पुत्रों को भी आया निजआतम भान॥
प्रतिबोधित हो दीक्षा धारी मुनि पद अङ्गीकार किया ।
अट्ठाइस मूल गुण धारे मोक्ष मार्ग स्वीकार किया ॥
श्री नन्दन ने केवल ज्ञान प्राप्त कर सिद्धालय पाया ।
सातों पुत्रों ने भी तप करके सप्त ऋषि सुनाम पाया ॥
वे सातो ही एक साथ तप करते थे भव भयहारी ।
महाशील का पालन करते अनुपम पूर्ण ब्रह्मचारी ॥
कुछ दिन में ही हुए चारणादि ऋद्धियों के स्वामी ।
महा तपस्वी परम यशस्वी ऋद्धीश्वर जग में नामी ॥
रामचन्द्र जी के लघु भ्राता करते थे मथुरा में राज ।
न्यायपूर्वक प्रजा पालते थे शत्रुघ्न नृपति महाराज ॥
मधु राजा को जीत राज मथुरा का इनने पाया था ।
मधु का मित्र असुरपति इक चमरेन्द्र यक्ष तब आया था॥
अति क्रोधित हो रौद्र भावमय उसके मन में बैर जगा ।
किया प्रकोप महामारी का मथुरा का सौभाग्य भगा ॥
ईति भीति फैलाई इतनी नगरी सूनी हुई अरे ।
जहाँ गीत मङ्गल होते थे वहाँ शोक के मेघ घिरे ॥

हाहाकार मचा नगरी में शून्य हुए गृह मनुजों से ।
पाप उदय हो तो क्या कोई पार पा सका दनुजों से ॥
पुण्योदय से इक दिन श्री सप्त ऋषि मथुरा में आये ।
गगन बिहारी नभ से उतरे जन जन ने दर्शन पाये ॥
तत्क्षण रोग महामारी का नष्ट हुआ सब हर्षाये ।
राजा प्रजा सभी ने अति हर्षित होकर मङ्गल गाये ॥
मुनि चरणों के शुभ प्रताप से सारी नगरी धन्य हुई ।
जल थल नभ में श्रेष्ठ सप्त ऋषियों की गून्जी जय जयकार॥
धन्य तपस्या धन्य महामुनि धन्य हुआ तुमसे संरार ।
सीताजी ने नगर अयोध्या में इनको आहार दिया ॥
विनय भाव से वन्दन करके अक्षय पुण्य अपार लिया ॥
श्री सप्त ऋषि परम ध्यान धर हुए भवार्णव के उस पार।
परम मोक्ष मङ्गल के स्वामी सकल लोक को मङ्गलकार॥
महा ऋद्धि धारी ऋषियों को सादर शीश झुकाऊँ मैं ।
मन वच काय त्रियोगपूर्वक चरण शरण में आऊँ मैं ॥
ऐसा दिन कब आयेगा प्रभु जब जिन मुनि बन जाऊँगा।
निज स्वरूप का अवलम्बन ले आठों कर्म नशाऊँगा ॥
सप्त भूमि अथवा निगोद आदिक भव व्यथा मिटाऊँगा।
जिन गुण सम्पत्ति हेतु महाव्रत धार राग विनशाऊँगा॥
सप्ताहार दोष मैं टालूँ सातों विषय करूँ नित नाश।
तजूँ सप्त पक्षाभासों को पाऊँ सम्यक् ज्ञान प्रकाश ॥
सप्त रत्न का लोभ न जागे ना चौदह रत्नों का राग ।
सप्तविशति अधिक शताक्षरि मन्त्र जपूँ कर निज अनुराग॥

मनुज देव पशु नर्क निगोदादिक में दुख ही दुख पाया।
भव सन्ताप मिटाने का प्रभु आज स्वर्ण अवसर आया॥
सप्त तपो ऋद्धियाँ प्राप्त कर वीतरागता उर लाऊँ ।
पाप पुण्य पर भाव नाश हित श्री सप्त ऋषि को ध्याऊँ॥
द्वादश तप की महिमा पाऊँ शुद्धातम के गुण गाऊँ ।
ग्रीष्म शीत वर्षा ऋतु में भी निज आतम लख मुस्काऊँ॥
विविध भाँति के व्रत मैं पालूँ निरतिचार हो शल्य रहित।
प्रभो सिंह निष्क्रीडित आदिक तप व्रत परिसंख्यान सहित॥
केवल ज्ञान प्रगट कर स्वामी चार घातिया नाश करूँ ।
सिद्ध शिला पर सदा विराजूँ अनुपम मोक्ष प्रकाश वरूँ॥
सप्त ईतियाँ और भीतियॉ पल में हो जायें अवसान ।
अखिल विश्व में मङ्गल छाये सभी सुखी हों समतावान॥

ॐ ह्रीं श्री सुरमन्यु, आदि सप्त दोहा ऋषीश्वरेभ्यो पूर्णार्घ्यं ।

आशीर्वाद

श्री सप्त ऋषिवर चरण जो लेते उर धार ।
अष्ट ऋद्धियॉ प्राप्त कर हो जाते भव पार ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री सप्त ऋषिवराय नमः

ज्ञान की छाँव तले ।
मोह मिथ्यात्व गले ॥
मुक्ति का मार्ग पा राग संपूर्ण जले ॥ ज्ञान. ॥
शुद्ध हो भाव मेरे
दोष हो अभाव मेरे, मेरा संसार टले ॥ ज्ञान. ॥

ॐ

श्री आचार्य नेमिचंद्र पूजन

स्थापना

गीतिका

नेमिचंद्र आचार्य श्री को विनय से वन्दन करूं ।
ग्रंथ गोम्मटसार रचनाकार पद अर्चन करूं ॥
करुणानुयोग महान के इस शास्त्र को पढ़ दुख हरूं।
नेमिचंद्र मुनीश की मैं विनय से पूजन करूं ॥

ॐ ह्री श्री नेमिचद्र आचार्य अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र आचार्य अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापन ।
ॐ ह्री श्री नेमिचंद्र आचार्य अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

अष्टक

छंद-मानव

समता जल की धारा से मिथ्यामल को धो डालूँ ।
जन्मादि रोग त्रय क्षय हित समकित की निधि कोपालूँ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र आचार्येभ्यो जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

समता तरु चंदन लाऊं शीतल स्वभाव निज पाऊँ ।
समभावी शीतल जल पी भवआतप पर जय पाऊँ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ़ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र आचार्येभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

समता के अक्षत लाऊं निज अक्षय पद प्रगटाऊँ ।
उज्ज्वल स्वभाव से भव की कालुषता प्रभु विघटाऊँ॥

श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्री श्री नेमिचंद्र आचार्यभ्यो अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

समता के पुष्प चढाऊँ कामाग्नि प्रसिद्ध बुझाऊँ ।
गुण महाशील को पाकर निष्काम रूप हो जाऊँ ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्री श्री नेमिचंद्र आचार्यभ्यो कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

समता के रसमय चरु पा मैं पूर्ण तृप्त हो जाऊँ ।
दुख क्षुधा वेदना क्षयकर सम्पूर्ण मुक्ति सुख पाऊँ ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचद्र आचार्यभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

समता के दीप प्रजालू मोहान्धकार विनशाऊँ ।
कैवल्य ज्ञान की महिमा निज अंतर में प्रगटाऊँ ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मै भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्री श्री नेमिचद्र आचार्यभ्यो मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

समतामय धूप सुगंधित चरणों मे आज चढ़ाऊँ ।
वसु कर्मो को क्षय करके शाश्वत निज पदवी पाऊँ ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचद्र आचार्यभ्यो अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

समता फल चरण चढाऊँ मैं महामोक्ष फल पाऊँ ।
सिंहासन सिद्ध शिला का अविलंब नाथ मैं पाऊँ ॥

श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र आचार्येभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

समता के अर्घ्य बनाऊँ पदवी अनर्घ्य निज पाऊँ ।
निज ज्ञान तरंग नहन कर ध्रुव धाम आपना पाऊँ ॥
श्री नेमिचंद्र चरणाम्बुज मैं भाव पूर्वक वन्दूँ ।
पढ गोम्मटसार ग्रंथ को अपना स्वभाव अभिनन्दूँ ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र आचार्येभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

जयमाला

दोहा

नेमिचद्र आचार्य को वन्दूँ बारंबार ।
गोम्मटसार महान का पाऊँ स्वामी सार ॥

छंद रोला

शुद्ध आत्मा का चिन्तन ही है सुखदायी ।
पर परिणति की संगति तो है भव दुखदायी ॥
कर्म बंध करने में तत्पर परपरिणति है ।
कर्म बंध क्षय में सक्षम यह निज परिणति है ॥
पंचम करणलब्धि प्राणी को जब मिल जाए ।
कली कली सम्यक् दर्शन की उर खिल जाए ॥
सम्यक् ज्ञान सजग हो जाता अपने भीतर ।
सम्यक् चारित्र से शोभित होता निज अंतर ॥
रत्नत्रय की तरणी ही भव पार लगाती ।
संयम की महिमा अवरति को दूर भगाती ॥
यथाख्यात की पावन छवि उर को भा जाती ।
तब अरहंत दशा स्वयमेव निकट आ जाती ॥

हो जाता पक्षातिक्रान्त यह भोला प्राणी ।
नयातीत होकर हो जाता सम्यक् ज्ञानी ॥
गुणस्थान से हो अतीत निज शिवपद पाता ।
सिद्धपुरी में आनंदित हो शिव सुख पाता ॥
नेमिचंद्र आचार्य कृपा मैंने पायी है ।
सम्यक् दर्शन पाने की वेला आयी है ॥
इसीलिए हे मुनिवर मैंने की है पूजन ।
आप कृपा से हो जाऊँगा मैं आनंदघन ॥

ॐ ह्रीं श्री नेमिचंद्र आचार्येभ्यों जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

आशीर्वाद

दोहा

नेमिचंद्र आचार्य को बारबार प्रणाम ।
गोम्मटसार महान पढ पाऊं निज ध्रुव धाम ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः

पाया जिन शासन है
संयम अनुशासन है॥
हुआ निमंत्रित अपने भीतर ।
निज छवि भावन है ॥ पाया ॥
संयम का फल पाया मैने ।
अपने को ही ध्याया मैनें ॥
खुले मुक्ति के द्वारा आज तो ।
ऋतु मन भावन है ॥ पाया ॥

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तवन

छंद-गीतिका

नमः श्री आदिनाथाय सर्व मंगलदायकम् ।
विश्व तत्त्व प्रकाशाय स्वपर ज्ञान प्रदायकम् ॥
नमः श्री अजितनाथाय आत्म तत्त्व प्रकाशकम् ।
शुद्ध सम्यक्त्वदाताय सर्व सौख्य प्रदायकम् ॥
नमः श्री नाथ संभव जिन सप्त भय विध्वंसकम् ।
भेद विज्ञान दाताय भवाताप असंभवम् ॥
नमः अभिनंदन महाप्रभु ज्ञानमय आनंदकम् ।
कर्म घाति विनाशकर्ता महा पूज्य जिनेश्वरम् ॥
नमः सुमति जिनेश स्वामी सुमति दाता जिनवरम्।
सिन्धु सम्यक् ज्ञान पति अरहंत जिन तीर्थंरकम् ॥
नम पद्मप्रभ सुपावन परम पूज्य पवित्रकम् ।
पुण्य पाप विनाशकम् प्रभु शुद्ध भाव प्रकाशकम् ॥
नमः देव सुपार्श्व नाथ ध्यान पति अभ्यंकरम् ।
महा मंगल मूर्ति जिनवर यथाख्यात प्रकाशकम् ॥
नमः चंद्र प्रभो सुनिर्मल ज्ञानचंद्र विभूषितम् ।
परम ध्यानी परम ज्ञानी परम भाव प्रकाशकम् ॥
नमः सुविधि महान जिनवर पुष्पदंत जिनेश्वरम् ।
शिवम् सत्यम् सुविधि दाता ज्ञान पुष्प प्रदायकम् ॥
नमः शीतल जिनेशाय सौख्य कर्त्ता शीतलम् ।
सहज निज चारित्र दाता भव्य जन सुख कारणम्॥
नमः श्री श्रेयांस नाथ परम जिन श्रेयस्करम् ।
ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय पति अविकल्प जिन परमेश्वरम् ॥

श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तवन

नम. श्री जिन वासुपूज्य सुपरम पूज्य मुनीश्वरम् ।
भावना भवनाशिनीपति त्रिलोकाग्र विराजितम् ॥
नम जिनवर विमलनाथ सुविमल आत्म प्रकाशकम्।
शुद्ध रत्नत्रयमयी जिन भव्य जन भव तारणम् ॥
नम. श्री नाथ अनंतस्वामी गुण अनंत प्रदायकम् ।
ज्ञान दर्शनवीर्य सुख दाता अनंत चतुष्टयम् ॥
नमः हे धर्म के धारी परम धर्म प्रदायकम् ।
आत्म धर्म प्रकाश कर्त्ता धर्मपति मंगलयमयम् ॥
नमः श्री शान्ति के सागर परम शान्ति प्रदायकम् ।
कर्म वसु के शान्त कर्त्ता परम शान्त स्वरूपकम् ॥
नम स्वामी कुन्थुनाथ सुदया सिन्धु महाप्रभो ।
भाव अदया के विनाशक साम्य भावी हे विभो ॥
नम श्री अरनाथस्वामी कर्म अरिदल क्षयकरम् ।
भव्य जनहित कारणम् जिन महामोह विदारणम् ॥
नम मल्लिमहान जिनवर मोह मल्ल विनाशकम्।
ज्ञानधन साम्राज्य पति जिन महा साधु महामुनिम्॥
नमः मुनिसुव्रत नमन निज धर्म श्रेष्ठ प्रकाशकम् ।
व्रत महाव्रत चक्रवर्ती पद अखड विजयकरम् ॥
नम श्री नमि नाथ निर्दोषी निजालंबी जिनम् ।
नमित सुर नर इन्द्रि मुनि पूजित परम कल्याणकम्॥
नमः स्वामी नेमिनाथ सुमोक्ष मंगलदायकम् ।
सर्व संकट नाश कर्त्ता सिद्ध सौख्य प्रदायकम् ॥
नम हे प्रभु पार्श्वनाथ सुत्रिकाली मंगलमयम् ।
सकल विश्व अनिष्ट हर्त्ता सौख्य कर्त्ता जिनवरम्॥

नम· अंतिम वर्धमान महान जग कल्याणकम् ।
वीर सन्मति धीर प्रभु महावीर जिनतीर्थंकरम् ॥
नम. तीर्थेश तीर्थंकर वृषभ वीर जिनेश्वरम् ।
जयति जय त्रैलोक्य अधिपति चतुर्विंशति जिनवरम्॥

अनुष्टुप

नेमि चंद्र जिनंनत्वा सिद्धं श्री ज्ञानभूषणम् ।
वृत्ति गोम्मट सारस्य कुर्वे कर्णाटवृत्तित. ॥
अज्जज्जसेण - गुण गण समूह संधारि अजिय सेण गुरु।
भुवण गुरू जस्सगुरू, सो रायो गोम्मटो जय दु ॥
अरिहाणं सिद्धाणं आइरियाणं उवज्झायसाहूणं ।
णामाणि णाम मंगल मुद्दिट्ठं वीयराएहिं ॥

चेतन मन काहे होत अधीर।
आदिनाथ समझावें तोकूं समझावें महावीर॥
सब संयोग अजीव ज्ञेय हैं सभी अचेतन वीर।
यह संयोगी भाव यही है महादुष्ट बेपीर॥
आत्म स्वभाव त्रिकाली द्वारा उपादेय गंभीर।
एकदेश ही उपादेय संवर स्वभाव का नीर॥
निज सिद्धत्व स्वउपादेय परमोत्तम पावन धीर॥
पंच सकार समझ लेगा तो कट जाये पीर।
आदिनाथ तू बन जाएगा इक पल में महावीर॥

***

मंगलाचरण

ॐ

श्री गोम्मट सार विधान

मंगलाचरण

अठविह कम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणाणिच्चा ।
अट्ठगुणा किदकिच्चा लोयग्गणि वासिणो सिद्धा॥

अनुष्टुप

नेमिनाथ भगवान को सविनय करूँ प्रणाम ।
गोम्मट सार महान रच निजमें करूं विराम ॥
मंगलं सिद्ध परमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरं ।
मंगलं शुद्ध चैतन्यं आत्म धर्मोस्तु मंगलम् ॥

दोहा

जयति पंच परमेष्ठी जय जिनेन्द्र जगदीश ।
जय जगदंबे दिव्य ध्वनि सदा झुकाऊं शीष ॥
नव देवों को नमन कर प्राप्त करूं सम्यक्त्व ।
गोम्मटसार विधान का जानूं नाथ महत्व ॥
आत्म देव को नमन कर वमन करूं मिथ्यात्व ।
रचूं विधान महान यह पाऊं नाथ समत्व ॥

छंद

सिद्ध सुद्धं पणमिय जिणिंदवर नेमिचंद मकलंकं ।
गुणरणय भूसणुदयं जीवस्स गीत परुवणं बोच्छंद ॥

गीत

मिथ्या भ्रम तम गया, ये असंयम गया ।
पर का उद्यम गया, जीते सारे विकार ॥
ज्ञान गंगा मिली कली मन की खिली ।
शान्ति उर में झिली आया आनंद अपार ॥
मैं तो दृष्टा बना मैं तो ज्ञाता बना ।
मैं हूं ज्ञायक ही हूँ हुआ मैं तो निर्भार ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

श्री गोम्मट सार विधान

पीठिका

छंद ताटंक

एक सहस्र वर्ष के पहिले नेमिचंद्र आचार्य हुए ।
उनके द्वारा जिनआगम अनुसार धर्म के कार्य हुए ॥
श्रवण वेलगोला में पर्वत श्री विन्ध्यगिरि अति सुन्दर ।
बाहुबली स्वामी की निर्मित प्रतिमा है अनुपम मनहर ॥
नृप चामुन्डराय का ही था गोम्मट सार नाम विख्यात ।
नेमि चंद्र आचार्य शिष्य थे वे भारत भर में प्रख्यात ॥
किया निवेदन श्री आचार्य प्रभो से हे प्रभु दो कुछ ज्ञान।
कर्मबंध प्रक्रिया जान लूं करूं आत्मा का कल्याण ॥
करुणामय श्री नेमिचंद्र ने रचा शास्त्र आगम अनुसार ।
शिष्य प्रेम वश नाम रख दिया इसी शास्त्र का गोम्मटसार ॥
धन्य हुए चामुन्डराय नृप धन्य हुई मानव पर्याय ।
श्री आचार्य कृपा से पाया मुक्ति मार्ग उत्तम सुखदाय ॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ में जीव कान्ड का किया कथन।
कर्मों की परिभाषा का करके कर्म कान्ड का भी सुकथन॥
पहिले जीव कान्ड को समझो निज स्वजीव को पहचानो।
फिर कर्मो को भलीभांति से समझो फिर निज को जानो॥
दोनों कान्ड बंद करने को ज्ञान कान्ड का लो आश्रय।
घाति अघाति विनाशो क्रम से पाओगे निज सिद्धालय ॥
महिमा गोम्मटसार ग्रंथ की जानो करो स्वपर कल्याण।
मुक्ति थान पाने को चेतन करो आत्म का ही ज्ञान ॥
यही सुविधि है कर्मो से छुटकारा पाने की पावन ।
अन्य न कोई सुविधि जगत में अब तक देखी मन भावन॥

पीठिका

छंद चौपाई आंचली बद्ध

गुण स्थान चौदह को जान । अपना गुण स्थान पहचान॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
है मिथ्यात्व प्रथमगुणथान । दूजा सासादन गुणथान ॥
परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥
तीजा है सम्यक मिथ्यात्व । चौथा है अविरति सम्यक्त्व॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
पंचम देश विरत लो जान । षष्टम सर्व विरत लो मान॥
परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥
अप्रमत्त विरत सप्तम । अपूर्व करण ही है अष्टम ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
नवमा अनिवृत्ति करण सुजान दशम सूक्ष्म सांपराय मान॥
परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥
ग्यारहवां है उपशान्त मोह । बारहवां जानो क्षीण मोह ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
तेरहवा केवली सयोग। चौदहवां केवली अयोग ॥
परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥
फिर तो है गुण स्थानातीत । सिद्ध दशा कर्मो से रीत॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
इनका कर लो सम्यक् ज्ञान । तब होगा शाश्वत निर्वाण॥
परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥
जानो गुण स्थान पर्याय । जीव द्रव्य की सब पर्याय ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
गुण स्थान पर्याय विहीन । सिद्ध जीव हैं ज्ञान प्रवीण ॥

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान

अत्यंत दुर्लभ प्राचीन चित्र
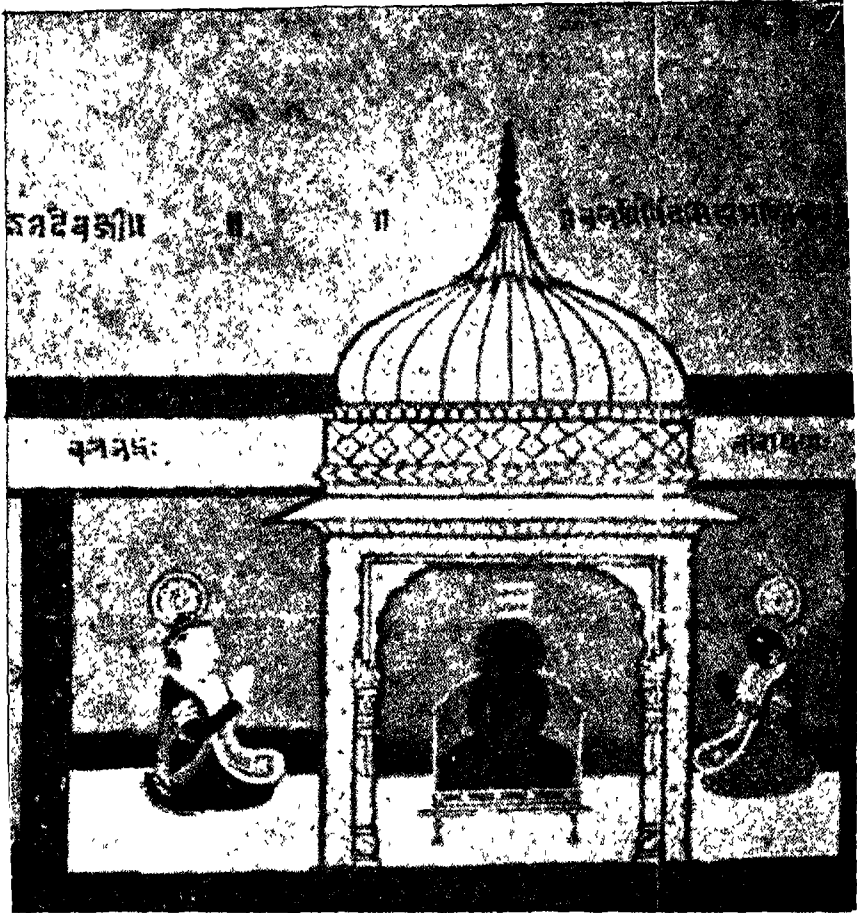
बाईसवें तीर्थंकर भगवान श्री नेमिनाथ एवं बलभद्र और नारायण

परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥
श्रद्धा अरु चारित्र दशा । तरतमता की ही जो दशा ॥
परम गुरु हो जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
यही कहाती है गुणस्थान । चौदह भेद आप लो जान ॥
परम प्रभु हो जय जय नाथ महा विभु हो ॥

छंद चौपाई

जीव कान्ड महाअधिकार । इसमें है विंशति अधिकार ॥
पहिला गुण स्थान अधिकार । अंतिम आलापाधिकार ॥
बीसों अधिकारों को जान । जीव तत्त्व निज लो पहचान ॥
फिर करना है मोक्षोपाय। ध्रौव्य शाश्वत शिवसुखदाय ॥
फिर है कर्म कान्ड हितकार । बंधक बंध स्वरूप विचार ॥
कर्म कान्ड महा अधिकार । इसमें केवल नौ अधिकार ॥
बंध सत्व आदिक का ज्ञान । हो जाता है शीघ्र महान ॥
कर्म बंध जब हो अवसान । तब हो जाता है निर्वाण ॥
नेमिचंद्र आचार्य महान । उनकी कृपा मिला यह ज्ञान ॥
धन्य धन्य हैं चामुन्डराय । ये ही तो है गोम्मटराय ॥
इनके हित ही लिक्खा ग्रंथ । नेमिचद्र मुनिवर निर्ग्रंथ ॥
जागा अब सौभाग्य हमार । सहज मिला यह गोम्मट सार ॥
अब तो करें आत्म कल्याण । बंध नाश पाएं निर्वाण ॥
अवसर मिला आज अनुकूल । क्षय कर दें अनादि की भूल ॥
मुनि सिद्धान्तचक्रवर्ती । नेमिनाथ के अनुवर्ती ॥
नेमिनाथ को नमन करूँ। मिथ्याभ्रम सब वमन करूँ ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

ॐ

पूजन क्रमांक १

सो मे तिहुवण महियो सिद्धो बुद्धि णिदंणोणिच्चो।
दिसहु वरणाण दंसण चरित्तहिं समारिंचा ॥

वीरछंद

सतरह सौ छह गाथाएं लो गोम्मटसार ग्रंथ की जान।
इन्हें जानकर रत्नत्रय लो अष्टकर्म कर दो अवसान॥

श्री गोम्मटसार विधान

सिद्धं सुद्धं पणमिय, जिणिंदवरणेमिचंदमकलंकं ।
गुणरयणभूसणुदयं, जीवस्स परूवणं वोच्छं ॥

समुच्चय पूजन

ॐ ह्रीं गुणरत्नभूषणस्वरूपजीवराजहंसाय नमः ।

अकलंकस्वरूपोऽहं ।

वीरछंद

गोम्मटसार महान जिनागम है करुणानुयोग का ग्रंथ ।
सतरह सौ छह गाथाओं से भूषित ग्रंथ मुक्ति का पंथ ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त चक्रि ने रचकर किया स्वपर कल्याण।
अज्ञानी जीवों के हित रच, दिया सभी को सम्यक् ज्ञान॥
बंध स्वरूप समझने पर ही मुक्ति मार्ग होता प्रारंभ ।
पर कर्तृत्व बुद्धि क्षय होती क्षय हो जाता [illegible] बंध ॥
आज सुअवसर मिला सहज ही पूजन का जागा उर भाव।
निश्चित ही प्रभु हो जाएगा आप कृपा मिथ्यात्व अभाव॥

कर्म बंध क्षय करना है तो पहिले जानो बंध स्वरूप।
बंधक बंधनीय बंधन को जानो जिनआगम अनुरूप॥
करो आत्मा का ही चिन्तन करो आत्मा का ही ध्यान।
अष्ट कर्म के बंधन क्षय कर प्रगट करो निज पद निर्वाण॥
जीव कान्ड को जान प्रथम मैं निज जीवत्व शक्ति लूं जान।
परद्रव्यों परभावों का मैं करूँ शीघ्र स्वामी अवसान॥
कर्मकान्ड को भी मैं समझूं अष्ट कर्म का करूं विनाश।
कर्म रहित मेरा स्वभाव है उस का ही मैं करूं प्रकाश॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।
ॐ ह्रीं गुणस्थानादिविंशतिप्ररूपणारहितजीवराजहंसाय नमः।

चैतन्यप्राणस्वरूपोऽहं।

अष्टक

वीरछंद

समकित जल से मिथ्या भ्रमहर उर में पाऊं ज्ञान प्रकाश।
जन्मादिक त्रय रोग नाशकर पाऊं शाश्वत मुक्ताकाश॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करूं।
कर्म बंध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरूं॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.

ज्ञान भावना चंदन द्वारा भव आतप का करूं विनाश।
भव ज्वर नाशक ज्ञान प्राप्त कर पाऊँ शाश्वत मुक्ताकाश॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करूं।
कर्म बंध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरूं॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

दर्शन भावी अक्षत लाऊं निज स्वभाव का करूं विकास।
अक्षय पद की उज्ज्वलता से पाऊँ शाश्वत मुक्ताकाश॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करू ।
कर्म बंध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरू ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

शुद्ध स्वरूपाचरण शक्ति की निज सुगंध का है आभास।
कामबाण विध्वंस करूं प्रभु पाऊँ शाश्वत मुक्ताकाश ॥
गोम्मट सार महान ग्रथ के अर्थ भाव को ग्रहण करू ।
कर्म बंध प्रक्रिया समझकर, कर्म बंध सम्पूर्ण हरू ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्प नि ।

अनुभव रसमय सुचरु चढाऊं क्षुधा रोग का करूं विनाश।
परम तृप्त आनंद प्रदायक पाऊँ शाश्वत मुक्ताकाश ॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करू ।
कर्म बध प्रक्रिया समझकर कर्म बध सम्पूर्ण हरू ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

स्वपर विवेक दीप ज्योति पा मिथ्यातम का करूं विनाश।
केवल ज्ञान प्रकाश प्राप्त कर पाऊँ शाश्वत मुक्ताकाश॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करूं ।
कर्म बध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरूं ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

प्रगट शुद्ध सयमाचरण कर अष्ट कर्म का करूं विनाश।
नित्य निरजन पद प्रगटाऊं पाऊँ शाश्वत मुक्ताकाश ॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करूं ।
कर्म बध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरूं ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय अष्ट कर्म विनाशनाय धूप नि ।

[illegible]

सम्यक् दर्शन बीज प्राप्त करने का ही मैं करूं प्रयास ।
फिर प्रभु मोक्षसुतरु फल पाऊँ, पाऊँ शाश्वत सुख[illegible] ॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करूं ।
कर्म बंध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरूं ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय [illegible]

रत्नत्रय के अर्घ्य, साम्यभावी ला निज में करूं निवास ।
पद अनर्घ्य प्रगटाऊं अपना पाऊँ शाश्वत सुख[illegible] ॥
गोम्मट सार महान ग्रंथ के अर्थ भाव को ग्रहण करूं ।
कर्म बंध प्रक्रिया समझकर कर्म बंध सम्पूर्ण हरूं ॥

ॐ ह्रीं जिनश्रुतान्तर्गत श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं मोहयोगजनितोघरहितजीवराजहंसाय नमः ।

मार्गणास्थानरहितोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद गीतिका

शक्तियों के संग्रहालय आत्मा को जान लूँ ।
आत्म ज्ञान उपाय करके आत्म निज का भाव लूँ ।
विभावी परभाव की संगति सदा को छोड़ दूँ ।
आत्म का श्रद्धान करके अभी सम्यक् ज्ञान लूँ ॥
चारित्र अभ्यंतर स्वरूपाचरण ही उर में धरूँ ।
पूर्ण जब चारित्र हो तब ध्यान फल निर्वाण लूँ ॥
साम्य भावी भावना मोहादि भावों से विहीन ।
यथाख्यात स्वरूप, निरुपम सर्वश्रेष्ठ प्रधान लूँ ॥

ॐ ह्रीं जीवसमासरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धचैतन्यस्वरूपोऽहं ।

अनुभव पूजन

जयमाला

वीरछंद

वस्तु धर्म की प्राप्ति हेतु मैं रहा बाह्य संशोधन व्यस्त।
अंतर संशोधन न किया प्रभु रहा चतुर्गति दुख से त्रस्त॥
अमृत स्वरूप आत्मा का अनुभव न किया मैंने स्वामी।
मैं अनादि से अनात्मा का दास रहा अन्तर्यामी॥
मैं देहादि स्वरूप नहीं हूँ स्त्री पुत्र न मेरे हैं।
स्वयं भूल से घिरा हुआ हूँ समझा इनको मेरे हैं॥
भेद ज्ञान की कला न सीखी नहीं किया निज का विश्वास।
तत्त्वों का निर्णय करने को किया नहीं प्रभु शास्त्राभ्यास॥
सम्यक् दर्शन का लक्षण है आत्म तत्त्व का दृढ श्रद्धान।
शम संवेग आस्था अनुकंपा निर्वेद भाव उर जान॥
ज्ञान शरीर निजात्मा का अनुभव ही है दृढ सम्यक्त्व।
यही स्वरूपाचरण। मनोरम प्रगटित होता निज आत्मत्व॥
शुद्धभावना निज चैतन्य तत्व की भाना है कर्त्तव्य।
एकमात्र करणीय कार्य यह यदि शिवसुख का है मंतव्य॥
सार भूत चैतन्य स्वरस का पान सतत जो करते है।
वे रत्नत्रय रथ आरूढित हो कर्मो को हरते हैं॥
त्रिलोकाग्र पर सिद्धों का दरबार लगा है करो प्रवेश।
स्वपरभेद विज्ञान प्राप्त कर मानो जिनवर का निर्देश॥
अन्तर्भेद जाग्रत हो तो मोक्ष नहीं रहता है दूर।
निकट मुक्ति लक्ष्मी आती है लाती है शिव रस भरपूर॥
सदाचार की शुद्ध भूमि पर समकित बीज बिना बोये।
जितने भी व्रत धारे वे सब स्वर्गों में जा कर रोये॥

ऐसी भूल न करना रे तू पहिले बोना समकित बीज ।
तभी मुक्ति तरु फल पाएगा सर्व कर्म होंगे निर्बीज ॥
भव्य सिद्ध पहिले से लेकर चौदहवें तक होते हैं ।
अभव्य सिद्ध तो केवल पहिले गुणस्थान में होते हैं ॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणारहितजीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निष्कायस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पद वीपाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिव पथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

सजाया मैने समयसार पावन ।
श्रेष्ठ समय पाया मैंने नर भव में मन भावन ॥
अब न रही कोई भी चिन्ता ।
दर्शन ज्ञान मिले मन भिन्ता
भव का द्वंद
रहा न कोई भी है अद्‌भुत जीवन ॥

ॐ

पूजन क्रमांक २

श्री गोम्मटसार जीवकांड पूजन

जीवकान्ड प्रथम खंड

सात शतक चौतीस हैं गाथा श्रेष्ठ महान ।
कर्मकाड की जानकर करो आत्म कल्याण ॥

गुणजीवा पज्जत्ती, पाणा सण्णा य मग्गणाओ य ।
उओवगोवि य कमसो, वीसं तु परूवणा भणिदा ॥

स्थापना

ॐ ह्री मायाकषायरहितजीवराजहसाय नम ।

निर्वेदस्वरूपोऽहं ।

गोम्मटसार महान के प्रथम खंड को जान ।
जीव कान्ड को जानकर निज जीवत्व पिछान॥
नेमि चद्र मुनिराज का कथन सुनो धर ध्यान।
कर्मादिक से प्रथक है पाओ पद निर्वाण ॥
पाओ पद निर्वाण, प्राप्त कर सम्यक् दर्शन ।
यही तुम्हारा शाश्वत साथी परम ज्ञानधन ॥
जितने सिद्ध हुये सबने इसको ही धारा ।
इसके बल से कर्म शत्रुओं को सहारा ॥
तुम भी सिद्धो के समान हो निज को निरखो।
यदि विश्वास नही है तो जाग्रत हो परखो ॥

[illegible] जीवकाण्ड प्ररूपक गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
[illegible] जीवकाण्ड प्ररूपक गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ स्थापन ।
[illegible] जीवकाण्ड प्ररूपक गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट ।

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणारहितजीवराजहंसाय नमः।

विज्ञानघनस्वरूपोऽहं।

अष्टक

वीरछंद

परम ज्ञान जल धारा पाऊं जन्म मृत्यु का करूं विनाश।
त्रिविध रोग क्षय करके स्वामी आत्म तत्त्व का करूं प्रकाश॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकांड प्ररूपक गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

परम ज्ञान चंदन घिस घिस कर तिलक करूं मैं अपने शीष।
भव ज्वर अब सम्पूर्ण विनाशूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ ईश॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकांड प्ररूपक गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदन नि ।

परम ज्ञान अक्षत मैं लाऊँ अक्षय पद प्रगटाऊँ नाथ ।
क्षत भावो को नष्ट करूँ पर्याय बुद्धि विघटाऊँ नाथ ॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकांड प्ररूपक गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

परम ज्ञान के कमल पुष्प प्रतिक्षण पाऊं निज ज्ञानानंद।
काम भाव विध्वंस करूँ मैं पाऊँ पद निज सहजानंद ॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकांड प्ररूपक गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

परम ज्ञान नैवेद्य तृप्तिकर, क्षुधा वेदना करते नाश ।
तीन लोक की सकल संपदा से हो जाता जीव उदास॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकांड प्ररूपक गोम्मटसाराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

परम ज्ञान दीपक की लौ से मोह तिमिर सब कर दूँ नाश।
यथाख्यात चारित्र ज्योति से पाऊँ केवल ज्ञान प्रकाश ॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकाड प्ररूपक गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

परम ज्ञान मय ध्यान धूप से अष्ट कर्म का करूँ विनाश।
परम निरंजन पद प्रगटाऊँ करूँ आत्मा में ही वास ॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकाड प्ररूपक गोम्मटसाराय अष्ट कर्म विनाशनाय धूप नि ।

परम ज्ञान फल तथा मोक्षफल में न कभी कोई भी भेद।
शुद्ध अखंड स्वभाव शाश्वत एक मात्र है पूर्ण अभेद ॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकांड प्ररूपक गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

परम ज्ञान के अर्घ्य बनाऊँ गुण पर्याय द्रव्य लूँ जान ।
पद अनर्घ्य प्रगटाऊँ अपना भव भावों का कर अवसान॥
गोम्मट सार महान शास्त्र के जीव कान्ड का कर लूँ ज्ञान।
निज जीवात्मा को पहचानूँ निज जीवत्व शक्ति लूँ जान॥

ॐ ह्रीं श्री जीवकाड प्ररूपक गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

[illegible]

ॐ ह्रीं उदयाद्यवस्थाविशेषरहितजीवराजहंसाय नमः ।

निरपेक्षोऽहं ।

महाअर्घ्य

[illegible]

नव तत्त्वों में एक मात्र निज आत्मा ज्योतिर्मय है ।
त्रैकालिक उद्योतवान है गुण अनंत से तन्मय है ॥
यह अभेद है नव तत्त्वों का इसमें कोई भेद नहीं ।
गुण पर्याय आदि का भी तो कोई भेद प्रभेद नहीं ॥
इसे लक्ष्य में जो लेते हैं वे स्वभाव पर देते दृष्टि ।
सादि अनंतानंत काल पाते हैं आनंदामृत की वृष्टि ॥
वस्तु नित्य निरपेक्ष त्रिकाली पर होता सापेक्ष कथन ।
नयातीत पक्षातिक्रान्त है सर्वज्ञों का यही वचन ॥
अनुभव से प्रमाण कर देखो शुद्ध वस्तु ही पाओगे ।
जल्पादिक संकल्प विकल्पों से विमुक्त हो जाओगे ॥

ॐ ह्रीं मिथ्यात्वादिगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रद्धागुणसंपन्नोऽहं ।

जयमाला

गीत

मन मेरा निर्विकार है अब तो ।
ज्ञान का शुद्ध ज्वार है अब तो ॥
जाना है जीव काण्ड [illegible] से ।
जीतूंगा कर्मकाण्ड को अब तो ॥

मोह मिथ्यात्व पूर्ण दूर हुआ ।
शुद्ध सम्यक्त्व धार है अब तो ॥
ज्ञान सम्यक् हुआ बिना श्रम ही ।
पूर्ण चारित्र सार है अब तो ॥
रत्नत्रय का महान फल पाया ।
खुल गया मुक्ति द्वार भी अब तो ॥
सिद्ध पुर ही तो राजधानी है ।
मुक्ति रमणी का प्यार है अब तो ॥
सुख अतीन्द्रिय समुद्र का स्वामी ।
शुद्ध आनंद पूर्ण है अब तो ॥

ॐ ह्रीं उपशांतमोहादिगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्मोहस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रथ पढ शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊ ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मरे मन में अब न शेष कोई विवाद हे ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक १

श्री गोम्मटसार विधान

प्रथम अधिकार

श्री गुणस्थान प्ररूपणा पूजन

मिच्छोसासण मिस्सोअविरदि सम्वो य देस विरदो य।
विरदायमत्त इरयौ अपुव्वअणियदि सुहमोय ॥
उवसंत क्षीण मोहो, सजोग केवलिजिणो अजोगीय ।
चउदसजीव समाप्त, कर्मो सिद्धायणादव्वा ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं औदयिकादिभावरहितजीवराजहंसाय नमः ।

शुद्धपारिणामिकभावस्वरूपोऽहं ।

गुणस्थान प्ररूपणा का पहिला अधिकार ।
गुणस्थान सब जानकर हो जाऊँ अविकार ॥

छंद रोला

हो जाऊँ अविकार प्रथम मिथ्यात्व तजूँ मैं ।
सम्यक् दर्शन पाने को शुद्धात्म भजूँ मैं ॥
चौथा गुणस्थान पाकर सम्यक्त्व प्रकाशूँ ।
पंचम गुणस्थान पाकर अविरति को नाशूँ ॥
सप्तम षष्टम पाकर मैं प्रमाद जय कर लूँ ।
पुण्य पाप आश्रव के छल को मैं प्रभु जीतूँ ॥
नवम दशम में जाऊँ ग्यारहवे को हर लूँ ।

बारहवां पा चार कषायों से मैं रीतूं ॥
तेरहवां पा प्रभु अरहंत दशा प्रगटाऊँ ।
सकल द्रव्य गुण पर्यायें युगपत झलकाऊं ॥
चौदहवां पा योग अभाव करूं मैं स्वामी ।
हो गुणथानातीत सिद्ध पद पाऊं नामी ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं दर्शनमोहरहितजीवराजहंसाय नमः
निर्लोभस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद माधव मालती

प्रथम समकित नीर लाकर मैं करूँ अभिषेक निज का।
त्रिविध रोग प्रसिद्ध नाशूँ जानकर अस्तित्व निज का ॥
गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ में ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

सहज समकित सुचंदन का तिलक मस्तक पर लगाऊँ।
भवातप को क्षय करूँ संसार ज्वर पूरा भगाऊँ ॥
गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ में ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

सहज अक्षत शालि लाऊँ भवोदधि को पार कर लूँ ।
श्रेष्ठ अक्षय पद ग्रहणहित मैं विकारी भाव हर लूँ ॥

गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

पुष्प शील स्वगुणमयी ला काम अरि को जय करूँ मैं ।
कोटि नव से शील पालूं विकारों को क्षय करूँ मैं ॥
गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

सहज अनुभव स्वरस निर्मित सुचरु लाऊँ भावनामय ।
क्षुधा व्याधि विनाश कर दूं सकल भव की कामना मय॥
गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

दीप सम्यक् ज्ञान के ले मोहतम का नाश कर दूँ ।
धर्म के पथ पर चलूँ कैवल्य ज्ञान प्रकाश कर दूँ ॥
गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

धूप लाऊँ शुक्ल ध्यानी सर्व कर्म विनाश के हित ।
मूल आठों प्रकृति नाशूं निरंजन शिव सौख्य के हित॥
गुणस्थान प्ररुपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

ध्यान का फल प्राप्त करके मोक्षफल अविलंब पाऊँ ।
भव भ्रमण को नष्ट कर दूँ सिद्ध पद उर में सजाऊँ ॥

गुणस्थान प्ररूपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय [illegible] नि. ।

अर्घ्य लाऊँ ज्ञान गुणमय पद अनर्घ्य महान पाऊँ ।
सिद्ध सुख वीणा बजाऊँ परम सौख्य अपूर्व लाऊँ ॥
गुणस्थान प्ररूपणा को समझने का श्रम करूँ मैं ।
गुणस्थानातीत होऊँ कर्म रज पूरी हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गुणस्थान प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं चारित्रमोहरहितजीवराजहंसाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अवक्तव्यस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद विधाता

न जाने किस समय चेतन तुम्हारी मृत्यु आ जाए ।
न जाने किस समय जड़ देह धोखा तुमको दे जाए ॥
सुनिश्चित मृत्यु का क्षण है पता हमको नहीं लगता ।
अतः रहना है जाग्रत सावधानी अब न जा पाए ॥
बाह्य लक्षण लगे ऐसे कि आया अंत जड़ तन का ।
त्वरित सल्लेखना लेना भूल मन यह नहीं पाए ॥
भूल थोड़ी भी हो तो हानि होती है भयंकर ही ।
भूल को मूल से नाशो नहीं अब देर हो पाए ॥
मरण से तुम नहीं डरना मरण का महोत्सव करना ।
यही विधि महा मंगलमय उदंगल दूर हो जाए ॥
रहित हूं गुणस्थानों से ये पर्यायें विनश्वर हैं ।
द्रव्य शाश्वत त्रिकाली ध्रुव लक्ष्य उर से नहीं जाए ॥

ॐ ह्रीं औपशमिकभावरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वभावसिद्धोऽहं ।

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान

करणानुयोग के महान ग्रंथ गोम्मटसार लब्धिसार क्षपणासार के रचयिता
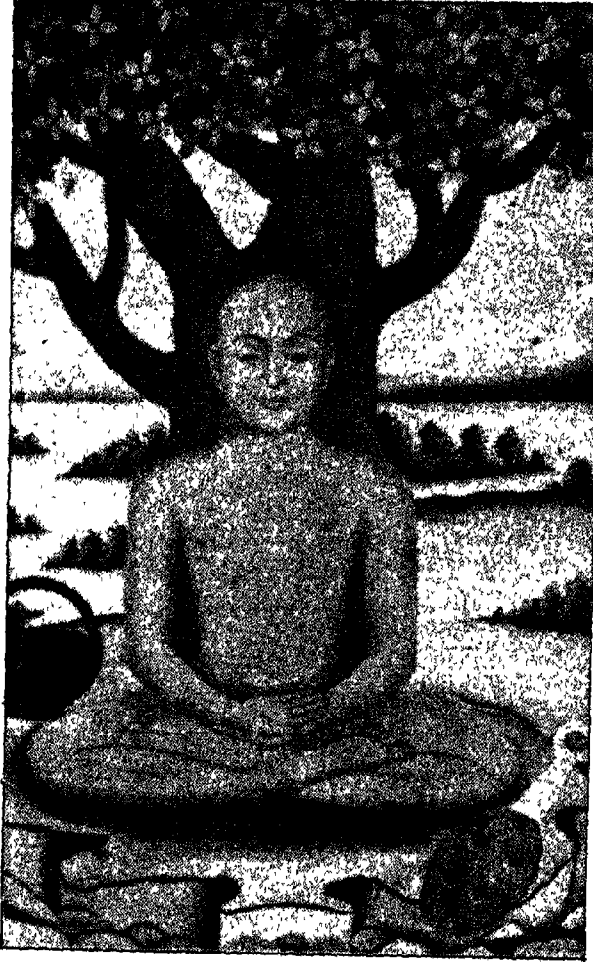
आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती

कालवधि दसवीं शताब्दी

जयमाला

[illegible]

गुणस्थान अरु जीव समास सभी को जानो ।
पर्याप्ति अरु प्राण तथा संज्ञा पहचानो ॥
आदि आदि सब जानो फिर तुम निज को जानो ।
सर्वप्रथम उपशम सम्यक्त्व भाव उर आनो ॥
आठ प्रकार ज्ञान उपयोग उसे तुम जानो ।
चार भांति दर्शन उपयोग उसे तुम मानो ॥
है उपयोग जीव कालक्षण यह पहचानो ।
फिर अपना उपयोग आत्मा मे ही आनो ॥
सयोग केवलि अयोग केवलि सिद्ध प्रभो तक ।
केवल दर्शन ज्ञान शाश्वत युगपत सम्यक् ॥
शीघ्र जगा पुरुषार्थ गुणस्थानातीती बन ।
नयातीत पक्षाति क्रान्त हो बन आनंदघन ॥

ॐ ह्री गोम्मटसार जीवकाड गुणस्थान प्ररूपणा नाम प्रथम अधिकारे जीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्री एकातादिमिथ्यात्वरहितजीवराजहंसाय नम ।

नित्यानंदस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ पढ शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक ४

द्वितीय अधिकार

श्री जीव समास प्ररुपणा पूजन

जेहिं अणेया जीवा, णज्जंते बहुविहा वि तज्जादी ।
ते पुण संगहिदत्था, जीवसमासा त्ति विण्णेया ॥७०॥

स्थापना

ॐ ह्रीं तापसादिमिथ्यात्वरहितजीवराजहसाय नम ।

ब्रह्मस्वरूपोऽहं ।

दोहा

जीव समास प्ररूपणा है दूजा अधिकार ।
जीव समास पिछान कर करूं कर्म परिहार ॥

रोला

करूं कर्म परिहार शक्ति दो मुझको स्वामी ।
जीव समास आदि से भिन्न जीव मैं नामी ॥
अपदत्याग कर स्वपद प्राप्त हो मुझे जिनेश्वर।
अजर अमर अविकल अविनाशी चेतनेश्वर ॥
अब अपूर्व अवसर मैंने पाया है स्वामी ।
सर्व विभावी भाव हरूंगा अंतर्यामी ॥
ज्ञान भावना भाऊंगा मैं सतत निरंतर ।
आप कृपा से शुद्ध हुआ है नाथ निजंतर ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ट तिष्ठ ठ: ठ स्थापनं ।
ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं विपरीतदर्शनरहितजीवराजहंसाय नमः।

अनंतगुणदर्शनस्वरूपोऽहं।

अष्टक

छंद [illegible]

पर द्रव्यों परभावों को पहचान लो ।
ज्ञाता दृष्टा निज स्वभाव को जान लो ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ़ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ़ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

परम भाव संपदा सदा ही पास है ।
क्यों न मुझे बोलो स्वामी विश्वास है ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ़ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ़ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

स्वर्गादिक भी क्षणिक विनश्वर हैं सभी ।
पापोदय आए तो क्षय होते अभी ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ़ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ़ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

शाश्वत ध्रौव्य स्वरूप सर्वदा है विमल ।
अपनी भूलों के कारण मैं हूँ समल ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ़ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ़ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय [illegible] पुष्पं नि. ।

गुण अनंत का सागर निज उर में भरा ।
दर्शन ज्ञानमयी जीवन ही है खरा ॥

गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

ज्ञान दीप की ज्योति हृदय भरपूर है ।
मन मोहान्धकार में स्वामी चूर है ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

कर्मो का तो रंच नहीं अपराध है ।
अपनी भूलों के कारण बरबाद है ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ ॥

ॐ ह्रीं जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्ट कर्म विनाशनाय धूप नि ।

शुद्ध मोक्ष का मार्ग सयमी जानते ।
इसे कष्टकर असंयमी ही मानते ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ ॥

ॐ ह्री जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षमार्ग प्राप्ताय फल नि ।

सुखदायक है पद अनर्घ्य पहचानिये ।
दुखदायक ससार मार्ग है जानिये ॥
गोम्मटसार ग्रंथ का जीव समास पढ ।
श्रेणी क्षपक चढूँगा आगे नाथ बढ ॥

ॐ ह्री जीव समास प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं कारणादिविपर्यासरहितजीवराजहंसाय नम ।

सज्ज्ञानस्वरूपोऽहं ।

श्री [illegible]

महार्घ्य

छंद ताटंक

समकित का बीज उगाया नव तरु बना ज्ञानमय मन भावन॥
जर्जर विभाव के पात झरे। निकले नव कोमलपात खरे॥
चेतन ने पाया निज चिद्घन। समकित का बीज उगाया मन॥
अपने स्वभाव का चिन्तन है। निज अनुभव रस का सिंचन है॥
हो जाऊंगा मैं आनंदघन। समकित का बीज उगा पावन॥
कलियां विकसीं लो फूल खिले। उर यथाख्यात के भाव झिले॥
फल गया मोक्षफल भी घन घन। समकित का बीज उगा पावन॥
अब जीव समास समझ आया। शिव सुख का समय सहज पाया॥
हो गया मुझे अव निज दर्शन। समकित का बीज उगा पावन॥

ॐ ह्रीं अनंतानुबन्धिकषायरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कषायस्वरूपोऽहं

जयमाला

छंद रोला

यह प्ररूपणा जीव समास जीव को मानो।
जीव कहाँ है कैसी दशा जीव की जानो॥
ससारी जीवों के जितने भी प्रकार हैं।
त्रस थावर अथवा सूक्षम बादर विकार हैं॥
अपार्यप्तक अरु पर्याप्तक दोनो जानो।
साधरण प्रत्येक जीव सबको पहचानो॥
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक सभी जीव हैं।
नाम कर्म के बंधन में थे बंधे जीव हैं॥
पृथ्वी कायक अपकायक अरु तेजस कायक।
अग्नि काय के जीव अनंत वनस्पति कायक॥
नित्य निगोद इतर निगोद दोनों को जानो।
है अनादि से नित्य निगोद समझ कर मानो॥

पुण्योदय से त्रस होकर जो काल गंवाते ।
वे ही प्राणी इतर निगोद मूढ़ हो पाते ॥
स्थावर कायक सब एकेन्द्रिय होते हैं ।
द्वय त्रय चऊ ये विकलेन्द्रिय होते हैं॥
विकलेन्द्रिय तो जीव असंज्ञी ही होते हैं ।
संज्ञी तथा असंज्ञी पंचेन्द्रिय होते हैं ॥
पहिले गुणस्थान में होते सब प्राणी हैं ।
चारों गति में भ्रमण कर रहे अज्ञानी हैं ॥
इनके भेद प्रभेद अनेकों सुनो ध्यान से ।
इनके भेदों से छुटकारा लो स्वध्यान से ॥
वंश पत्र योनि में सभी जीव रोते हैं ।
कर्मोन्नत में पुरुष शलाका ही होते है ॥
शखावर्त्त योनि गर्भ नष्ट हो जाता ।
जो स्वभाव निज भजता है वह योनि न पाता॥
देव नारकी का होता उपपाद जन्म है ।
मनुज तथा पशुओ का होता गर्भ जन्म है ॥
सम्मूर्छन पुदगल पिंडो का ग्रहण कहाता ।
त्रिविध भांति से जीव जन्म ले भव दुख पाता॥
पूर्व देह को त्याग ग्रहण करना उत्तर भव ।
यही जन्म कहलाता जो मिलता है भव भव ॥
सचित्त आदि नौ भांति योनियां जन्मस्थल हैं ।
अंडज और जरा युत के भी ये ही थल है ॥
है चौरासी लाख योनियां इनकी जानो ।
भिन्न भिन्न इनकी संरव्याभी तुम पहचानो ॥
नित्य निगोद इतर निगोद पृथ्वी कायक सब ।
अपकायक तेजस कायक वायु कायक सब ॥

सात सात लाख योनियाँ इनकी होतीं ।
सब मिल बयालीस लाख योनियाँ होतीं ॥
वनस्पति कायक की हैं [illegible] लाख योनियाँ ।
द्वय त्रय चऊ विकलेन्द्रिय की छहलाखयोनियाँ॥
देव नारकी पशु पंचेन्द्रिय की लखो योनियाँ ।
चार चार लाख हैं बारह लाख योनियाँ ॥
तथा मनुष्यों की हैं चौदह लाख योनियाँ ।
सब मिलकर चौरासी लाख जु कहीं योनियाँ ॥
सभी नारकी एक नपुसंक वेद युक्त हैं ।
मनुष्य तथा तिर्यंच वेद त्रय ये सुयुक्त हैं ॥
सम्मूर्छन मनुष्य तिर्यंच तो सदा नपुंसक ।
देव भोग भूमि वाले नर स्त्री वेद जु संयुत ॥
अवगाहना जघन्य और उत्कृष्ट जु होतीं ।
सभी जीव आहारक चऊ संज्ञाएं होतीं ॥
पृथ्वी कायक कुल बाईस लाख कोटि हैं ।
अपकायक के कुल तो सात लाख कोटि हैं ॥
तेजसकायक केवल तीन लाख कोटि हैं ।
वायु काय के कुल तो सात लाख कोटि हैं ॥
दो इन्द्रिय के कुल तो सात लाख कोटि हैं ।
त्रय इन्द्रिय के कुल तो आठ लाख कोटि हैं ॥
तथा नारकी कुल पच्चीस लाख कोटि हैं ।
और मनुष्यों के कुल बारह लाख कोटि हैं ॥
सर्पादिक के कुल सब मिल नौ लाख कोटि हैं।
देवों के कुल जानो छब्बीस लाख कोटि हैं ॥
ये सब कुल मिल एक कोटाकोटि अरु जानो।
संतानवे लाख पचास सहस कोटि हैं मानो ॥

योनि रहित कुल रहित सदा तेरा स्वभाव है।
निज बल का प्रयोग कर प्रगटा शुद्ध भाव है॥

छंद चौपई

पहिला गुणस्थान मिथ्यात्व । दूजा सासादन सम्यक्त्व।
तीजा है सम्यक् मिथ्यात्व । चौथा है अविरतसम्यक्त्व॥
पचम एक देश सयम । छट्ठा पूर्ण देश संयम ।
सप्तम अप्रमत्त गुणस्थान । अष्टम अपूर्व करण गुणथान॥
नवम अनिवृत्ति करण पहचान। दसवॉ सूक्ष्म सांपराय जान।
ग्यारहवा केवली अयोग । बारहवा जानो क्षीण मोह॥
तेरहवॉ केवली अयोग । चौदहवॉ केवली अयोग ।
सिद्ध प्रभो गुणथानातीत । छोडी वसु कर्मो की रीत॥
चौथा गुणस्थान लूॅ नाथ । सम्यक दर्शन लूँगा साथ।
होऊॅगा गुणथानातीन । हो जाऊॅ संसारातीत ॥
यही विनय है हे भगवान । पाऊॅ शाश्वत पद निर्वाण।
गोम्मटसार ग्रथ का सार । समझू पाऊॅ सौख्य अपार॥

ॐ ह्री गोम्मटसार जीकाण्डे जीवसमास प्ररूपणानाय द्वितीयाधिकारे चैतन्य स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं सासादनगुणस्थानेरहितजीवराजहंसाय नम ।

निर्दोषस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

श्री [illegible]

ॐ [illegible]

पूजन [illegible]

तृतीय अधिकार

श्री पर्याप्ति प्ररूपणा पूजन

जह पुण्णापुण्णाइं, गिहघडवत्थादियाइं दव्वाइं ।
तह पुण्णिदरा जीवा, पज्जत्तिदरा मुणेयव्वा ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं मिश्रगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय नमः
शुद्धज्ञानस्वरूपोऽहं ।

दोहा

है पर्याप्ति प्ररूपणा का तीजा अधिकार ।
आचार्यो का कथन है शुद्ध जीव ही सार ॥
अब पर्याप्ति प्ररुपणा के जानूँ प्रभु भेद ।
निश्चय से तो मैं सदा पूर्ण अखंड अभेद ॥

छंद रोला

पूर्ण अखंड अभेद आत्मा अपनी जानूँ ।
मैं लौकिक पर्याप्ति रहित हूं यह प्रभु मानूँ ॥
मेरा द्रव्य अलौकिक अनुपम प्रतिभाशाली ।
गुण अनंत की भरी हुई है मुझमें लाली ॥
इस लाली को प्रगटाने को करूं परिश्रम ।
निज सिद्धत्व प्रगट करने में पूरा सक्षम ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् ।
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनं ।
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मिश्रश्रद्धानरहितजीवराजहसाय नम

चिदानंदस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद ताटंक

वस्तु निष्ठ विज्ञान शाश्वत पाने का प्रयत्न कर लूँ ।
नश्वर लौकिक ज्ञान इन्द्रियाधीन छोड भव दुख हर लूँ॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

पर सापेक्ष बंध का कारण नाशवान है इन्द्रिय सुख ।
बाधा सहित विषमतामय है क्षण भंगुर है भव दुख सुख॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चदनं नि ।

पर निरपेक्ष शाश्वत निरुपम अबंध कारण निज शिव सुख ।
अविनाशी निर्बाध अबंधक समातामयी अतीन्द्रिय सुख॥
नर भव मे पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि. ।

चिदानंद कल्पद्रुम चिन्तामणि समान सुख आत्मोत्पन्न ।
वस्तु निष्ठ विज्ञान जानने वाला ही पाता कर यत्न ॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

वस्तु निष्ठ विज्ञान सौख्यमय निर्मल स्वपर प्रकाशक है।
द्रव्य क्षेत्र भव भाव काल परिवर्त्तन पाँचों नाशक है ॥

नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

पूर्ण अतीन्द्रिय सुख का अनुभव अशरीरी आनंद स्वरूप ।
महिमामयी त्रिकाली ध्रुव निज परम तृप्त चैतन्य चिद्रूप ॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

परम अतीन्द्रिय सुख पाने की सरल प्रक्रिया जानी आज।
कर्मो की खेती क्षय कर के पाऊंगा मैं निज पद राज ॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

सम्यक् दर्शन पूर्वक सम्यक् ज्ञान सहित चारित्र धरूँ ।
रत्नत्रय [illegible] से मोक्ष सुफल अविराम वरूँ॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय [illegible] फलं नि. ।

वस्तु निष्ट विज्ञान [illegible] अर्घ्य बना [illegible] काल ।
पद अनर्घ्य अविलंब प्राप्त कर पाऊंगा शिव सौख्य विशाल ॥
नर भव में पर्याप्ति पूर्ण पायी है प्रभु उपयोग करूँ ।
निज शुद्धोपयोग बल द्वारा यह अशुद्ध उपयोग हरूँ ॥
ॐ ह्रीं पर्याप्ति प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं संकलसंयमादिविकल्परहितजीवराजहंसाय नमः

[illegible]स्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद मत्त सवैया

रजायमान पर मे मत हो अपने ही भीतर निरख जरा।
तेरा स्वभाव परमोत्तम है तू एक बार तो परख जरा ॥
इसमे परिपूर्ण अतीन्द्रिय सुख इसमे न रंच है कोई दुख।
इससे बढकर महिमाशाली जग में न अन्य है वस्तु जरा॥
इसमे अनत सुख ज्ञानभरा इसमें दर्शन बल पूर्ण खरा।
ये ही तो मोक्ष स्वरूप इसी का अरे जगा ले अलख जरा॥
पर्याप्ति पूर्ण तेरे भीतर पर्याप्त सौख्य तेरे भीतर ।
तू ही तो ज्ञान दिवाकर है अब तो निज मे ही छलक जरा॥

ॐ ह्री मारणातिकसमुद्‌धातरहितजीवराजहसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निरायुस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद रोला

समय पल्य सागर प्रमाण आगम से जानो ।
सूच्यागुल अरु प्रमाण अगुल को भी जानो ॥
सर्व शक्ति सम्पन्न वही पर्याप्तक होते ।
जो न शक्ति सपन्न अपर्याप्तक वे होते ॥
छह पर्याप्ति में आहार शरीर पर्याप्ति ।
इन्द्रिय श्वासोच्छवास तथा भाषा पर्याप्ति ।
मन पर्याप्ति सब मिल कर है छह पर्याप्ति ॥
एकेन्द्रिय जीवो को होती चऊ पर्याप्ति ।
द्वय त्रय चऊ इन्द्रिय को हैं पांचों पर्याप्ति ॥
सज्ञी पचेन्द्रिय को होती छह पर्याप्ति ।
तथा असज्ञी जीवो को पांचों पर्याप्ति ॥

नाम कर्म पर्याप्तक उदय सर्व पर्याप्ति ।
अपर्याप्तक नाम कर्म का उदय अपर्याप्ति ॥
तू इन सब से रहित शुद्ध है ज्ञान स्वभावी ।
निज स्वद्रव्य का स्वामी है परद्रव्य अभावी ॥

छंद गीतिका

आत्म रक्षक महौषधि का यदि न सेवन करोगे ।
तो बताओ कर्म बदरी किस तरह से हरोगे ॥
मोह मद में चूर होकर राग मे ही मत्त हो ।
आत्मा मे दत्त हो लो स्वानुभव रस भरोगे ॥
एकमात्र यही सुविधि है आत्म के उद्धार की ।
अन्यथा तुम निगोदों के मार्ग पर पग धरोगे ॥
सोच लो हित आपना तुम मुक्ति के पथ पर चलो।
सोचते ही देह भव भोगादि से तुम डरोगे ॥
आज अवसर मिला पावन चूकना मत भूलकर ।
आत्मा को जान लोगे तो सदा सुख वरोगे ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे पर्याप्ति प्ररूपणानाय तृतीय अधिकारे परिपूर्ण स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं चलमलादिदोषरहितजीवराजहंसाय नम

निश्चलस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रौला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊ ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊ अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक ६

चतुर्थ अधिकार

श्री प्राण प्ररुपणा पूजन

बाहिरपाणेहिं जहा, तहेव अब्भंतरेहिं पाणेहिं ।
पाणंति जेहि जीवा,पाणा ते होंति णिद्दिट्ठा ॥१२९॥

स्थापना

ॐ ह्री अप्रत्याख्यानावरण कषायरहित जीवराजहंसाय नम
निष्क्रोधस्वरूपोऽहं ।

दोहा

यह प्ररुपणा प्राण की है चौथा अधिकार ।
द्रव्य प्राण से रहित हूं भाव प्राण ही सार ॥

छंद रोला

भाव प्राण ही सार उसी का लूं आश्रय प्रभु ।
अष्ट कर्म जंजाल क्षीणकर बनूं अजय विभु ॥
भाव मरण ही द्रव्य मरण का मूल दुखमयी ।
भाव मरण क्षय करूं प्राप्त कर ज्ञान सुखमयी ॥
जन्म मरण का चक्र मिटादूं अपने बल से ।
अजर अमर पद पाऊ निज स्वभाव निर्मल से ॥

ॐ ह्री प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर सवौष्ट् ।
ॐ ह्री प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ट तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्री प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

२७ ॐ ह्रीं आप्तागमपदार्थरुचिविकल्परहितजीवराजहंसाय नम
निजभगवानस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद मत्त सवैया

तुम शिव पथ पर ही चरण धरो निज शुद्ध भाव को आनेदो।
जिसको शुभ भाव सुहाते हैं उसको शुभ भाव सुहाने दो॥
चेतना प्राण मेरे महान हैं द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणों के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो॥

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

जो अशुभभाव में लीन सतत उनको भव बंधन होगा ही।
जिनको नरकों में जाना है उनको नरकों में जाने दो ॥
चेतना प्राण मेरे महान हैं द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणों के बल से मुझको प्रभु सिद्धस्वपद सुख पानेदो॥

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसार ताप विनाशनय चंदनं नि ।

शुभ भावों की धारा में जो बहते वे बंधते ही है ।
जिनको स्वर्गों में जाना है उनको स्वर्गों में जाने दो ॥
चेतना प्राण मेरे महान हैं द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणों के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

जो पुण्य पाप के महलों में रहते वे भाव मरण करते ।
भव दुख का पार नहीं उनको बंधों के महल बनाने दो॥
चेतना प्राण मेरे महान हैं द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणों के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

तुम तो केवल निज को देखो निज को निरखो निज को परखो।
निज अनुभव रस का पान करो परिणाम शुद्ध हो जाने दो॥

चेतना प्राण मेरे महान है द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणो के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्री प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

मिथ्यात्व मोह अधियारे का क्षय आत्म स्वबल से होता है।
परमात्म प्रकाश भावना से अभ्यतर आश्रय पाने दो ॥
चेतना प्राण मेरे महान है द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणो के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्रीं प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

कर्मो की ज्वाला से जल जल झुलसा करते भव के प्राणी।
जो ध्यान भाव से दूर उन्हे कर्मो के श्रृग बनाने दो ॥
चेतना प्राण मेरे महान है द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणो के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्री प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

आत्मा की छाया मे आकर जो तत्त्वो का निर्णय करते।
इनको तो भेद ज्ञान द्वारा उर सम्यक् दर्शन पाने दो ॥
चेतना प्राण मेरे महान है द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणो के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्री पाण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

अब सम्यक् ज्ञान प्राप्त करके सम्यक चारित्र सूर्य लाओ।
रत्नत्रय भाति प्रगट करके अब मोक्ष महल मे जाने दो॥
चेतना प्राण मेरे महान है द्रव्य भाव से भिन्न सदा ।
इन प्राणो के बल से मुझको प्रभु सिद्ध स्वपद सुख पाने दो ॥

ॐ ह्री प्राण प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

२८ ॐ ह्री आज्ञासम्यक्त्वविकल्परहितजीवराजहसाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दुराग्रहरहितोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद ताटंक

प्रभु पूजन का फल यह पाऊँ निज स्वभाव में आ जाऊँ।
निज चैतन्य प्राण रक्षा हित नित्य तत्त्व में रम जाऊँ॥
भव विडम्बना से बचने को आत्म ज्ञान का आश्रय लूँ।
निर्मल समयसार बनने को निज उर में दृढ़ निश्चय लूँ॥
महामोह मिथ्यात्व तिमिर को ज्ञान दीप से नष्ट करूँ।
भव अनंत से जमे हुए मिथ्यादर्शन को भ्रष्ट करूँ॥
समकित की तरुणाथी लेकर सर्व विभाव विनाश करूं।
सर्व प्रमाद कषाय क्षीण कर केवल ज्ञान प्रकाश वरूं॥
संयम का मैं संग न छोडूं यथाख्यात का कारण है।
सर्वज्ञत्व प्रकट करने का उपाय निज आराधन है॥
आराधना चार होंगी तो निज सिद्धत्व प्रगट होगा।
क्षय अघातिया कर्म जाल होगा संसार विघट होगा॥
शुद्ध चेतना प्राण संग हैं फिर क्यों डरता हूँ नाथ।
मैं ही तो अरहंत महा प्रभु सिद्ध स्वपद नितमेरे साथ॥

ॐ ह्रीं त्रसस्थावरकर्मरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सदानंदस्वरूपोऽहं।

जयमाला

छंद रोला

द्रव्य प्राण अरुभाव प्राण के भेद जानिये।
निज चैतन्य प्राण की महिमा हृदय आनिये॥
पंचेन्द्रिय के पांच तीन मन वच काया बल।
श्वासोच्छ्वास आयु यही दस लखो प्राण बल॥

प्राण प्ररूपणा पूजन

सञ्ज्ञी पंचेन्द्रिय के तो ये दस प्राण मानिये ।
फिर नीचे के एक एक घट घट प्रमाणिये ॥
एकेन्द्रिय को चार प्राण होते यह जानो ।
आगम कथनी है सर्वज्ञ कथित यह मानो ॥
तेरा चेतन प्राण शाश्वत शुद्ध त्रिकाली ।
महिमा तेरी तीन लोक मे महा निराली ॥

छंद मत्त सवैया

चेतना प्राण जाग्रत करके आनद अतीन्द्रिय पाऊँगा ।
दश प्राणों का ममत्व तज कर निज के ही गीत गुंजाऊँगा॥
एकत्व विभक्त आत्मा का निज वैभव अब दर्शाऊँगा ।
यदि भूल कही जाऊगा तो फिर झट सुधार कर जाऊंगा॥
सम्यक् प्रणाम करना इसको छल ग्रहण न करना कभी भूल।
नैराश्य गगन मे आशा का चंद्रमा सहज प्रगटाऊँगा ॥
मिथ्याभ्रम के धुधले बादल इनको भी नष्ट करूँगा मै ।
गगनागन को उज्ज्वल करके मै आत्म गीत ही गाऊँगा॥
निज आत्म रूप चैतन्य पुज आनद कद ध्रुवधामी है ।
इसको ही लक्ष्य बना अपना इसको ही ध्येय बनाऊँगा॥
व्यवहार विमोहित रहा सदा पर्याय बुद्धि से ही खेला ।
अब द्रव्य दृष्टि बन कर विकार सारे ही दूर हटाऊँगा॥
सर्वज्ञो की दिव्य ध्वनि भी अब लो गूंज रही है अंतर मे।
उसका ही अवलबन लेकर अपना स्वरूप प्रगटाऊँगा ॥
अपने प्राणो का ध्यान मुझे अपने चेतन का ज्ञान प्रभो ।
इसके बल से ही दौड दौड मै सिद्ध शिला तक जाऊँगा॥

[illegible] जीवकाण्ड पर्याप्ति प्ररूपणानाय चतुर्थ अधिकारे बोध प्राण स्वरूपाय [illegible] ।

[illegible]

ॐ ह्रीं प्रत्याख्यानावरणकषायरहितजीवराजहंसाय नमः

निर्विकल्पस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वादः

चलते चलो चलते चलो चलते चलो जी।
दलते चलो कर्मों को दलते चलो जी।।
आज तक मोह में ही पले हो सदा।
ज्ञान वृक्ष छांव में अब पलते चलो जी।।
राग की बरात देख बहको न कभी भी।
दुष्ट मोहिनी से अब टलते चलो जी।।
कर्म पर्वतों को दुखमयी जान कर
शुद्ध भाव धार इन्हें दलते चलो जी।।
राग द्वेष मोह बार बार आएंगे।
दोनों हाथ द्वारा इन्हें मलते चलो जी।।

ॐ

पूजन क्रमांक ७

पंचम अधिकार

श्री संज्ञा प्ररुपणा पूजन

इह जाहि बाहयावि य, जीवा पावंति दारुणं दुक्खं।
सेवंतावि य उभये, ताओ चत्तारि सण्णाओ ॥

स्थापना

ॐ ह्री त्रसवधरहितजीवराजहसाय नम

अमरस्वरूपोऽहं ।

सोरठा

यह संज्ञा अधिकार पंचम गोम्मटसार का ।
मेरा शुद्ध स्वभाव एकमात्र परिपूर्ण है ॥

रोला

एक मात्र परिपूर्ण शुद्ध भावों का स्वामी ।
गुण अनंत पति शक्ति अनंतों मुझमें नामी ॥
चारों संज्ञा के कुचक्र में बहु दुख पाए ।
बाछाओ मे पडकर कभी नहीं सुख पाए ॥
भय मैथुन् आहार परिग्रह संज्ञा दुखमय ।
परभावों की संज्ञा बांछा रंच न सुखमय ॥

ॐ ह्रीं सज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो सन्निधिकरणं भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं संज्वलनकषायरहितजीवराजहंसाय नम. ।

रतिरहितोऽहं ।

अष्टक

छन्द गीतिका

ध्यान का लक्ष्य सदा एकाग्र चिन्ता का निरोध ।
स्वभावों की ओर देखो विभावों का कर विरोध ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वाँछा दुख मूल है ।
यही संज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

भाव होंगे विभावी तो फिर कहीं शिव सुख नहीं ।
मिलेगा शिव सुख स्वभावी तो कभी भव दुख नहीं ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वाँछा दुख मूल है ।
यही संज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

राग के कण भी न होंगे मोह का अणु भी नहीं ।
कषायों की बात छोड़ो विषय भी दिखते नहीं ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वाँछा दुख मूल है ।
यही संज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

मुक्ति युवराज्ञी मुझे वरने सुनिश्चित आएगी ।
डालकर वरमाल मुझको संग में ले जाएगी ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वाँछा दुख मूल है ।
यही संज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

सिद्धपुर साम्राज्य का शासक बनूंगा मैं स्वयं ।
मुक्ति सुख संपूर्ण होगा सफल होगा भाव श्रम ॥

श्री संज्ञा [illegible] पूजनं

आहार मैथुन भय परिग्रह वाँछा दुख मूल है ।
यही संज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्री संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्य नि. ।

लोकान्त मेरा धाम है इस लोक से सम्बध क्या ।
राग द्वेष अभाव है तो कर्म का भी बंध क्या ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वॉछा दुख मूल है ।
यही संज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीप नि ।

कषायों की दौड अब तो हो गई स्वयमेव बद ।
पद मिला निर्द्वंद तो ससार का है बंद द्वंद ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वॉछा दुख मूल है ।
यही सज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्ट कर्म विनाशनाय धूप नि ।

मिल गया आनद का सागर अतीन्द्रिय सुखमयी ।
हुआ क्षय ससार पूरा मिट गया भय दुखमयी ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वॉछा दुख मूल है ।
यही सज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं सज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

ज्ञान की आराधना से पद अनर्घ्य सहज मिला ।
चिरपिपासी सीप में निज ज्ञान का मोती झिला ॥
आहार मैथुन भय परिग्रह वॉछा दुख मूल है ।
यही सज्ञा महा दुखमय ज्ञान के प्रतिकूल है ॥

ॐ ह्रीं संज्ञा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं [illegible]प्रमादरहितजीवराज[illegible]साय नम

निरुपम[illegible]स्वरूपोऽहं ।

महार्घ्य

छंद [illegible]

नशा जो मोह का उतरा तो ज्ञान धन पाया ।
शुद्ध सम्यक्त्व मेरे पास में चला आया ॥
बीती अविरति की घड़ी भाव लिंग देख लिया ।
शुद्ध सम्यक्त्वचरण को बड़ा दुलार आया ॥
अब कषायों के क्षय की आगई पावन बिरिया ।
अब यथाख्यात मुझे परखने देखो आया ॥
मैं भी सर्वज्ञ हुआ पूर्णतः केवल ज्ञानी ।
मात्र अन्तमुहूर्त में ही सिद्ध पद पाया ॥
चारों संज्ञा अनादि से जो मेरे संग में हैं ।
संज्ञाओं से मैं रहित हूँ ये ज्ञान अब आया ॥
स्व पर विवेक जगा आज मेरे अंतर में ।
भावना शुद्ध मिली त्वरित अपना घर पाया ॥

ॐ ह्रीं विकथादिरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

विरागस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद रोला

भय मैथुन आहार परिग्रह चारों संज्ञा ।
सभी जीव संसारी को ये चारों संज्ञा ॥
संज्ञाओं से विरहित प्राणी सिद्ध जानिये ।
जीव तत्त्व तो सदा सर्वदा शुद्ध मानिये ॥
उदर पूर्ति की वांछा ही आहार जु संज्ञा ।
भय से बचने की आशा ही है भय संज्ञा ॥

संज्ञा प्ररूपणा पूजन

काम वासना की वाँछा है मैथुन संज्ञा ।
बाह्य परिग्रह वाँछा ही बु परिग्रह संज्ञा ॥
संज्ञा पहिले गुणस्थान से लेकर षष्टम तक है ।
आगे सत्ता में है पर कुछ कार्य नहीं है ॥
तू संज्ञा से रहित सर्वदा सिद्धों के सम ।
सिद्ध स्वपद पा सकता है तू बिना परिश्रम ॥

छंद गीत

राग द्वेष रोग नहीं मोह नहीं क्षोभ नहीं ।
क्रोध नहीं मान नहीं माया ना लोभ कहीं ॥
अनंतानुबंधि नहीं अप्रत्याख्यान भी नहीं ।
प्रत्याख्यानावरण न दोष संज्ज्वल कही ॥
इन सब से निर्दोष तत्त्व है निजात्मा ।
द्रव्य कर्म भाव कर्म तथा नो कर्म नहीं ॥
पुण्य नहीं पाप नहीं आस्रव का भाव नहीं ।
संवर निर्जरा नहीं बंधन नहीं मोक्ष नहीं ॥
रूप नहीं गंध नहीं रस स्पर्श नहीं ।
शब्द नहीं वचन नहीं मन और देह नहीं ॥
पर भाव रहित हूं कोई विभाव नहीं ।
दृष्टा हूँ ज्ञाता हूं कोई अज्ञान नहीं ॥
ध्रुव स्वतत्र शुद्ध बुद्ध चेतन अविनाशी हूं ।
स्वयं सिद्ध शुद्ध हूं अप्रसिद्ध मैं नहीं ॥
अपना ही अवलंबन आज नाथ मिल गया ।
बंद जो कमल अनादि से था आज खिल गया ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे संज्ञा प्ररूपणा पचम अधिकारे निरपेक्ष स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं प्रमादालापरहितजीवराजर्हंसाय नमः ।

सहजनिर्विकल्परूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीश झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

बैठे बैठे ही किए हैं मैंने पाप अनेक।
आज तक किया नहीं पुण्य कभी एक॥
कौनसी मिलेगी मुझे गति बतलाओ।
कौन सा नरक या निगोद ये बताओ॥
गया हूं निगोद में स्वभाव भूलके।
जुड़ा नहीं आज तक निज कूल से॥
अजीव देह से ही सदा नेह किया है।
अपना स्वरूप दृष्टि में न लिया है॥
शुद्धभाव कभी नहीं जाग्रत हुआ।
भेद ज्ञान कभी नहीं पल को हुआ॥
शुद्ध सम्यक्त्व की प्रभा नहीं मिली।
अंतर में ज्ञान कली नेक न खिली॥
मेरा भिनसार कब होगा ये बताओ।
मोक्ष सुख प्राप्त होगा कब ये बताओ॥

***

ॐ

पूजन क्रमांक ८

षष्टम अधिकार

श्री गति मार्गणा प्ररुपणा पूजन

धम्मगुणमग्गणाहयमोहारिबलं जिणं णमंसित्ता ।
मग्गणमहाहियारं, विविहहियारं भणिस्सामो ॥१४०॥

स्थापना

ॐ ह्री प्रमादविशेषसंख्योत्पत्तिरहितजीवराजहंसाय नम ।
निर्भङ्गस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गति मार्गणा विचार कर करूं आत्म कल्याण ।
चारों गति से रहित हूँ मै हूं शुद्ध महान ॥

रोला

मैं हूं शुद्ध महान नही मुझमें अशुद्धता ।
सोया था मैं आज जगी मेरी प्रबुद्धता ॥
अब न कभी प्रभु चहुंगति के चक्कर मे आऊँ ।
सिद्ध स्वगति का पावन वैभव हे प्रभु पाऊँ ॥
मै आनद समुद्र ज्ञान का वैभवशाली ।
मेरी महिमा तीन लोक में सदा निराली ॥
गोम्मटसार महान ग्रंथ को नमन करूँ मैं ।
मिथ्यात्वादिक राग द्वेष सब वमन करूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं गति मार्गणा रूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापन ।
ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं प्रस्तारक्रमरहितजीवराजहंसाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

[illegible] ।

अष्टक

छंद गीतिका

असंयम की पवन से देवत्व दूषित है सदा ।
मनुजत्व संयम की पवन से हुआ है भूषित सदा ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

मनुज के चरणाम्बुज द्वय पूजता देवत्व है ।
इसलिए संसार में सर्वोच्च यह मनुजत्व है ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा रूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदन नि ।

मनुज भव मनुजत्व से भूषित नहीं तो व्यर्थ है ।
चेतना से शून्य हो तो देह का क्या अर्थ है ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

साधु में साधुत्व हो तो साधु वह नित वंदनीय ।
शून्य हो साधुत्व से तो मुनि नहीं अभिनंदनीय ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

भाव मुनि की बात छोड़ो कौन जाने कौन है ।
द्रव्य मुनि को जान लो तुम आचरण से कौन है ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध सयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

मूल गुण वसु बीस हों तो है सदा ही पूजनीय ।
मूलगुण पूरे न हो तो मुनि नहीं है वंदनीय ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध सयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्रीं गति मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीप नि ।

अभ्युदय सिद्धत्व का मनुजत्व के कारण हुआ ।
मनुज ही मनुजत्व पा सब का तरण तारण हुआ ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्री गति मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

आत्मत्व समत्व से शोभायमान बने सदा ।
अगर है असमत्व तो फिर आत्मत्व नहीं कदा ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्री गति मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

मनुज में मनुजत्व का दर्शन करो वंदन करो ।
आत्मत्व स्वशक्ति द्वारा कर्म के बंधन हरो ॥
जानकर गति मार्गणा मैं चार गतियों से बचूँ ।
शुद्ध संयम प्रभा द्वारा स्वगति पंचम ही रचूँ ॥

ॐ ह्री गति मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं प्रस्तार द्वितीय प्रकाररहितजीवराजहंसाय नमः।

अकषायज्ञानस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद दिग्पाल

समकित बिना न कोई भव पार हुआ है ।
मिथ्यात्व से पापों का अंबार हुआ है ॥
जब जब भी भेदज्ञान का अवसर मिला हमें ।
तब तब स्वपर विवेक का विचार हुआ है ॥
श्रद्धा से दूर रहकर हम ज्ञान क्या करते ।
अज्ञान का जीवन में भंडार हुआ है ॥
श्रुतज्ञान के आधार से हो भाव ज्ञान यदि ।
तो समझो सफल जीवन इस बार हुआ है ॥
गतियों के नाश करने का उपाय मात्र ज्ञान ।
गतियों का ज्ञान से ही संहार हुआ है ॥
गति मार्गणा से जिसका संबंध नहीं है ।
उसका ही ज्ञान भाव से उद्धार हुआ है ॥

ॐ ह्रीं अक्षयपरिवर्तनरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षसंचाररहितोऽहं ।

जयमाला

छंद रोला

गमन गम्यते करना ही तो गति कहलाती ।
यह गति ही तो सारे जग में भ्रमण कराती ॥
नारक गति अति दुखदायी पूरी ही जानो ।
मनुष्य गति भी कभी नहीं सुखदायी मानो ॥

गति मार्गणा प्ररूपणा पूजन

त्रियंच गति मे बध बंधन के कष्ट घनेरे ।
देवगति में क्रीडा रत हैं जीव अनेरे ॥
भव से सदा विलक्षण सिद्ध स्वगति सुखदायी।
शेष सभी चारो गतियां है भव दुखदायी ॥
गति इन्द्रिय आदिक चौदह मार्गणा पिछानो ।
इनमें आठ मार्गणाएँ सान्तर हैं मानो ॥
चारों गतियो के जीवों की सख्या जानो ।
जिनआगम से जीव राशि सारी पहचानो ॥
गति आगति से तेरा कुछ सबंध नही है ।
इसीलिए तो तेरे भीतर बध नही है ॥

छंद सरसी

सौ सौ बार सतत खायी है शपथ तुम्हारी नाथ ।
फिर भी विषय कषायो का प्रभु छोडा कभी न साथ॥
मद्य त्याग भी किया सदा को कभी न पी फिर मद्य।
किन्तु नाथ म महामोह की मद्य पी रहा अद्य ॥
केसे छुटकारा पाऊ मै भव विष से हे नाथ ।
दुनिया भर के पत्थर पूजे सदा झुकाया माथ ॥
किन्तु न पाया आत्म ज्ञान कुछ रहा दीन का दीन ।
ग्यारह अंग पढे फिर भी हूँ अब तक ज्ञान विहीन ॥
ऐसी कोई युक्ति वता दो रहू आपके साथ ।
घोर मोह मद त्याग करू मैं सदा सदा को नाथ ॥
अरबो कुमरण पाये मैने फिर भी रहा अजान ।
जिया मूढ अज्ञानी बनकर किया न आतम ज्ञान ॥

मैं भव दुखियां हूं अनादि से मैं हूं पूर्ण अनाथ ।

ऐसी कृपा करो प्रभु मुझ पर तुम सम बनूं सनाथ ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाडे गति मार्गणा प्ररूपणा नामे षष्टमाधिकारे निर्गति स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं द्वितीय प्रस्तारक्षपरिवर्तनरहितजीवराजहंसाय नमः ।

निरिन्द्रियस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊ ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अव न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

है मोन व्रत हमारा आवाज हम न देंगे।
कितनी भी मुसीबत हो यह पाप हम न लेंगे।।
निज ध्यान लीन रहकर अपने को ही जानेंगे।
जड़द्रव्य अचेतन का भी हम नाम नहीं लेंगे।।
पुण्यावती के चक्कर में हम नहीं फंसेंगे।
हम शुद्ध भाव द्वारा शिव सुख स्वराज्य लेंगे।।

✻✻

ॐ

पूजन क्रमांक ९

सप्तम अधिकार

श्री इन्द्रिय मार्गणा प्ररुपणा पूजन

अहमिंदा जह देवा, अविसेसं अहमहंति मण्णंता ।
ईसंति एक्कमेक्कं, इंदा इव इंदिये जाण ॥

अष्टक

ॐ ह्री नष्टाक्षानयनरहितजीवराजहंसाय नम· ।

अतीन्द्रियस्वरूपोऽहं ।

दोहा

जानूँ इन्द्रिय मार्गणा यह सप्तम अधिकार ।
मै इन्द्रिय से रहित हूँ परम शुद्ध अविकार ॥

रोला

परम शुद्ध अविकार स्वरूप जीव का जानो ।
जीव सदाइन्द्रियातीत है सम्यक् मानो ॥
अपनी भूल स्वय ही जग में यह भरमाता ।
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक के तन पाता ॥
बना इन्द्रियाधीन अनिन्द्रिय होकर भी यह ।
गति गति भ्रमता परम अतीन्द्रिय होकर भी यह॥
आज सुअवसर मिला भाग्य से जाग गया है ।
महामोह मिथ्यात्व निमिष में भाग गया है ।

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापनं ।
ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं आलापयुक्तसंख्यारहितजीवराजहंसाय नमः ।

निरालापस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद- मानव

सौभाग्य जगा है मेरा पंचेन्द्रिय नर तन पाया।
जिनकुल जिन धर्म मिला है कंचन सम अवसर आया॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यकदर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

निश्चित चेतूगा अब तो अब चूक नहीं सकता हूँ।
समकित वेभव पाना है यह भूल नहीं सकता हूँ॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

दो चार भवों तक ही मैं यह भव पीड़ा पाऊंगा ।
स्वर्गों की साता तजकर अनुपम स्वसौख्य लाऊंगा ।
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षत नि. ।

तेरह सौ साठ सागरों तक स्वर्गों के सुख पाये ।
छह सौ चालीस सागरों तक नरको के दुख पाये ॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्प नि ।

साधिक में बे त्रय चउ अरु पचेन्द्रिय त्रस तन पाया।
भटका दो सहस्र सागर फिर कष्ट निगोद उठाया॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

यो पंच परावर्त्तन कर दुख पाये सतत घनेरे ।
मैं चेत नहीं पाता हूँ मिथ्याभ्रम मुझको घेरे ॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

अब पुन भव्य वेला के दर्शन मैंने पाए है ।
ऐसा लगता है मेरे अब अच्छे दिन आए है ॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूप नि ।

निज परिणति नाच रही है अनुभव रसभर लायी है।
यह महा मोक्ष फल पावन मुझको देने आयी है ॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

पदवी अनर्घ्य के दर्शन मेरे अंतर मे प्रगटे ।
शिवपथ के सब विष कंटक पुरुषार्थ शक्ति से विघटे॥
इन्द्रियातीत होने का यह उत्तम समय मिला है।
सम्यक्दर्शन की महिमा सुन उरका कमल खिला है॥

ॐ ह्रीं इन्द्रियमार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं नष्टोद्दिष्टगूढयन्त्ररहितजीवराजहंसाय नमः ।

नि:स्नेहस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-विधाता

विवादों से घिरा हूँ प्रभु यद्पि मैं निर्विवादी हूँ ।
नहीं एकान्त है उर में सदा ही स्याद्वादी हूँ ॥
स्वयं निज शक्ति के द्वारा स्वयं को ही निरखता हूँ ।
नहीं है राग द्वेषादिक हृदय से साम्यवादी हूँ ॥
कभी अज्ञानवश मैंने कमाए पाप पुण्यादिक।
हुआहूँ आज जाग्रत मैं नहीं अब प्रभुप्रमादी हूँ ॥
अतीन्द्रिय ज्ञान का अधिपति अतीन्द्रिय सौख्य का स्वामी ।
निजानंदी स्व अनुभव के महा रसका ही स्वादी हूँ॥

ॐ ह्रीं द्वितीयप्रस्तारनष्टोद्दिष्टगूढयन्त्ररहित जीवराजंहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परवशरहितोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

इन्द्रिय अपने विषयों में पूरी स्वतंत्र हैं ।
अहमिन्द्रों सम रहता इनका विषय तंत्र है ॥
अपने अपने विषय ग्रहण में रत रहती है ।
नही अपेक्षा दूजी की इनको होती है ॥
शुद्धआत्मा इन्द्रिय से रहित सदा ही मानो ।
श्री सिद्ध भगवान अतीन्द्रिय ही हैं मानो ॥
मेरा आत्म स्वरूप अनिन्द्रिय महिमाशाली ।
ज्ञान अतीन्द्रिय का स्वामी मैं हूँ गुणशाली ॥
एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय जीवों की संख्या॥

जिन आगम से जान सकोगे पूरी संख्या ।
परम अतीन्द्रिय सुख पाने का यत्न करूँ मैं ॥
पॉचो इन्द्रिय के विषयों से विरत रहूँ मै।
गोम्मटसार महान ग्रथ का मनन करूँ मै ।
मिथ्यात्वादिक चारों प्रत्यय वमन करूँ मै ॥

छंद-विजात

अनंत वैभव भरा है उर में निजात्मा है अनत गुणमय।
अनत बल है अनंत दर्शन त्रिकाली ध्रुव है अनत सुखमय॥
इसी के बल से किया है कर्मो का नाश जिनने वे मोक्ष पहुँचे।
जिन्होने इसका लिया न आश्रय बने हुए है अनत दुखमय॥
जो भूल कर भी निजात्मा को न देख पाते है एक पल भी ।
वे ही बनाते है रास्ते को जा है निगोदादि का ही दुखमय॥
जो आत्मा के ही संग रहता जो आत्मा से ही बात करता।
वही तो अपनी स्वशक्ति द्वारा स्वय ही होता है सिद्ध शिवमय॥

ॐ ह्री नोकषायकर्मरहितजीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

अनंतशक्तिस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवीस पाऊ ॥
नेमिचद सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊ अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद .

ॐ

पूजन क्रमांक १०
अष्टम अधिकार

श्री काय मार्गणा प्ररूपणा पूजन

जाई अविणाभावी, तसथावरउदयजो हवे कोओ ।
सो जिणमदह्मि भणिओ, पुढवीकायादिछब्भेओ ॥१८१॥

स्थापना

ॐ ह्रीं व्रतशीलावलीमण्डितविकल्परहितजीवराजहंसाय नेम
चितिशक्तिस्वरूपोऽहं ।

दोहा

कायमार्गणा जानकर उरमे करो विचार ।
कायरहित निज जीव है काया है दुखकार ॥

रोला

काया है दुखकार इसे ही क्षय करना है ।
काय मार्गणा क्षयी अकायिक पद वरना है ॥
जब तक है संसार भाव यह काय जानिये ।
द्रव्यदृष्टि से जीव अकाय सदैव मानिये ॥

दोहा

काय मार्गणा नाम का यह अष्टम अधिकार ।
षटकायक को जानकर जीवदय उरधार ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्ननन।
ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापन ।
ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् ।

श्री काय मार्गणा प्ररूपणा पूजन

ॐ ह्रीं सातिशयाप्रमत्तसंयतविकल्परहितजीवराजहंसाय नमः

संक्रमणरहितोऽहं ।

अष्टक

छंद-भुजंगी

परम ज्ञान जल की सुरभि भव अभावी ।
है जन्मादि रोगों की हर्त्ता प्रभावी ॥
छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

सुगंधित स्वचंदन स्वभावी मनोहर।
भवाताप क्षयकर है आत्मत्व सुन्दर ॥
छहों काय के मैने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चदन नि ।

सहज भाव अक्षत की महिमा निराली ।
परम श्रेष्ठ अक्षय स्वपद सौख्यशाली ॥
छहो काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षत नि ।

महाशील के पुष्प हैं शान्तिदाता ।
नहीं काम पीडा से कोई भी नाता
छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामवाण विध्वसनाय पुष्प नि ।

सुचरु शुद्ध अनुभवमयी प्रभु चढाऊँ ।
क्षुधा वेदनी सर्वदा को मिटाऊँ ॥
छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं- नि. ।

महा मोह भ्रम के तिमिर को विनाशूं ।
स्वयं ज्ञानदीपक से निजको प्रकाशूं ॥
छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि. ।

अभी धूप दुर्ध्यान को भ्रष्ट कर दूँ ।
सभी कर्म आठों को मैं नष्ट कर दूँ ॥
छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि ।

महामोक्ष फल के सुतरु मेरे भीतर ।
इसीको करूँ पल्लवित भव क्षयंकर ॥
छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

नहीं अर्घ्य संसार वर्धक चढाऊँ ।
चरण निज अनर्घ्य स्वपद पर बढाऊँ ॥
हृदय में स्वस्वाध्याय की महिमा लाऊँ ।
अमित ज्ञान दर्शन मयी सौख्य पाऊँ॥

श्री काय मार्गणा प्ररूपणा पूजन

छहों काय के मैंने जाने हैं लक्षण ।
मगर मैं तो हूँ भिन्न इनसे विलक्षण ॥

ॐ ह्रीं कायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य नि ।

ॐ ह्रीं अध प्रवृत्तकरणरहितजीवराजहसाय नम ।

परममंगलस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-मानव

सपने में मैंने देखा समकित का रूप सुहाना ।
जाना मिथ्यात्व घृणामय जो देता है दुख नाना ॥
सम्यक्त्व सरोवर पाया अब मुझे नव्हन करना है।
ज्ञायक की निर्मलता ले परिणति अपनी वरना है ॥
ध्यानाग्नि प्रज्ज्वलित करके कर्मों का काष्ठ जलाऊँ।
निर्जराशक्ति के द्वारा वसु कर्मों को हरना है ॥
आनंद मग्न हो मनवा सम्यक्त्व गीत गाता है ।
ज्ञानाब्धिस्वानुभव रस से निज अतरग भरना है॥
आनंद अतीन्द्रिय वेला पायी है सदा सुहागिन ।
त्रैकालिक ध्रुवधामी की मुझको सेवा करना है ॥
यह प्रात समय का सपना सच्चा होगा निश्चित है।
मैं सिद्ध स्वपद पाऊँगा शंका न हृदय किंचित है॥

ॐ ह्रीं अध. प्रवृत्तकरणकालप्रमाणविकल्परहितजीवराजहसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

परमपवित्रस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

त्रस थावर पर्याय जीव की काय कहाती ।
इसीलिए उपचार आत्मा काय कहाती॥
घात रहित जो होते वे हैं घात शरीरी ।
घात रहित जो होते वे ना घात शरीरी ॥
सूक्ष्म और निगोद दोनों प्रकार हैं प्राणी ।
साधारण प्रत्येक अनादि अनतों प्राणी ॥
सूक्ष्म निगोद और बादर निगोद भी होते ।
थावर से त्रस तक ये पंचेन्द्रिय भी होते ॥
इनके भेद प्रभेद अनेकों है यह मानो ।
इनकी संख्या गोम्मटसार ग्रंथ से जानो ॥
सर्वाधिक तो जीव वनस्पतिकायक होते।
केवलसिद्ध जीव ही सर्व अकायक होते ॥
कर्म तथा नौ कर्मों के परमाणु मिलें जब ।
काय जीव की बन जाती कर्मानुसार तब ॥
तू काया से रहित सर्वथा श्रेष्ठ अकायक ।
तू ही तो है ज्ञान शरीरी त्रिभुवन नायक ॥

छंद

मोह मिथ्यात्व के बहकावे में जो आते हैं ।
वे ही संसार के सागर में बहे जाते है ॥
कभी संयम की नाव पास मे आ जाए तो ।
बिना श्रद्धान के उस पे नही चढ पाते हैं ॥
आस्रव भाव की भवरो मे ये डूबे रहते ।
शुद्ध संवर का हाथ ये न थाम पाते है ॥

निर्जरा केसे हो बताइए इन लोगों की ।
निर्जरा ये अकाम करके ही मर जाते है ॥
मुक्ति के चद्रमा की इनसे योजनो दूरी ।
मुक्ति की बात भी ये सुन न कभी पाते है ॥

ॐ [illegible] गोम्मटसार जीवकाण्ड कायमार्ग प्ररूपणानामे अष्टम अधिकारे अकाय स्वरूपाय [illegible] पूर्णार्घ्य नि ।

ॐ ह्रीं अपूर्वकरणगुणस्थानरहितजीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अपूर्वस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊ ॥
नेमिचद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊ अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद

---

*चलो राजनिया अनुभव रसकी गागर हम भर ले ।
शुद्ध ज्ञान दर्शन का उर में सागर हम भर लें ॥
रत्नत्रय की महिमा पाकर शिवपथ आदर लें ।
निज स्वभाव साधन के द्वारा भव सागर तर ले ॥*

पूजन क्रमांक ११
नवम अधिकार

श्री योग मार्गणा प्ररुपणा पूजन

पुग्गलविवाइदेहोदयेण मणवयणकायजुत्तस्स ।
जीवस्स जा हु सत्ती, कम्मागमकारणं जोगो ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं विशुद्धिपरिणामविकल्परहितजीवराजहंसाय नमः
सहजानंदस्वरूपोऽहं ।

दोहा

योग मार्गणा जानकर जीतूँ तीनो योग ।
मनवचतन के योग से रहित सदैव अयोग ॥

छंद-रोला

रहित योग से जीव अयोग स्वभाव जानिये ।
एकमात्र यह योग आस्रव मूल मानिये ॥
बिना योग के कोई आस्रव कभी न होता ।
आस्रव के बिन कोई बंधक कभी न होता ॥
अगर बध से बचना है तो आस्रव जीतो ।
आस्रव से बचना है तो योगों से रीतो ॥

दोहा

योग मार्गणा नाम का यह नवमा अधिकार ।
तीनों योग विनाश कर हो जाऊँ अविकार ॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वनन।
ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापन ।
ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

श्री योग मार्गणा प्ररुपणा पूजन

ॐ ह्रीं भिन्नभिन्नपरिणामविकल्परहितजीवराजहंसाय नम.
निर्भेदबोधस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद-ताटंक

लोकाचार निभाने को की परभावों में ही क्रीडा ।
मायाचार पल्लवित करके पायी मर्मान्तक पीडा ॥
जन्मादिक त्रययोग नाशकर अपुनर्भवी स्वपद पाऊँ ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ ॥

ॐ ह्री योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

पारस्पर्य भावना से ससर्ग किया व्यवहार जनित ।
निश्चय की ससिद्धि भूलकर हुआ न विषयो से विरहित॥
भवाताप ज्वर नाश करूँ मै शीतल शान्त स्वपद पाऊँ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ ॥

ॐ ह्री योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

श्रुत का तो मर्मज्ञ बना लोकापवाद से भय खाया ।
लाघ चरम सीमा स्वभाव की चारो गति मे भ्रम आया ॥
अक्षय पदवी प्राप्ति करूँ मै भव समुद्र प्रभु तर जाऊँ ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ ॥

ॐ ह्री योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षत नि ।

धर्म अर्थ अरु काम रत्त हो भूला महा मोक्ष पुरुषार्थ ।
निश्चयनय भूतार्थ न जाना अभूतार्थ जाना सत्यार्थ ॥
कामवाण विध्वस करूँ प्रभु महाशील गुण प्रगटाऊँ ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ ॥

ॐ ह्री योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामवाण विध्वंसनाय पुष्प नि ।

भूल गया प्रतिमान ज्ञान का निजभावों का कर प्रतिघात।
दुख की पराकाष्ठा देखी फिर भी निज से हुई न बात॥
क्षुधा रोग विध्वंस करूँ प्रभु तृप्त स्वभाव शीघ्र पाऊँ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि.।

भटक भटक भव वन में मैंने किए सदा ही बहु उत्पात।
इसीलिए भव भव दुखपाया गई न मिथ्या भ्रम की रात॥
ज्ञान दीप का उजियाला ले सम्यक् पथ पर आ जाऊँ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि।

उदय हुआ सौभाग्य सूर्य का तो पाया सम्यक्त्व प्रभात।
जिसके भीतर भरा हुआ है वैभव शाली सौख्य प्रपात॥
ध्यान धूप से कर्म जलाऊँ वसु कर्मों पर जय पाऊँ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूप नि।

ज्ञान चंद्रिका से पाया वरदान ज्ञानमय फलदायी।
तो भव पीड़ा नष्ट हो गई धारापायी सुखदायी॥
महामोक्ष फल पाने का पुरुषार्थ करूँ निज मे आऊँ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ॥

ॐ ह्रीं योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि।

असहनीय मार्णान्तक पीडा यम द्वारा भव भव मिलती।
हंस गामिनी निज परिणति पा मन की कली त्वरित खिलती॥
पदाघात कर्मों के तो अब नहीं दृष्टि गोचर होते।
गुण पर्याय द्रव्य सारे ही मुझे ज्ञान गोचर होते॥

पद अनर्घ्य पाने का अवसर हे प्रभु चूक नहीं जाऊँ ।
योग मार्गणा पूर्ण जानकर नाथ अयोगी हो जाऊँ ॥

ॐ ह्री योगमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्री अनुकृष्टिविधानरहितापूर्वकरणकालविकल्परहितजीवराजहंसाय नम ।

चिद्घनस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-विधाता

योग के चक्र मे पडकर स्वयं को भूल जाते है ।
विभावीभाय का झूला देखकर झूल जाते है ॥
मोह की वारुणी पीकर बने है हम तो मतवाले ।
स्वय की शान्त मुद्रा के सदा प्रतिकूल जाते है ॥
स्वभावी भाव की परिणति हितंकर ही नही जानी ।
विभावी [illegible] परिणति के सदा अनुकूल जाते ह ॥
पुण्य [illegible] के द्वारा [illegible]मे स्वर्गादि सुख मिलता ।
[illegible] क्षणिक [illegible] उसी मे फूल जाते है ॥
शाश्वत [illegible] पाने [illegible] कभी साहस नहीं करते ।
राग द्वेषादि भावो स जगत की धूल खाते है ॥
[illegible] यह योग अत भव के ही जाता है ।
अनेको [illegible] प्रभुओ ने योग के शूलघाते है ॥

ॐ ह्री अपूर्वकरणकालविशेषरहितजीवराजहसाय महार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्ममस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

द्रव्य योग अरुभावयोग ये दो प्रकार हैं ।
मनवच काया योग यही तो त्रय प्रकार हैं ॥
सत्य असत्य उभय अनुभय इन सबको जानो ।
विविधभाँति के पद्रह भेद उन्हें पहचानो ॥
जानो भेद प्रभेद अनेको भली भांति से ।
फिर जाग्रत हो जुड जाओ निज आत्म काति से ॥
औदारिक वैक्रियक अहारक तैजस कार्मण ।
आदि अनेकों भेद योग के बडे विलक्षण ॥
सबकी संख्या गोम्मटसार ग्रथ से जानो ।
शुद्ध आत्मा योग रहित ही है यह मानो ॥
श्री सिद्ध भगवतों को तो योग नहीं है ।
तथा अयोगी गुणस्थान में योग नहीं है ॥
गुण हानि वृद्धि को तुम आगम से जानो ।
श्री सर्वज्ञ कथित वाणी की महिमा मानो ॥

छंद-सरसी

अरिहताणं जपते जपते बीता कितना काल ।
पर मिथ्यात्व नही तज पाया यह है बड़ा कमाल ॥
विन मिथ्यात्व तजे सयम कैसे हो सकता था ।
भेद ज्ञान की भी निधि तूने पायी नही विशाल ॥
तेरी कगाली की चर्चा चहुंगति मध्य प्रसिद्ध ।
सम्यक् दर्शन पा लेता तो होता मालामाल ॥

अब भी समय शेष है पगले अपनी ओर निहार ।
निज स्वभाव का आश्रय लेकर हो जा अभी निहाल॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे योगमार्ग प्ररूपणानामे नवम अधिकारे निर्योग स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्य नि ।

५५ ॐ ह्री निद्राप्रचलारहितजीवराजहंसाय नम ।

स्वाधीनस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रथ को शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊ अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद .

ज्ञान को मात्र श्रद्धान चाहिये ।
श्रद्धान को तत्त्व भान चाहिये ॥
चारित्र को शुद्ध ज्ञान चाहिये ।
मुक्ति मार्ग मे इसी की त्रयी चाहिये ॥
श्रद्धा बिन ज्ञान तो अधूरा है ।
ज्ञान बिन चारित्र धूरा है ॥
कर्म नाश हेतु आत्म ध्यान चाहिये ।
एकता के बिन मुक्ति पथ नही कोई ॥
मुक्ति पाए बिन सुख नही है कोई ।
सुख पाना है तो [illegible] ॥

श्री गोम्मटसार विधान

ॐ

पूजन क्रमांक १२

दशम अधिकार

श्री वेद मार्गणा प्ररूपणा पूजन

पुरिसिच्छिसंढवेदोदयेण पुरिसिच्छिसंढओ भावे ।
णामोदयेण दव्वे, पाएण समा कहिं विसमा ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं अनिवृत्तिकरणगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय नमः

संस्थानरहितोऽहं ।

दोहा

यह दसवां अधिकार है वेद मार्गणा रूप ।
गोम्मटसार महान है जिन आगम अनुरूप ॥
वेद मार्गणा जानिए त्रय वेदों का मूल ।
अपने शुद्ध स्वभाव से वेद सदा प्रतिकूल ॥

छंद-रोला

वेद सदा प्रतिकूल आत्मा से हैं स्वामी ।
मैं तो सदा अवेदी हूं उत्तम गुण धामी ॥
स्त्री पुरुष नपुसंक वेद न मेरे भीतर ।
मैं अवेदगुणधारी हे प्रभु महा गुणेश्वर॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वनन।
ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापनं ।
ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्

ॐ ह्रीं अभेदचित्स्वरूपजीवराजहंसाय नमः

विमलज्ञानस्वरूपोऽहं ।

श्री वेद मार्गणा प्ररूपणा पूजन

अष्टक

छंद-ताटंक

क्रिया कलापाडंबर तजते वे ही ज्ञानोदय पाते ।
समकित निधि जो भूल गए थे उसे खोजकर ले आते॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

भव पीडा पर्वत को क्षण क्षण पूरी तरह गला देते।
निज भविष्य कल्पनातीत उज्ज्वल उसको भ्रम कर लेते ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

पच परावर्त्तन क्षय करके देह यात्रा तज देते ।
ज्ञानेदधि की विमल तरंगों के संग संग ही बह लेते ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षत नि ।

वेद सहित जो प्राणी होते होते कभी अबंध नहीं ।
वेद रहित जो प्राणी होते उनको कोई बंध नहीं ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाम निकलना ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामवाण विध्वसनाय पुष्पं नि ।

वन कर्तव्य निष्ठ आत्मा मे निज अनुभव रस भर लाते।
संवर्धन होता स्वभाव जब ज्ञान पटल निज खुल जाते॥

वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

भव विभीषिका को क्षय करते ज्ञान समुन्नत करते हैं ।
निज प्रतिभा विकास करते हैं अष्ट कर्मरज हरते हैं ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

सत्यवृत्ति की परंपरा वे नितप्रति पालन करते हैं ।
निर्देशानुसार आगम के शिवसुख उरमें भरते हैं ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि ।

विघटनात्मक अनीतिमूलक क्रियाकलाप छोड देते ।
ध्यान यज्ञ में होम राग को शुद्ध विराग जोड लेते ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि. ।

समभावी जीवन जीते हैं गीत आत्मा के गाते ।
विषय भाव से सुदूर जाते साम्य भाव में आ जाते ॥
वेद मार्गणा के कुचक्र से अब तो नाथ निकलना है ।
शुद्ध अवेदी स्वभाव मेरा उसके ही संग चलना है ॥

ॐ ह्रीं वेदमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

५८. ॐ ह्रीं सूक्ष्मसांपरायगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय नमः ।

नीरागस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-गीतिका

मोहरूपी सर्पिणी का विष तुम्हारे अंतरंग ।
विनाभव विष वमन के होगा नहीं क्षय रग रंग ॥
भ्रम तिमिर अज्ञान अरु एकान्त से तुम हो दुखी ।
आज तक तुम हो न पाए एकपल को भी सुखी ॥
अब करो कुछ यत्न ऐसा मोह की दो कमर तोड ।
निज स्वभाव महान से ही शीघ्र लो संबंध जोड़ ॥
बस यही विधि बहुत है भव पार जाने के लिए ।
शाश्वत निज सिद्धपद अविकार पाने के लिए ॥
वेद तीनों महादुखदायी इन्हें तुम जान लो ।
मार्गणा इस वेद से तुम रहित हो सच मान लो ॥

५९, ॐ ह्रीं सूक्ष्मकृष्टिरहितजीवराजहंसाय महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मशक्तिरहितोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

स्त्री पुरुष नपुसक तीन वेद बतलाए ।
मैथुन सज्ञा की रुचि से ये युत बतलाए॥
ब्रह्मचर्य का भाव वेद को जय करता है ।
स्वर्गों में तो वेद भाव पूरा रहता है ॥
चारो गतियों में होता है वेद जीवको ।
दुष्टवेद ही, दुख देता है सदा जीवको ॥
चारो गतियो में वेदी हैं यह तुम मानो ।
इनकी संख्या गोम्मटसार ग्रंथ से जानो ॥
शुद्धआत्मा का स्वभाव तो वेद रहित है ।
केवल संसारी प्राणी ही वेद सहित है ॥

चरित मोह की उदयावलि में यह होता है ।
चरित् मोह जय करने वाला शिव होता है ॥
और विशेष कथन इनका आगम से जानो ।
वेद रहित हैं सिद्ध प्रभो त्रिकाल यह मानो ॥
तू भी वेदों से विरहित है सदा अवेदी ।
तुझमें शक्ति अपार अनंत भरी भवछेदी ॥

वीरछंद

सुनियोजित षडयंत्र मोह का मैंने पकड़ा आधी रात ।
तत्क्षण उसको नष्ट कर दिया पाया मैंने ज्ञान प्रभात ॥
घोर बवंडर मिथ्याभ्रम का भी उड़ गया उसी के संग।
विघटे बादल अज्ञानों के था अनुभव रस की बरसात ॥
चारों गतियों के सर्पों को मैंने कुचल दिया तत्काल ।
सभी कषायें क्षीण हो गई पाया निर्मल शुद्ध प्रपात ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे वेदमार्गणा प्ररूपणानामे दशम अधिकारे निर्वेद स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं अणुलोभरहितजीवराजहंसाय नमः

निरवेदचित्स्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

दोहा

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

[illegible]

ॐ

पूजन क्रमांक १३

एकादशम अधिकार

श्री कषाय मार्गणा प्ररुपणा पूजन

सुहदुक्खसुबहुसस्सं, कम्मक्खेत्तं कसेदि जीवस्स ।
संसारदूरमेरं, तेण कसाओ त्ति णं बेंति ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं कर्मकलंकरहितजीवराजहंसाय नम.
निष्कलंकस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का ग्यारहवाँ अधिकार ।
यह कषाय की मार्गणा जानो भली प्रकार ॥

छंद-रोल

जानो भली प्रकार कषाय महादुखदायी ।
अकषायी परिणाम आत्मा का सुखदायी ॥
भव्य अपेक्षा यह अनादि है और सान्त है ।
किन्तु जीव इसके चक्कर में हुआ भ्रान्त है ॥
बिन कषाय के राग द्वेष होता न कभी भी ।
क्षय कषाय बिन पूर्ण सौख्य होता न कभी भी ॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपकं श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननं।
ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्

ॐ ह्रीं क्षीणकषायगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय नमः
निरंजनस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

वीरछंद

देव शास्त्र गुरु की श्रद्धा अरु दया दान के भाव विकल्प।
इन सबसे तो जीव भिन्न है जल्प विजल्प रहित अविकल्प।
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

दया दान व्रत भक्ति आदि सब ही कषाय से हैं उत्पन्न।
ज्ञायक पर यदि दृष्टि प्रभु रहे तो कषाय होती प्रच्छन्न॥
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

पंचमहाव्रत के परिणाम जु मंद कषाय भाव लो जान ।
भीतर में आनंद कंद ध्रुव ज्ञायक उपादेय भगवान ॥
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

विष समान शुभ भाव आत्म कल्याण नहीं होने देते ।
अमृत सरोवर के समुद्र को प्राप्त नहीं होने देते ॥
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि ।

विद्या रथ आरूढ़ हुए बिन गजरथ भी है रागारूढ़ ।
पाप भाव आस्रव के तजदे तत्क्षण हो जा ज्ञानारूढ़ ॥

हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

एकदेश ग्यारह प्रतिमा तो पंचम गुणस्थान वर्त्ती ।
हैं चारित्र मोह का तम ही यदि है कभी चक्रवर्त्ती ॥
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

पंच महाव्रत पंच समिति त्रयगुप्ति देह का भूषण है ।
शुद्धआत्मा तो ज्ञायक है गुण अनंत आभूषण है ॥
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि ।

बाह्य मुनिदशा है शरीर की आत्मा को तो दूषण है ।
भाव लिंग है यदि अंतर में तो चेतन का भूषण है ॥
हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्यपद प्राप्ताय फलं नि. ।

जाननहार जानने में आता है तब होता कल्याण ।
जाननहार न जाना तो फिर होता कर्मों का बंधान ॥
शुद्ध आत्मा निर्विकल्प है उदासीन है ज्ञानानंद ।
नित्यनिरजन ध्रौव्य त्रिकाली सहजानंदी नित्यानंद॥
आत्म भावना सम्यक्दर्शन आत्म भावना सम्यक्ज्ञान ।
आत्म भावना सम्यक् चारित आत्म भावना केवल ज्ञान॥

हैं कषाय परिणाम जीव के तो भव चक्र न होता बंद ।
निष्कषाय परिणाम अगर हैं तो फिर नहीं कर्म का बंध॥

ॐ ह्रीं कषायमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं सयोगकेवलिगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय नमः ।

ध्यानरहितस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-ताटंक

काषायिक परिणाम वस्तुतः भव का भ्रमण बढ़ाते हैं ।
कर्म आवरण इस चेतन के ऊपर सदा उढ़ाते हैं ॥
चेतन आ सबके परिणामों से ही बंधन करता है ।
आस्रव का परिणाम न हो तो रंच नहीं बंधन करता है॥
कर्मों का कुछ दोष नहीं है चेतन का है सारा दोष ।
फिर भी अपने को कहता है मैं तो हूँ पूरा निर्दोष ॥
अग्नि लौह की संगति करके घन की चोटें खाती है ।
संगति नहीं लौह की हो तो चोट न घन की खाती है॥
इसी भांति यह चेतन भी कर्मों की संगति करता है ।
अत. आस्रव भावों द्वारा कर्म बंध यह करता है ॥
आस्रव भाव न उरमें हो तो कर्म बंध कैसे होगा ।
संवर का परिणाम हृदय हो तो आस्रव कैसे होगा ॥
रहे पूर्व के बंध एक दिन वे भी र.व झर जाएंगे ।
चेतन के परिणाम शुद्ध ही सिद्धपुरी ले जाएंगे ॥

ॐ ह्रीं अनाद्यनंतस्वरूपजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

स्वतंत्रबोधस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

शुद्ध आत्मा में कषाय का काम नहीं है ।
सिद्धों में भी इसका कोई नाम नहीं है ॥
यह कषाय अत्यंत महा दुखदायी जानो ।
क्रोध मान माया लोभादिक चऊ पहचानो ॥
ये चारों ही अनंतानुबंधी भी होते।
अप्रत्याख्यानवरणी भी ये चारों होते ॥
प्रत्याख्यानावरणी भी ये चारों होते ।
तथा संज्ज्वलन भी तो ये चारों होते ॥
इस प्रकार ये सोलह भेद कहे तुम जानो ।
नौ कषाय के भेद मात्र नौ हैं पहचानो ॥
अनतानुबधी होती है शिला भेद सम ।
अप्रत्याख्याना होती है जु पृथ्वी भेद सम ॥
प्रत्याख्यानावरणी हो तो रज रेखा सम ।
तथा सज्ज्वलन तो होती है जल रेखा सम ॥
शैल अस्थि काष्ठ नीरवत ये कहलातीं ।
कैसी भी हों पर ये सब दुख देने ही आतीं ॥
क्रोधकषाय नरकगति में ज्यादा होती है ।
मान कषाय मनुजगति में ज्यादा होती है ॥
माया तो तिर्यंचों में ज्यादा होती है ।
लोभ देवगति में ही सर्वाधिक होती है ॥
सर्वकषायी जीवों की संख्या तुम जानो ।
प्रथक प्रथक तुम गोम्मटसार ग्रंथ से जानो ॥
इन सबके दृष्टान्त बहुत है वे भी जानो ।

सर्व कषाय रहित होने का उद्यम ठानो ॥
ग्यारहवें उपशान्त मोह में ये दब जातीं ।
बारहवें इस क्षीण मोह में वह मर जातीं ॥
तेरहवां चौदहवां सकल कषाय रहित है ।
सिद्ध चक्र तो सर्व कषायों से विरहित है॥
षट स्थान पतित हानि वृद्धि भी जानो ।
है कषाय जैसी लेश्या वैसी ही मानो ॥
तू लेश्याओं से विरहित है पूर्णशुद्ध है ।
ज्ञान भाव का सागर है तू परम बुद्ध है ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे कषायमार्गणा प्ररूपणानामें एकादशम अधिकारे निष्कषाय स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं अयोगकेवलिगुणस्थानरहितजीवराजहंसाय नम ।

निर्योगस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक १४

द्वादश अधिकार

श्री ज्ञान मार्गणा प्ररुपणा पूजन

जाणइ तिकालविसए, दव्वगुणे पज्जए य बहुभेदे ।
पच्चक्खं च परोक्खं, अणेण णाणे त्ति णं बेंति ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं गुणश्रेणिनिर्जरारहितजीवराजहसाय नम

ज्ञानभास्करस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का बारहवां अधिकार ।
ज्ञान मार्गणा जानकर पाओ ज्ञान अपार ॥

रोला

पाओ ज्ञान अपार ज्ञान पाँचों को जानो ।
मतिश्रुत अवधि मनःपर्यय को लो पहचानो ॥
फिर तुम केवल ज्ञान स्वरूप आत्मा अपनी निरखो ।
सम्यकज्ञान प्रकाश प्राप्तिहित निजको परखो ।
देखो ज्ञानाकाश तुम्हारे भीतर ही है ।
सिद्धस्वपद पावन महिमा भी भीतर ही है ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वननं।
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसार अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट्
ॐ ह्रीं एकादशस्थानरूपगुणश्रेणिनिर्जरारहितजीवराजहंसाय नम.

बोधसूर्यस्वरूपोऽहं ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ज्ञान की संप्राप्ति के बिन व्यर्थ है संयम तुम्हारा ।

ध्रुव स्वभाव न लक्ष्य हो तो व्यर्थ जानो श्रम तुम्हारा ॥

ज्ञान जल से न्हवन करके त्रिविध रोग विनाश करलूँ।

ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान करलूँ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय , जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.

भावना का नाम लेकर भावना को मत भुलाओ ।

भावना भव नाशिनी भा वासनाओं को सुलाओ ॥

ज्ञान चंदन तिलक से संसार ज्वर सम्पूर्ण हर लूं ।

ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि ।

भावना से बंध होता भावना से मोक्ष होता ।

भावना में ज्ञान अमृत भावना में गरल होता ॥

ज्ञान अक्षत पुंज लेकर शुद्ध अक्षयपद अमर लूँ ।

ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षत नि ।

भाव जितने पराए हैं उन्हें संचय अब करो मत ।

राग जन्य महान विषमय द्वेष के कांटे भरो मत ॥

कामशर पीडा मिटाऊँ शील पुष्प सुवास उर लूँ ।

ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय , कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि ।

कषायों के भाव जितने उठें तुम उनको मिटाओ ।

आत्म शक्ति महान द्वारा हिम समान उन्हें गलाओ ॥

[illegible]

क्षुधारोग विनाश करके तृप्त आत्म स्वभाव सरलूँ ।
ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान करलूँ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

वस्तुनिष्ठ स्वभाव शाश्वत ज्ञान केवल से भरा है ।
निज स्वभाव महान सुखमय ज्ञान दर्शनमय खरा है ॥
ज्ञान दीप प्रकाश करके मोह तम सम्पूर्ण हर लूँ ।
ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

रवि स्वभाव नहीं बदलता रात हो या दिवस हो प्रभु ।
आवरण इससे हटाकर लाभ पूरा उठाओ प्रभु ॥
शुक्ल ध्यानी धूप द्वारा कर्म वसु परिपूर्ण हरलूँ ।
ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूप नि ।

कामनाओं में न उलझो जल्प की ही वृद्धि होगी ।
निर्विकल्प न बन सके तो भूल की ही सृष्टि होगी ॥
ज्ञान फल से मुक्ति फल की प्राप्ति का पुरुषार्थ कर लूँ।
ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥
ॐ ह्रीं ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

अगर निर्णय नहीं है तो भूलके ही दुख उठाओ ।
मार्ग दोनों ही खुले हैं जिधर चाहे उधर जाओ ॥
अब ज़रा एकान्त संशय विनय अरु अज्ञान छोड़ो ।
ज्ञान आत्मोत्पन्न द्वारा मुक्तिपथ से चरण जोड़ो ॥
पद अनर्घ्य स्व प्राप्ति के हित आत्मा का ध्यान कर लूँ।
ज्ञान की इस मार्गणा को जान सम्यक् ज्ञान कर लूँ ॥
ॐ ह्री ज्ञानमार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं अष्टविधकर्मरहितजीवराजहंसाय नमः ।

अकलंकस्वरूपोऽहं ।

महार्घ्य

गीत

ज्ञान है वस्तु सबके बड़े कामकी ।
है बड़ी धूम इसके बड़े नाम की ॥
ज्ञान से होता सच्चा समाधान है ।
ज्ञान ही मुक्तिपुर जाने का थान है ॥
ज्ञान की छाँव अनुभव स्व विश्राम की ।
ज्ञान है वस्तु सबके बड़े काम की ॥
ज्ञान से मिलता निर्वाण सुख जान लो ।
ज्ञान से कर्म अवसान हैं जान लो ॥
ज्ञान से बीन बजती है ध्रुव धाम की ।
ज्ञान है वस्तु सबके बड़े काम की ॥

ॐ ह्रीं सदाशिवादिदर्शनरहितजीवराजहंसाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बुद्धस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-दिग्पाल

निजज्ञान जहाँ हो तो मिथ्यात्व नहीं होता ।
निज ज्ञान नहीं हो तो सम्यक्त्व नहीं होता ॥
शुद्धात्म त्रिकाली ध्रुव को लक्ष्य बना लो अब ।
बिन लक्ष्य के कोई भी प्रारम्भ नहीं होता ॥
निज आत्मा से परिचय जिसने न किया अबतक।
कितने भी व्रत धरे पर सिद्धत्व नहीं होता ॥
निज आत्मतत्त्व निर्णय का यत्न परम उत्तम ।
इसके बिन कोई भी आत्मत्व नहीं होता ॥

आत्मत्व नहीं है तो है व्यर्थ मनुज जीवन ।
आत्मत्व को जाने बिन सिद्धत्व नहीं होता ॥

छंद-ताटंक

पर परिणति का बल क्षीण करो यदि तुमको शिव सुख पाना है ।
निज परिणति सबल करो अपनी यदि भेदज्ञान निधि पाना है॥
जब तक पर परिणति सबल सग मिथ्यात्व न क्षय करने देगी।
निज परिणति को बलवान करो यदि सम्यक् दर्शन पाना है॥
सम्यक् दर्शन के आते ही सारे विभाव भी क्षय होंगे ।
निज शुद्धभाव में आओ जो शिवसुख का श्रेष्ठ खजाना है॥
आरक्षित मुक्ति भवन कर लो ले एकमात्र शुद्धोपयोग ।
शुद्धोपयोग से परिचयकर परमात्मतत्त्व निज लाना है ॥
व्यवहार रूप आवश्यक तो भवपथ में ही शोभा देता ।
निश्चय आवश्यक शिवपथ से अब तो तुमको प्रगटाना है ॥
चचलता का दुर्गुण छोडो इकबार अचचल हो जाओ ।
बस एक बार यह आवश्यक निज उरके मध्य सजाना है ॥

छंद-माधव मालती

परम पैनी बुद्धि छैनी आज मुझको मिल गई है ।
आ त्मा से भिन्न होने की सुविधि उर झिल गई है॥
आत्मा को जानकर मैं आत्मा में लय हुआ हूँ ।
ज्ञान ज्ञाता ज्ञेय आदि विकल्पहर निजमय हुआ हूँ ॥
भव भ्रमण का अंत मैंने पा लिया है आज स्वामी ।
स्वानुभव अभिषिक्त होकर हो गया हूँ प्रभु अनामी ॥

छंद-रोला

मतिश्रुत अवधि मन पर्यय केवल को जानो ।
पांच ज्ञान से सम्यक् ज्ञान कहे पहचानो ॥

मतिश्रुत अवधि ज्ञान मिथ्या भी तो होते है ।
इनके वश हो जीव भ्रमित भवतरु बोते है ॥
इन्द्रिय मन से होता है मति ज्ञान जान लो ।
अवग्रह ईहा अवाय धारणा चार मान लो ॥
पाँचो इन्द्रिय मन से यह उत्पन्नित होता ।
इसके द्वारा चलकर मतिज्ञान ही होता ॥
श्रुतज्ञान के भेद अनेकों बतलाए है ।
एक एककर प्रथक प्रथक ये जतलाए हैं ॥
द्वादश अंग पूर्व चौदह श्रुतज्ञान जानिए ।
इनके भेद प्रभेद अनेकों है प्रमाणिए ॥
द्रव्य क्षेत्र अरुकाल भाव इन सबको जानो ।
अभी भाव श्रुतज्ञान प्राप्त कर सुख उर आनो ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे ज्ञानमार्गणा प्ररूपणानामें द्वादशम अधिकारे केवलज्ञान स्वरूपाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं जीवसंग्रहप्रयोजनरहितचैतन्यस्वरूपाय नम.

शाश्वतोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक १५

त्रयोदशम अधिकार

श्री संयम मार्गणा प्ररुपणा पूजन

वद-समिदि-कसायाणं, दंडाणं तहिंदियाण पंचण्हं ।
धारण-पालण-णिग्गह-चाग-जओ संजमो भणियो ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं त्रसचतुष्करहितचैतन्यस्वरूपाय नम
निर्नामस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का तेरहवा अधिकार ।
इसमे संयम मार्गणा का वर्णन सुविचार ॥

छंद-रोला

जान मार्गणा सयम स्वामी बनू सयमित ।
क्रम क्रम से पाचों सयम ले बनू असीमित ॥
बिन सयम के तीर्थंकर भी नहीं सीझते ।
अत सहज ही संयम पर वे स्वत. रीझते ॥
होते हैं जब आठ वर्ष के संयम धरते ।
एक देशव्रत लेते हैं अविरति को हरते ॥
मैं भी स्वामी संयम की महिमा उर धारूँ।
एकदेश या सर्वदेश संयम उर धारूँ ॥

ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मयसाराय अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् ।
ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मयसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ स्थपान ।
ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मयसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जीवसमासस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

[illegible]ऽहं ।

अष्टक

छंद-ताटंक

दुर्दमनीय विभाव भाव का उपशम कुछ सातादायी ।
इनको तो जड़ से क्षय करना ही है उत्तम सुखदायी ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम ही सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं संयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि

उपशम से न कार्य होता है क्षय से ही होता है काम ।
कर्मादिक क्षय होने पर ही मिलता है शाश्वत विश्राम ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम ही सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं संयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि ।

आशा और निराशा के ही बीच झूलता है जीवन ।
आत्मतत्त्व का ज्ञान नहीं कर पाता है भोला चेतन ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम ही सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं संयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

कभी नारकी कभी मनुज बन कभी देव बन भरमाता ।
या तिर्यंच बना चारों गतियों में भ्रम भ्रम दुखपाता ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम ही सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं संयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

शुद्ध भाव जो पा लेता है वही मुक्ति पथ पर आता।
सिद्ध स्वपद प्रगटाता अपना पूर्ण सौख्य उरमें लाता ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम ही सक्षम है ॥

ह्रीं सयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

रूप गंध रस स्पर्श वीसगुण पुद्गल के मुझमें न कहीं।
गति स्थिति हेतुत्व धर्म अथवा अधर्म मुझमें न कहीं ॥
सयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम भी सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

नभ जैसा अवगाहन या है काल वर्त्तना गुण न कहीं ।
एकमात्र शुद्धात्म तत्त्व स्वाधीन स्वभाव महान सही ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में सयम ही सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूप नि. ।

चेतन मन ने बात न मानी शिवपथ पर आया न कभी।
शुद्ध स्वभाव सुना आत्मा का पल भर भी ध्याया न कभी॥
सयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभ्रम है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संयम ही सक्षम है ॥

ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

आस्रव संवर बंध निर्जरा मोक्ष तत्त्व पर्याय नहीं ।
एकमात्र शुद्धत्व गुणमयी हूँ कोई परभाव नहीं ॥
इधर उधर ही भटक भटक कर भव अटवी में दुख पाया।
रागद्वेष शुभ अशुभ आस्रव में न कभी भी सुख पाया ॥

पंच परावर्तन कुचक्र को मुझे कुचलना ही होगा ।
पाप पुण्य जितने विभाव हैं उन्हें कुचलना ही होगा ॥
संयम के बिन मोक्षमार्ग की सकल कल्पना विभाव है ।
तीर्थंकर को सिद्ध बनाने में संभव ही संक्षम है ॥

ॐ ह्रीं सयम मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं विस्तरजीवसमासरहितचैतन्यस्वरूपाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बोधप्राप्तस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

सखी

नदियों में जल होता है तो नदियाँ कहलाती ।
धरती में यदि मिट्टी हो तो धरती कहलाती ॥
पर्वत में पत्थर हो तो वह पर्वत कहलाता ।
है अथाह जल राशि जहाँ वह सागर कहलाता ॥
जो प्रकाश का पुंज चंदा गगन में सूरज कहलाता ।
जो रजनी में नभ से चमके चंदा कहलाता ॥
जिसके पास ज्ञान होता है वह ज्ञानी होता ।
यदि अज्ञान पास होता तो अज्ञानी होता ॥
श्रद्धा जिसके पास पूर्ण वह सम्यकदृष्टि है ।
दर्शन मोहपास जिसके वह मिथ्यादृष्टि है ॥
अट्ठाईस मूलगुण धारी मुनि कहलाता है ।
तेरह विध चारित्र पाल संयम उरलाता है॥
यथाख्यात जो पाता है वह अर्हंत हो जाता ।
जो अभाव योग का करता सिद्ध स्वपद पाता ॥

संयम की महिमा तो देखो क्या कुछ कर डाला ।
मुझ जैसे अज्ञानी को शिव पथ तक दे डाला ॥

ॐ ह्रीं जीवसमासप्ररूपणयोग्यस्थानयोन्यादिरहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्देहस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

अहिसादि पाचो व्रत धारण करना सयम ।
यथा शक्ति पालन करना ही श्रेष्ठतम नियम ॥
अणुव्रत पॉच तीन गुण व्रत चारों शिक्षाव्रत ।
यही सयमासयमधारी को होते व्रत ॥
सर्वदेश संयम तो केवल मुनि को होता ।
इसके बिन कर्म निर्जरित पूर्ण न होता ॥
असंयमी जीवन को तजकर बनो संयमी ।
तुम अनंत बल के धारी हो नहीं कुछ कमी ॥

छंद-ताटंक

शीतल शान्त चद्र भी जलता जब अशान्त मन होता है।
मोह कर्म का धूम्र सदा ही भव दुखदायी होता है ॥
इस अज्ञान दशा की महिमा से हैं ग्रसित सभी प्राणी ।
ज्ञान भाव से बहुत दूर हैं बने हुए हैं अज्ञानी ।
ज्ञान ध्यान वैराग्य जगाता जब ये जाग्रत होता है ।
शीतल शान्त चंद्र भी जलता जब अशान्त मन होता है।

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे संयम मार्गणानामे त्रयोदशम अधिकारे असंयम रहित जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियादिजीवविकल्परहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

[illegible] ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ज्ञान चंद्रिका मोक्ष मार्ग के अंधियारे को हरती है।
सभी तरह का अंधियारा हर चिर प्रकाश से भरती है॥
पहिले नाशो मोह महातम
फिर नाशो अविरति का दमखम,
फिर कषाय को चीर फाड़कर यह धरती में धरती है॥
जो इसको संग लेकर चलता,
कर्म शुत्रुओं को वह दलता,
उसको मुक्ति बधू पुलकित हो सादर बरती है ॥

बिन ज्ञान के कभी भी सत्यार्थ नहीं होता ।
रागादि भाव होतो परमार्थ नहीं होता ॥
मोहादि भाव हो तो भूतार्थ नहीं होता ।
परभाव है तो कोई आत्मार्थ नहीं होता ॥

ॐ

पूजन क्रमांक १६

चतुर्दशम अधिकार

श्री दर्शन मार्गणा प्ररुपणा पूजन

जं सामण्णं गहणं, भावाणं णेव कट्टुमायारं ।
अविसेसिदूण अट्ठे, दंसणमिदि भण्णदे समये ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं दशस्थावरकायरहितचैतन्यस्वरूपाय नम

अक्षयस्वरूपोऽहं ।

दोहा

जानूं दर्शन मार्गणा चौदहवां अधिकार ।
गोम्मटसार महान की गाऊं जय जयकार ॥

रोला

गाऊं जय जयकार मार्गणा दर्शन जानूं ।
चक्षु अचक्षु अवधि अरु केवल दर्शन मानूं ॥
केवल दर्शन ज्ञान स्वभावी शुद्ध आत्मा ।
चक्षु अचक्षु अवधि दर्शन विहीन परमात्मा ॥
ऐसा आत्मतत्त्व होकर भी भटक रहा हूँ ।
निज दर्शन बिन चारों गति में भटक रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं ।
ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं नित्यचतुर्गतिनिगोदरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

परमानंदस्वरूपोऽहं ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ज्ञानात्मकदर्शन भूत आनंद स्वभावी हूँ ।
सहजात्म स्वरूपी हूँ परद्रव्य अभावी हूँ ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनंद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

चैतन्य धातु निर्मित शुद्धात्म स्वभावी है ।
सहजानंदी सुख का सागर समभावी है ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनंद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि ।

रागादि विभावों का मुझमें न अंश किंचित ।
मैं साम्यभाव अधिपति आनंदोदधि निश्चित ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनंद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

दर्शन सुख ज्ञान स्वबल मेरा स्वचतुष्टय है ।
त्रिभुवन से न्यारा है भवभय से निर्भय है ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनंद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

जब द्रव्य दृष्टि होती पर्याय दृष्टि जाती ।
तब दुखिया चेतन को निज की महिमा आती ॥

दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि. ।

पर्यायें नश्वर हैं आश्रय के योग्य नहीं ।
है ध्रुव त्रिकाली ध्रुव विस्मृति के योग्य नहीं ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनंद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीप नि ।

गुण है अनंत मेरे भीतर है सौख्य अमित ।
इनको प्रगटाना है यह लक्ष्य किया निश्चित ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

परका ही दास बना अपना वैभव भूला ।
नश्वर परद्रव्यों पर मैं व्यर्थ नाथ फूला ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

ऋजुकूला तट पाकर श्री वीर हुए ध्यानी ।
अन्तर्मुहूर्त्त में पद पाया केवल ज्ञानी ॥
मैं निज तट पर आऊँ अपना ही ध्यान करूँ ।
पदवी अनर्घ्य पाकर निज पद निर्वाण वरूँ ॥
दर्शन स्वरूप मेरा ही सम्यक् दृष्टा है ।
आनंद अतीन्द्रिय के सागर का सृष्टा है ॥

ॐ ह्रीं दर्शन मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं एकद्वित्रिगुणकाररहितचैतन्यस्वरूपाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानघनस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-दिग्पाल

श्रुत ज्ञान हो गया है स्वाध्याय करते करते ।
मिथ्यात्व जा रहा है इस बार डरते डरते ॥
सम्यक्त्व की प्रभा का आनंद मिल गया है ।
अनुभव कलश सजे हैं निज रस से भरते भरते ॥
हिंसादि भाव सारे भी चल दिए सदा को ।
थोडा समय लगेगा कर्मों को हरते हरते ॥
आस्रव के पाँव तोड़े संवर ने एक क्षण में ।
अब निर्जरा सजग है बंधों को झरते झरते ॥
चैतन्य प्राण मेरे जागे हैं आज पूरे ।
मैं बच गया सदा को इस बार मरते मरते ॥

ॐ ह्रीं जलस्थलखेचरादिजीवरहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

शुद्धचित्स्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

जो सामान्य ग्रहण करता है वह दर्शन है ।
भेद रहित जो वस्तु देखता वह दर्शन है ॥
चक्षु अचक्षु अवधि केवल ये चार कहे है ।
इनके बिन जो हैं प्राणी भवधार बहे हैं ॥
गुणस्थान बारहवें तक चक्षुदर्शन है ।
तेरहवें में तो हो जाता केवल दर्शन है ॥

श्री दर्शन मार्गणा प्ररूपणा पूजन

छंद-ताटंक

दर्शन भाव न चेतेगा तो दृष्टा भाव न चेतेगा ।
ज्ञान भाव ना चेतेगा तो ज्ञाता भाव न चेतेगा ॥
दृष्टा ज्ञाता भाव न चेता तो फिर तू है मिथ्यादृष्टि ।
ज्ञान चेतना प्रगटाए तो हो जाएगा सम्यक्दृष्टि ॥
ज्ञान चेतना नहीं उदय तो कर्म चेतना चेतेगी ।
कर्म चेतना क्षय होगी तो ज्ञान चेतना चेतेगी ॥
अगर ध्येय का निर्णय है तो ध्येय प्राप्ति दुष्कर न कहीं।
बिना लक्ष्य प्रारंभ अगर है तो मिल सकता मार्ग नहीं ॥
यदि प्रबुद्ध चेतन है तो फिर कर्म पराक्रम भी न कहीं।
उन्नत पथ पर बढना है तो पथ में रुकना कहीं नहीं ॥
जीवन सुखी प्रसन्न बनाने की पावन विधि है निज ज्ञानोपाय।
नहीं किसी से दुराव छल हो उर हो उज्ज्वल शान्तोपाय॥
शक्ति अनंतानंत उछलतीं अन्तर्नभ होता पुलकित ।
गुण अनंत का उदधि उमडता अन्तर्मन होता हुलसित॥
अन्त करण बनाता अपना सुख का सृजन हार पावन।
नाम अन्ततोगत्वा जपता निज स्वभाव का मनभावन ॥
प्रतिभा नवल क्रान्ति से शोभित मोह शत्रु को ग्रसलेती।
केवल ज्ञान सूर्य किरणावलि उर ज्योतिर्मय कर देती॥
नहीं आत्म विश्लेषण जिनको दृष्टि कोण उनका विपरीत।
प्रतिभा करते सदा कलंकित निज आत्मा के रंच न मीत॥
चिर संचित विश्वास न सम्यक् चिरपरिचित रूढियाँ चित्र ।
नहीं ज्ञान का आव्हाहन है नहीं आत्म छवि के हैं विचित्र॥

अत: संयमित होकर अपना दर्शन भाव जाग्रत कर ।
ज्ञान भाव की बजा भैरवी मानव जीवन नियमित कर॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे दर्शन मार्गणा प्ररूपणानाम चतुर्दशम अधिकारे दर्शन स्वरूप जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं आ[illegible]विकल्परहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

शुद्धज्ञानस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ज्ञान तथा चारित्र सुउत्तम मोक्ष प्राप्ति के साधन हैं।
दृढ सम्यक्त्व बिना ये सारे ही तो मुख्य असाधन हैं ॥
यद्यपि ये साधन बलशाली,
पर समकित बिन बिलकुल खाली,
सभी असाधन बंध हेतु हैं समकित मोक्ष सुकारण है॥
सकल विभाव भाव दुखदायी,
शुद्ध स्वभाव सदा सुखदायी,
निज स्वभाव साधन सर्वोत्तम भवदधि तारण है॥

ॐ

पूजन क्रमांक १७

पंचदशम् अधिकार

श्री लेश्या मार्गणा प्ररूपणा पूजन

लिंपइ अप्पीकीरइ, एदीए णियअपुण्णपुण्णं च ।
जीवो त्ति होदि लेस्सा, लेस्सागुणजाणयक्खादा ॥

स्थापना

ॐ ह्री शखावर्तादियोन्याकाररहितचैतन्यस्वरूपाय नम

निराकारस्वरूपोऽहं ।

दोहा

जानू लेश्या मार्गणा पद्रहवा अधिकार ।
लेश्याओ से मै रहित पूर्ण शुद्ध अविकार ॥

रोला

पूर्ण शुद्ध अविकार, लेश्या शिवसुख बाधक ।
लेश्यारहित वही होते जो निज आराधक ॥
लेश्या के छह भेद नही कोई भी उत्तम ।
परम शुक्ल लेश्या भी शिव सुखहित ना सक्षम ॥
लेश्या रहित स्वभाव जीवका ध्रौव्य त्रिकाली ।
है कषाय से युक्त लेश्या बहुदुख वाली ॥

ॐ ह्री लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर सवौषट् ।
ॐ ह्री लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनम् ।
ॐ ह्री लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्री तीर्थंकरादिजन्मयोग्यकूर्मोन्नतयोनिरहितचैतन्यस्वरूपाय नम

निर्योनिस्वरूपोऽहं ।

आत्म प्रेम जिनके मन में है वे पापों से डरते हैं ।
पुण्य भाव में भी न उलझते शुद्धभाव ही रखते हैं ॥
है कषाय अनुरंजित यदि परिणाम लेश्या का सद्भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि

दयादान जपतप व्रत संयम सभी संग में रहते है ।
फिर भी अपने शुद्ध स्वभाव सिन्धु मे प्रतिपल बहते हैं॥
है कषाय अनुरंजित यदि रेणाम लेश्या का सद्भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चंदन नि ।

धर्मध्यान के संस्थानो को जब वे कर लेते हैं पार ।
शुक्ल ध्यान की गरिमा पा तब करते कर्मों का संहार॥
है कषाय अनुरंजित यदि परिणाम लेश्या का सद्भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

यथाख्यात चारित्र श्रेष्ठ जब उनका हो जाता है पूर्ण ।
तब वे सिद्धस्वपद को प्रगटा शिव सुख पा लेते सम्पूर्ण॥
है कषाय अनुरंजित यदि परिणाम लेश्या का सद्भाव।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

जो अनात्मा से करते हैं प्रेम वही भव दुख पाते ।
ज्ञायक बनने से वंचित रहें कभी नहीं निज सुख लाते॥
है कषाय अनुरंजित यदि परिणाम लेश्या का सद्भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

जब विराग के स्वर गुंजित होते है इनके अतंर में ।
तब ये कभी नहीं फंसते है चारों गति के चक्कर में ॥
है कषाय अनुरंजित यदि परिणाम लेश्या का सद्‌भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

राग रागिनी की धुन जब तक चेतन मन में बजती है ।
तब चारों गति की भंवरों में यह निजात्मा सजती है ।
है कषाय अनुरंजित यदि परिणाम लेश्या का सद्‌भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

चेतन मन यदि विफर गया तो भव अटवी में अटकेगा।
चेतन मन यदि निखर गया तो फिर न कहीं भी भटकेगा॥
है कषाय अनुरजित यदि परिणाम लेश्या का सद्‌भाव।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

निजको नही परखने पर तो रहता नसनस मे मिथ्यात्व।
निज को यदि पलभर भी निरखे तो पा लेता है सम्यक्त्व॥
है कषाय अनुरजित यदि परिणाम लेश्या का सद्‌भाव ।
यदि कषाय उत्पन्न न हो तो लेश्या का है पूर्ण अभाव ॥

ॐ ह्रीं लेश्या मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं सम्मूर्छनादिजन्मभेदरहितचैतन्यस्वरूपाय नम ।

अजन्मस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

विरछंद

निजगृह के भीतर जाते ही ऋद्धि सिद्धि होती संप्राप्त ।
निजगुण मूर्ति महा चैतन्यनाथ का सुख होता उर व्याप्त॥

सम्यकित की अगवानी करने भेदज्ञान आगे आता ।
स्वपर विवेक जगा अंतर में पूर्ण ज्ञान उर को भाता ॥
आस्रवभावों का विरोधकर संवर ने गाए कुछ गीत ।
अनुभव रस की वर्षा आयी परभावों से पूरी रीत ॥
ज्ञायक की महिमा पहचानी शुद्धभाव उर में छाया ।
लेश्याओं से रहित अवस्था का आनंद हृदय आया ॥
परम शुक्ल लेश्या को भी तज लेश्या रहित भाव भाया ।
एकमात्र उद्देश्य मोक्षसुख मेरे अंतर में छाया ॥

ॐ ह्रीं पोतजादिजन्मरहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विरागधामस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

द्रव्य लेश्या भाव लेश्या दो प्रकार है ।
पाप पुण्य से लिप्त वही लेश्या विकार है ॥
मन वचकाया योग प्रवृत्ति लेश्या होती ।
उदयकषायों से अनुरंजित मति ही होती ॥
इन दोनों के कारण बंध चार होते हैं ।
योगों से तो प्रकृति प्रदेश बंध होते हैं ॥
अरुकषाय से स्थिति अरु अनुभाग बंध है ।
अज्ञानी प्राणी कषाय में हुआ अंध है ॥
लेश्या क्षय करने का श्रम ही श्रम है उत्तम ॥
लेश्या के सोलह अधिकार जान लो कर श्रम ।
लेश्याओं के छह प्रकार दुखरूप जानिये ॥
कृष्ण नील कापोत पीत तो अशुभ लेश्या ।
पीत पद्म अरु शुक्ल लेश्या त्रय शुभ लेश्या ॥
इनके भेद प्रभेद अनेकों हो जाते है ।
मरकर प्राणी तदनुसार ही गति पाते हैं ॥

लेश्या धारी जीवों की संख्या भी जानो ।
पृथक पृथक गिनती गोम्मट्टसार से जानो ॥
लेश्याओं के कारण समुद्घात भी होती ।
सिद्ध लेश्या रहित अलेश्यक गति ही होती ॥
लेश्याओं से विरहित तेरा निज स्वभाव है ।
किन्तु अभी तो भेदज्ञान धन का अभाव है ॥
अत प्रथम तू भेदज्ञान कर समकित पाले ।
फिर अपने स्वभाव के बल से शिवपुर जा ले ॥

छंद-ताटक

सिद्धपुरी के तोरणद्वारो पर शहनाई बजती है ।
सिद्ध स्वपद से यह निजात्मा भलीभांति से सजती है॥
त्रिभुवन थिरक थिरक कर नचता गंगनांगन गाता है गीत।
ऐसी दशा उसे मिलती है जो करता है निज से प्रीत ॥
मै भी निज से प्रीत करूँ प्रभु ऐसी ज्ञान दृष्टि होदेव ।
पर्यायों से दृष्टि हटाकर सिद्ध स्वपद पाऊँ स्वयमेव॥

ॐ ह्री गोम्मटसार कर्मकाण्डेलेश्या मार्गणानामे पचदशम अधिकारे अलेश्यास्वरूप जीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्री सचित्तादियोनिभेदरहितचैतन्यस्वरूपाय नम

अशरीरस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊ ॥
नेमिचद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक १८

षोडशम् अधिकार

श्री भव्य मार्गणा प्ररुपणा पूजन

भविया सिद्धी जेसिं, जीवाणं ते हवंति भवसिद्धा ।
तव्विवरीयाऽभव्वा, संसारादो ण सिज्झंति॥

स्थापना

ॐ ह्रीं उपपाद जन्मरहितचैतन्यस्वरूपाय नम:
शांतस्वरूपोऽहं ।

दोहा

भव्य मार्गणा जानिये सोलहवाँ अधिकार ।
जय जय गोम्मटसार श्रुत जिन दिव्यध्वनि सार॥

छंद रोला

दिव्यध्वनि का सार मिला मुनि नेमिचंद्र से ।
जुड़ जाऊंगा एक दिवस मैं ज्ञान चंद्र से ॥
भव्य मार्गणा के दो भेद मुख्य बतलाए ।
एक अभव्य दूसरा भव्य भव्य ही पाए ॥
निकट भव्य आसन्न मुक्तिपथ पर आते हैं ।
दूरभव्य तो कन्नी काट चले जाते हैं ॥
अरु दूरानुदूर की बात व्यर्थ करना है ।
उसे मोक्षपथ से सुदूर ही दुख भरना है ॥
मुक्ति प्राप्ति की नहीं योग्यता है अभव्य में ।
मुक्ति प्राप्ति की पूर्ण योग्यता सदाभव्य में ॥

श्री भव्य मार्गणा प्ररूपक पूजन

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण ।

ॐ ह्रीं गर्भजजन्मरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

प्रशांतस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद- पारस प्यारा

चैतन्य सागर का पूर आया कर लो नव्हन ।
पायी परिणति स्वभाव उससे कर लो लगन ॥
पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढो ।
मिथ्या भावो को छोड चौथे ही पर चढो ॥

ॐ ह्री भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृतयु निशनाय जल नि ।

चैतन्यसागर का ज्वार भव ज्वर बहा देयगा ।
शीतल स्वभाव अपूर्व शाश्वत सुख लेयगा ॥
पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढो ।
मिथ्या भावों को छोड चौथे ही पर चढो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

चैतन्य सागर तरंग भवपार ले जाएगी ।
शुभ या अशुभभाव सब पल में जला जाएगी ॥
पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढो ।
मिथ्या भावों को छोड चौथे ही पर चढो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

चैतन्य सागर के रत्न निष्कामभाव भरे ।
कामाग्नि पीडा विनाश पाओ शिव सुख खरे ॥

पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढ़ो ।
मिथ्या भावों को छोड़ चौथे ही पर चढ़ो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि. ।

चैतन्य सागर पवन तृप्ति का स्रोत है ।
भव भूख क्षय करती है आनंद उद्योत है ॥
पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढ़ो ।
मिथ्या भावों को छोड़ चौथे ही पर चढ़ो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

चैतन्य सागर के दीप भ्रमतम हरते सदा ।
मोह विभ्रम विनाश शिव सौख्य करते सदा ॥
पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढ़ो ।
मिथ्या भावों को छोड़ चौथे ही पर चढ़ो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि. ।

चैतन्य सागर का तट कषायें करता है नाश ।
कर्म को करता क्षीण देता निर्मल प्रकाश ॥
पायी है भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढ़ो ।
मिथ्यात्व भावों को छोड़ चौथे के ऊपर चढ़ो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि ।

चैतन्य सागर का तल मुक्ति रमणी का घर ।
लेता फल मोक्ष का निज स्वभाव पाकर ॥
पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढ़ो ।
मिथ्या भावों को छोड़ चौथे ही पर चढ़ो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

चैतन्य सागर के अर्घ्य पदवी अनर्घ्य स्वरूप ।
रत्नत्रय भक्ति महान उज्ज्वल निजानंद रूप ॥

पायी भव्यत्व शक्ति अब तो आगे बढ़ो ।

मिथ्या भावों को छोड़ चौथे ही पर चढ़ो ॥

ॐ ह्रीं भव्य मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं सामान्यनवयोनिरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

चितियोनिस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद चान्द्रायण

निकट भव्य को ही आत्मा का ज्ञान है ।
दूरभव्य को नहीं आत्म का भान है ॥
अज्ञानी की ज्ञान भाव से शत्रुता ।
ज्ञानी की है ज्ञान भाव से मित्रता ॥
मनवचकाय त्रिगुप्ति हृदय में धार लूँ ।
हो स्वरूप में गुप्त कर्म सहार लूँ ॥
आज अचानक वेला पायी ज्ञान की ।
अनायास निज सुमति जगी श्रद्धान की ॥
हूँ आसन्न भव्य हुआ विश्वास अब ।
समकित पूर्वक पाया आत्म निवास अब ॥

ॐ ह्रीं योनिविस्तररहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदाज्ञानधामस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

भव्य मार्गणा का ज्ञानी ही भव्य कहाता ।
पंच परावर्त्तन कुचक्र को क्षय कर पाता ॥
किया द्रव्य परिवर्त्तन मैंने काल अनंतों ।
किया क्षेत्र परिवर्त्तन मैंने काल अनंतों ॥

किया काल परिवर्तन मैंने काल अनंतों ।
किया भाव परिवर्तन मैंने काल अनंतों ॥
किया प्रभो भव परिवर्तन मैंने काल अनंतों ।
सतत् पंच परिवर्तन के दुख सहे अनंतों ॥
पंच प्रकारी देह महान चतुर्गति दुखमय ।
इससे रहित अवस्था ही केवल है सुखमय ॥
औदारिक वैक्रियक व तेजस कार्माण तन ।
आहारक तन पाँच शरीर सदा दुख के घन ॥
मैं इन पंच शरीरों का प्रभु नाश करूँगा ।
भव्य जीव हूँ केवल ज्ञान प्रकाश करूँगा ॥

छंद गैर

अपने स्वभाव में ही जिये जा रहा हूँ मैं ।
सारे विभाव नाश किये जा रहा हूँ मैं ॥
अनुभव का सिन्धु मेरे अंतर में उमड़ता ।
उसका महान रस ही पिये जा रहा हूँ मैं ॥
अपने स्वभाव में ही जिये जा रहा हूँ मैं ।
पापों से हटा और पुण्य से हुआ अलग ॥
शुद्धात्मा को संग लिये जा रहा हूँ मैं ।
उलझन में रहके करता भोगादि के विकार ॥
सारे विकार क्षीण किए जा रहा हूँ मैं ।
संसार में यह करके मैंने दुख बहुत पाये ॥
सारे विकार क्षीण किए जा रहा हूँ मैं ..

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकांडे भव्य मार्गणा प्ररूपणाये भव्यस्वभाव[illegible]पकरिताय जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं लब्ध्यपर्याप्तकमनुष्यरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

परिपूर्णबोधस्वरूपोऽहं ।

श्री भव्य मार्गणा प्ररूपणा पूजन

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिव पथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

पास में शुक्ल ध्यान धन है ।
जला कर्मों का ईंधन है॥
यथाख्यात की महिमा पायी ।
शिवमय जीवन है ॥
प्रगटी है अरहंत अवस्था
हुई मोक्ष में सर्व व्यवस्था
अब तो सिद्ध शिला वाला
अपना सिंहासन है ॥

पल्लवी पल्लवित होती शशि प्रभा से पूर्णिमा ।
तारिका निर्मल मिलेगी चंद्रिका की भंगिमा ॥
ग्रहण जो अब तक लगा था दूर वह हो जाएगा ।
अंधेरे का मान भी तत्काल ही खो जाएगा ॥
मुक्ति तरु के सुफल पाकर प्राप्त होगा परम सुख ॥
नहीं भव की व्याधि होगी नहीं फिर संसार दुख ॥

श्री गोम्मटसार विधान

ॐ

पूजन क्रमांक १९

सत्रहवाँ अधिकार

सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपणा पूजन

छ-प्पंच-णव-विहाणं, अत्थाणं जिणवरोवइट्ठाणं ।
आणाए अहिगमेण य, सद्दहणं होइ सम्मत्तं ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं भोगभूमिजजीवविकल्परहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

भरितावस्थोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का सत्तरहवाँ अधिकार ।
अब मार्गणा सुजानिए उर सम्यक्त्व विचार ॥

छंद-रोला

अब सम्यक्त्व मार्गणा जानूँ पूरी स्वामी ।
द्रव्य दृष्टि बन सम्यक्दर्शन पाऊँ नामी ॥
सम्यक् दर्शन बिना सभी व्रत शून्य जानिए ।
हैं आकाश कुसुम समान यह सत्य मानिए ॥
चेतन होकर सजग हरो मिथ्यात्व भाव को ।
विनय भाव से निरखो तुम अपने स्वभाव को ॥
शुद्ध मुक्ति का मार्ग बिना सम्यक्त्व न होता ।
जो सम्यक्त्व हृदय धरता वह अरि रज खोता ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

श्री सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपणा पूजन

ॐ ह्री समूर्छिममनुष्यरहितचैतन्यस्वरूपाय नम ।

सहजशिवस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

वीरछंद

जीव आदि छह द्रव्यों से त्रय लोक व्याप्त है तीनों काल।
धर्म अधर्म काल नभ चारों का परिणन स्वभाव त्रिकाल॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्री सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

पुद्गल मे जो रत हो जीव विभाव परिणमन करता है।
कर्मबध की प्रबल श्रृंखला से वेष्ठित दुख भरता है ॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्री सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

कर्म बध पर समय कर्म से है अबंध वह स्वसमय है ।
परभावो मे लीन पर समय लीन स्वभाव स्वसमय है ॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्री सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

अरस अरूप अगंध चेतनागुण अव्यक्त अशब्द अमोल।
लिंग रहित सस्थान मार्गणा रहित अनिर्दष्ट अनमोल ॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्री सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वसनाय पुष्प नि ।

देह तथा मन वाणी से इसका कोई संबंध नहीं ।
छहो द्रव्य व्यक्तव्य ज्ञेय है अत कर्म का बध नहीं ॥

सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

लोकाकाश प्रमाण असंख्य प्रदेशी जीव तत्त्व आपूर्ण ।
अमित अनादि अनंत शाश्वत महिमामय चेतन परिपूर्ण॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

पुद्गल कर्म प्रदेशों से सर्वथा भिन्न है निज चिद्रूप।
आगत विद्य अनागत तीनों कालों में है सिद्धस्वरूप ॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूप नि ।

सात तत्त्व छह द्रव्य आदि से सदा भिन्न है महा महान।
दर्शन ज्ञान स्वभावी चेतन बना बनाया है भगवान ॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

अंतर में सामन्य वस्तु ध्रुवज्ञान समुद्र दिगंबर है ।
अन्तर्मग्न न हो पाया तू कैसा अरे निरबर है ॥
अध्यवसान आदिभाव भी नहीं जीव को होते हैं ।
रंच मार्गणा गुण स्थान भी नहीं जीव को होते है ॥
सप्त तत्त्व की सम्यक् श्रद्धा ही व्यवहार रूप सम्यक्त्व।
आत्म तत्त्व की सच्ची श्रद्धा ही जानो निश्चय सम्यक्त्व॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं नपुंसकवेदयुक्तनारकपर्यायरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

निर्मलोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

सम्यक्त्व सूर्य देख अंधेरा चला गया ।
मिथ्यात्व मोह आज ही मुझसे गला गया ॥
अनभिज्ञ भेद ज्ञान से जो भी रहा अरे।
मिथ्यात्व से वह जीव हमेशा छला गया ॥
संयम की नाव जिसने कभी भी नहीं पायी।
इस भव समुद्र में वही बहता चला गया ॥
जिसने प्रमाद को ही बसाया हो निजंतर ।
वह निज स्वभाव को ही जलाता चला गया॥
चारों काषाय जिसको लगीं दुनिया में अच्छी।
समभाव बिना नरकों में रोता चला गया ॥
त्रैलोक्य तीन काल मे सम्यक्त्व ही है श्रेष्ठ।
सम्यक्त्व तो श्रद्धान के द्वारा ढला गया ॥

ॐ ह्रीं शरीरावगाहनरहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चिदवगाहस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

छहों द्रव्य अरु अस्तिकाय पाँचों को जानो ।
सप्ततत्त्व अरु नो पदार्थ सबको पहचानो ॥
फिर इनका श्रद्धान सुसम्यक् उरमें लाओ ।
तो निश्चित सम्यक्त्व स्वनिधि पलभर में पाओ॥

षटकोणी परमाणु मात्र को पुदगल जानो ।
निज स्वभाव से सदा अन्य है यह पहचानो ॥
गतिस्थिति अवगाह क्रियायुत जीव अरु पुद्गल।
धारक क्रियावती शक्ति के जीव रु पुद्गल ॥
पुद्गल मूर्तिक जीव अमूर्तिक निश्चित जानो ।
दोनों भिन्न भिन्न सत्ताधारी हैं मानो ॥
काल द्रव्य का निमित्त पाकर परिणमते हैं ।
जो अज्ञानी होते हैं भव में भ्रमते हैं ॥
त्रस तो केवल त्रसनाली में ही रहते हैं ।
स्थावर तीनों लोकों में ही रहते हैं ॥
भूत भविष्यत वर्तमान में काल तीन हैं ।
जो इनको जय करते वे ही तो प्रवीण हैं ॥
पुद्गल की तेईस वर्गणाएँ पहचानो ।
कार्माण वर्गणा निकृष्ट इसे अब हानो ॥
कार्माण क्षय होने पर सब क्षय हो जातीं ।
फिर न लौटकर कभी भूल से आने पातीं ॥
रूक्ष और स्निग्ध बंध पुद्गल में होता ।
जीव हमेशा शुद्ध सदैव अबंधक होता ॥
मिथ्यादृष्टि जीव अनंतानंत जानिए ।
सम्यक्दृष्टि तथा सिद्ध सब अनंत मानिए ॥
चौथे से ले चौदहवें की संख्या जानो ।
गोम्मटसार ग्रंथ के द्वारा पढ़कर मानो ॥
सयोग केवली की संख्या आगम कहता है ।
आठ लाख अट्ठानवे सहस पाँचशत दो हैं ॥

त्रयकम नौ करोड मुनिराज सदा ही वन्दूँ ।
भाव वन्दना द्रव्य वंदना कर अभिनन्दूँ ॥
सभी व्रती जीवों की संख्या आगम कहता ।
जो व्रत धारण से विरक्त वह भवदधि बहता ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाड सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपणाये सप्तदशम् अधिकारे सम्यकत्व स्वरूप जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णअर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं इन्द्रियाश्रयावगाहनरहितचैतन्यस्वरूपाय नम. ।

विष्णुस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊ ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिव पथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

समकित की सध्या आयी ;
मिथ्यात्व गया दुखदायी
ज्ञान चद्रिका खिली गगन मे भव दुख दूर हुआ ।
निज स्वभाव का आनद पाया
सिद्ध स्वरूप सहज दरशाया
सदा सदा को निमिष मात्र मे सुख भरपूर हुआ ।

श्री गोम्मटसार विधान

ॐ

पूजन क्रमांक २०

अष्टादशम् अधिकार

श्री संज्ञी मार्गणा प्ररूपणा पूजन

णोइंदियआवरणखओवसमं तज्जबोहणं सण्णा ।

सा जस्स सो दु सण्णी, इदरो सेसिंदियअवबोहो ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं पर्याप्तकद्वीन्द्रियादिजघन्यावगाहरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

शिवोऽहं ।

दोहा

जानू संज्ञी मार्गणा पढ़कर गोम्मटसार ।
अट्ठारहवॉं जान लूँ यह पावनअधिकार॥

छंद-रोला

संज्ञी पन का लाभ उठाऊँ शास्त्र ज्ञानकर ।
पंचेन्द्रिय संज्ञी हूँ इतना मात्र मानकर ॥
संज्ञी हूँ मैं स्वपर भेद विज्ञान करूँगा ।
निजपर को पहचान स्वयं का ध्यान करूँगा ॥
समकित लेकर मुक्ति मार्ग पर चरण बढ़ाऊँ ।
ज्ञानभावना के बल द्वारा शिव पथ पाऊँ ॥
इक द्वय त्रय चऊ प्राणी सदा असंज्ञी होते ।
पंचेन्द्रिय में भी कुछ जीव असंज्ञी होते ॥
संज्ञी जीवन महापुण्य से ही मिलता है ।
तथा असंज्ञी पाप उदय से ही मिलता है ॥

श्री संज्ञी मार्गणा प्ररूपणा पूजन

ॐ ह्रीं संज्ञी मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।

ॐ ह्रीं संज्ञी मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।

ॐ ह्रीं संज्ञी मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं अवगाहनस्वाम्यादिविकल्परहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

निजभावस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

वीरछंद

जब तक पर्याय बुद्धि है तब तक संसार रहेगा ।
जब द्रव्य बुद्धि होगी तब संसार न शेष रहेगा ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि

परद्रव्यों परभावों के कारण यह दुख पाता है ।
शुद्धोपयोग होता है तो परम सौख्य पाता है ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदन नि ।

उपयोग शुद्ध निज का कर तुम द्रव्य बुद्धि बन जाओ।
पर्याय बुद्धि को छोडो तो महा मोक्ष सुख पाओ ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

निज मत परमत वालों से मत वचन विवाद करो तुम ।
परिणति अपनी अपनी है मत कलह विषाद करो तुम ॥

[illegible]

मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.

है काल दोष से जीवों की मंद बुद्धि दुखदायी ।
समकित न कभी पाते हैं जो है अनंत सुखदायी ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.

जब तक प्रमादयुत मन है तब तक संयम दुष्कर है ।
होता प्रमाद का क्षय जब तो संयम दृढ़ शिवकर है ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि.

द्रव्यार्थिक नय की कथनी सुनकर जिय द्रव्य दृष्टि हो ।
पर्यायार्थिकनय को तज दें अनुभव की सहज सृष्टि हो॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. ।

मोहादि विकारी भावों में अणु भर नहीं सनो तुम ।
कर्त्ता कारयिता अनुमंता कारण नहीं बनो तुम ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्रीं सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

ज्ञायक की बात न मानी तो नर्कों में जाओगे ।
ज्ञायक को यदि दुख दोगे तो तुम निगोद पाओगे ॥

ज्ञायक ही चिर साथी है ध्रुव त्रैकालिक गुणधारी ।
शिव पथ पाओगे निश्चित यदि बन जाओ अनगारी ॥
मैं तो संज्ञी मानव हूँ हित अहित विवेक करूँ मैं ।
आठों कर्मों के बल को अब तो सम्पूर्ण हरूँ मैं ॥

ॐ ह्री सम्यक्त्व मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं जीसमासावगाहनविकल्पगुणितक्रमरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः।

ब्रह्मस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद गीत

एक ही काम मुझे करना है ।
शुद्ध सम्यक्त्व हृदय धरना है ॥
मोह मिथ्यात्व सर्व भागेगा ।
मुझे बस भेद ज्ञान करना है ॥
पूर्ण संवर का बल मिला मुझको ।
अब तो आस्रव का तेज हरना है ॥
निर्जरा भी चरण पखारेगी ।
कर्मों के पूर्व बंध हरना है ॥
राग द्वेषों को मैं जला दूंगा ।
मुझे तो मोक्ष प्राप्त करना है ॥
निराहारी हूँ मैं सदा से ही ।
मुझे आहार नहीं करना है ॥

ॐ ह्रीं जघन्योत्कृष्टावगाहनविकल्परहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानशरीरस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद-दोहा

पंचेन्द्रिय मन सहित जीव सब ही हैं संज्ञी ।
पंचेन्द्रिय से रहित जीव हैं सभी असंज्ञी ॥
इक द्वय त्रय चऊ इन्द्रिय प्राणी सर्व असंज्ञी।
फिर क्यों मूढ़ बना है तू होकर भी संज्ञी ॥

छंद -विजया

हवाएँ चलेगी विभावों की तो फिर ।
स्वभावों का कैसे मिलेगा किनारा ॥
जहाँ राग द्वेषों की बस्ती बसेगी ।
वहाँ कैसे आएगी निज ज्ञान धारा ॥
जहाँ ज्ञान धारा न होगी तरंगित ।
वहाँ मोह का राज्य होगा सुनिश्चित ॥
कभी भी स्वराज्य नहीं प्राप्त होगा ।
अगर होगा चेतन का मन की पराश्रित ॥
नहीं चंद्रिका ज्ञान की भी दिखेगी ।
नहीं ज्ञान रवि का सुदर्शन भी होगा ॥
पवन ज्ञान की भी चली ना हृदय में ।
नहीं आत्म अंबुज का वर्त्तन भी होगा ॥
करो यत्न कितना भी पर में अरे तुम ।
जरा सा भी तुमको नहीं लाभ होगा ॥
नहीं आत्म चर्या भी होगी सुगंधित ।
कषायों का साम्राज्य हरिलाभ होगा ॥
महामोक्ष पथ है परम सूक्ष्म सुन लो ।
कभी भूलकर इससे पीछे न हटना ॥

तुम्हें स्वर्ग सुख कुछ दिवस को मिलेगा ।
अगर तुमने छोड़ी नहीं पर की रटना ॥
सहज ज्ञान दीपावली जगमगाए ।
यही श्रम तुम्हारा परम श्रेष्ठ होगा॥
जो परके ही दीपक जलाओगे तुम तो ।
तुम्हारा पतन भी महानेष्ठ होगा ॥
कही कोई रागों का यदि गीत गाए ।
तो पल भर भी उसको नहीं गुनगुनाना ॥
स्व बीणा के तारों में अपने स्वरों से ।
सहज बाँसुरी अपनी सबको सुनाना ॥

ॐ ह्री गोम्मटसार जीवकाडे सज्ञीसार्गणा प्ररूपणनाये अष्टदशम् अधिकारेसज्ञाअसज्ञविहीन जीवराज हराय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्री पर्याप्तकादिजीवजघन्यावगाहनविकल्परहितचैतन्यस्वरुपाय नमः।

ब्रह्मधामस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन मे अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिव पथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक २१

एकोनविंशतिम् अधिकार

श्री आहार मार्गणा प्ररुपणा पूजन

उदयावण्णसरीरोदयेण तद्देहवयणचित्ताणं ।

णोकम्मवग्गणाणं, गहणं आहारयं णाम ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं सूक्ष्मजीवाद्यवगाहस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।

निजानंदधामस्वरूपोऽहं ।

यह आहार प्ररूपणा उन्नीसवीं अधिकार ।
पूरा पूरा समझ लूँ मुझको नहीं अहार ॥

रोला

मुझको नहीं अहार निराहारी हूँ स्वामी ।
पूर्ण अनाहारक स्वभाव है अन्तर्यामी ॥
कर्माहार किया मैंने अब तक दुखदायी ।
ज्ञानाहार करूँ अब तो मैं ध्रुव सुखदायी ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम तिष्ठ ठः ठः स्थापन ।
ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्.

ॐ ह्रीं सूक्ष्मवायुकायिकलब्ध्यपर्याप्तकजघन्यावगाहनादिविकल्परहित चैतन्यस्वरूपाय नमः ।

ध्रुवोऽहं ।

श्री आहार मार्गणा प्ररूपणा पूजन

अष्टक

छंद दिग्पाल

रागादिभाव मुझको बेचैन कर रहे हैं ।
ये पुण्य पाप दोनों सुख चैन हर रहे हैं ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

शुभ अशुभ आस्रव को मैंने गले लगाया ।
संवर से ये हमेशा ही द्वेष कर रहे हैं ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अन्नाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदन नि.।

अब तक तो इनके वश में रहकर दुखी हुआमैं।
ये मेरा ज्ञानदर्शन गुण नित्य हर रहे है ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

कैसे इन्हें भगाऊँ अब तो प्रभो बताओ ।
मुझ मूढ़ से ये बिलकुल भी नहीं डर रहे है ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

संवर के संग आई अब निर्जरा अनूठी ।
ये कर्मबंध सारे इस बार झर रहे है ॥

चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि.।

आनंद अतीन्द्रिय की धारा अपूर्व आयी ।
दीपक प्रकाशवाले उर में उतर रहे हैं ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि।

परिणति स्वभाव वाली अब मुस्करा रही है ।
ध्यानाग्नि से ये आठों ही कर्म जल रहे हैं ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूप नि.।

सिद्धत्व फल मिला है चिन्ता नही है कोई ।
शुद्धात्म भावना के घन आज घिर रहे है ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि।

मैं शुद्ध बुद्ध चेतन हूँ सिद्धपुर का स्वामी ।
शत इन्द्र आज मेरा ही जाप कर रहे है ॥
चारों प्रकार के मैं आहार कर रहा हूँ ।
होकर के अनाहारी दुष्कार्य कर रहा हूँ ॥

ॐ ह्रीं आहार मार्गणा प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि।

ॐ ह्रीं अवगाहनासंख्यातभागवृद्धिस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानानंदस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

श्रद्धा आयी तो ज्ञान भी आया ।
शुद्ध चारित्र संग मुसकाया ॥
इसे सम्यक्त्व दशा कहते हैं ।
मोह मिथ्यात्व पूर्ण विघटाया ॥
संयमी भाव हृदय में जागा ।
मृत्यु का वक्त राग ने पाया ॥
अब कषायों के क्षय की बारी है ।
ये यथाख्यात यही बल लाया ॥
योगों का भी तो अंत करना है ।
अब तो निज सिद्ध पद भी दरशाया ॥

ॐ ह्रीं अदत्ताध्यभागवृद्धिप्रारंभरूपावगाहनरहितचैतन्यस्वरूपाय महाअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अचिन्त्योऽहं ।

जयमाला

छंद-रोला

औदारिक वैक्रियक अहारक त्रय शरीर हैं ।
नाम कर्म के उदय काल में सर्व जीव हैं ॥
समुद्‌घात चारों गति के जीवों को होती ।
सिर्फ केवली समुद्‌घात ही उत्तम होती ॥

एक वेदना द्वय कषाय तीजी वैक्रियक ।
मारणांतिक चऊ तेजस पन, छठी अहारक ॥
सप्तम केवलि समुद्घात केवलि करते है ।
अष्ट कर्मरज अंतिम समय पूर्ण हरते है ॥
मूलदेह को तजे बिना ही बाहर जाना ।
आत्म प्रदेशों का बाहर जा वापस आना ।
मात्र आठ समयों में यह सब हो जाता है ।
समुदघात यह जिन आगम में कहलाता है॥
ज्ञानशरीरी अब तो अपना ध्यान लगा तू ।
पंच शरीर जनक कर्मों को अभी भगा तू ॥

छंद-दिग्पाल

मोहादि भाव मेरा क्या कर सकेंगे अब ।
पाया है मैंने समकित मुझसे डरेंगे सब ॥
संसार का किनारा जिनका न हीं निकट है ।
वे ही तो मोह के घर जाते रहेंगे अब ॥
जीवत्व शक्ति जिनकी जाग्रत हुई सहज ही ।
वे भावमरण करके फिर क्यों मरेंगे अब ॥
कर्मों की कमर जिनने तोडी नहीं अभी तक ।
वे कर्म की प्रकृतियाँ कैसे हरेंगे अब ॥
जो श्रेणी चढ चुके है निज ध्यान लीन होकर ।
निश्चित ही सिद्धपुर में निज पग धरेंगे अब ॥

ॐ ह्रीं श्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे आहार मार्गणा प्ररूपणामये एकोनविंशतितम अधिकारे आहार मार्गणा रहित सत्स्वरूप श्री जिनराजेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं निरुपघातपरमात्मचित्स्वभावाय नमः

अनुपघातचित्स्वरूपोऽहं ।

श्री आहार मार्गणा प्ररूपणा पूजन

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

सिद्ध है प्रसिद्ध है विशुद्ध है महान है।
किन्तु संसार में बना दुखों की खान है।।
क्षुधारोग काम रोग ही दुखों का मूल है।
मोक्षमार्ग में यही महान क्रूर शूल है।।
पूजन के अष्टकों में यही दो प्रधान हैं।
शेष छहों गुणमयी महान हैं महान हैं।।
जीव षटकाय इन दो से परेशान है।
कर्म फल चेतना दुख भरा वितान है।।
ये नहीं तो जगत में दुख कभी होगा नहीं।
चार गति दुखमयी भ्रमण होगा नहीं
जीत जो इन्हें चुके वे ही भगवान हैं।
ज्ञानवान ध्यानवान अनंत गुणवान हैं।।

***

ॐ

पूजन क्रमांक २२
विंशतिम अधिकार

श्री उपयोग प्ररूपणा पूजन

वत्थुणिमित्तं भावो, जादो जीवस्स जो दु उवजोगो।
सो दुविहो णायव्वो, सायारो चेव णायारो ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं संख्यातभागवृद्धिस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।
स्वसौख्यस्वरूपोऽहं ।

यह अधिकार सुबीसवाँ जय जय गोम्मटसार ।
यह उपयोग सुमार्गणा जानूँ भली प्रकार ॥

छंद-रोला

एकमात्र शुद्धपयोग मेरा स्वभाव है ।।
यह अशुद्ध उपयोग सर्वथा ही विभाव है ॥
शुभ उपयोग समस्याओं से भरा हुआ है ।
स्वर्गादिक अरु भोग भूमि दुख भरा हुआ है ॥
तथा अशुभ उपयोग नर्क दुख का दाता है ।
एकमात्र शुद्धोपयोग ही सुख दाता है ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं संख्यातगुणवृद्धिप्रथमावगाहनस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः ।
आत्मानंदोऽहं ।

श्री उपयोग प्ररुपणा पूजन

अष्टक

छंद-दिग्वधू

एकान्तवाद नाशक प्रभु आप अनेकान्ती ।
मिथ्यात्व मोह क्षय कर नाशी है भव की भ्रान्ति ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

आए शरण तुम्हारी शत इन्द्र नमन करने ।
सयम की लब्धि पाने संसार ताप हरने ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसार ताप विनाशनाय चंदन नि. ।

हे स्याद्वाद नायक हे अस्ति नास्ति दायक ।
हे स्याद् के वक्तव्यी हे अवक्तव्य ज्ञायक ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

तुम भेद पंच दर्शन वसुअंग ज्ञान दाता ।
चारित्र पंच अधिपति समभाव के विधाता ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि. ।

दो तत्त्व सात बतला बतलाए नौ पदार्थ ।
छह द्रव्य कथन कीना सिद्धार्थ है परमार्थ ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

हैं कालतीन लेश्या षटकाय जीव वर्णन ।
पंचास्तिकाय कथनी चारित्र त्रयोदश धन ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

व्रत पांच समिति पांचों त्रयगुप्ति आदि वर्णन ।
आनंद घन स्वभावी चैतन्यराज धन धन ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म दहनाय धूपं नि. ।

श्रद्धान इनका सम्यक् उरधार कर दिखाया ।
यह मुक्ति मूल बतला सन्मार्ग शिव सिखाया ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ॐ ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

सम्पूर्ण सौख्य दाता आनंद के समुन्दर ।
हे कल्प वृक्ष चिन्तामणि कामधेनु गुणधर ॥
उपयोग तीन विध है शुद्धोपयोग पाऊँ ।
उपयोग शुभ अशुभ को सर्वथा भूल जाऊँ ॥

ह्रीं उपयोग प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं अवक्तव्यगुणवृद्धिस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनुपमस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-ताटंक

सम्यक् दर्शन की मशाल ले ज्ञान प्रकाश हृदय आया ।
मेरा जीवन हुआ तरंगित अब सम्यक्त्व स्वधन पाया ॥
आस्रव के भावों कों तजते ही संवर स्वधर्म पाया ।
कर्मबंध भी कटे स्वयं ही भाव निर्जरा लहराया ॥
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव निज समता सागर उर लाया ।
पा आनंद अतीन्द्रिय पावन सिद्ध स्वपद निज दर्शाया ॥
ज्ञानभाव को राग भाव को भिन्न भिन्न अनुभव कर लूँ ।
भासित कर भिन्नता हृदय में चहुँगति के संकट हर लूँ ॥
पारमार्थिक श्रुत अवलंबन से मिल जाता निष्काम स्वरूप ।
अन्त: करण शुद्ध होता है मिल जाता शिवमार्ग अनूप ॥
बोध बीज सम्यक्दर्शन पाने का ही पुरुषार्थ महान ।
ज्ञानभावना फल जाती है मिल जाता है पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं असंख्यातगुणवृद्धिप्रथमावगाहनस्थानरहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

सौख्यार्णवस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

जीवों का परिणाम विशेष उपयोग कहाता ।
अनाकार साकार भेद दो ही कहलाता ॥
मति श्रुत अवधि मन: पर्यय अरु केवल जानो ।
कुमति कुश्रुत कुअवधि तीन ये आठों मानो ॥
यह साकार उपयोग इसे तुम पूरा जानो ।
अनाकार उपयोग चार होते हैं जानो ॥
चक्षु अचक्षु अवधि केवल ये चारों मानो ।
एकमात्र शुद्धोपयोग ही सुखमय जानो ॥

अब शुद्धोपयोग में आजा तू ज्ञाता है ।
निज शुद्धपयोग ही तो शिव सुखलाता है ॥
एकमात्र शुद्धोपयोग ही संग जाएगा ॥
सादि अनंतानंत काल शिव सुख पाएगा ।

गंधकुटी

जो समकित न होता तो कुछ भी न होता ।
न अविरति ही जाती न संयम ही होता ॥
न शिवपथ की पावन पवन हमको मिलता ।
न शुद्धात्मा का सुदर्शन ही होता ॥
बिना शुद्ध भावों के हम करते भी क्या ।
न क्षय कर्म होता न शिवपद ही होता ॥
बिना भेद विज्ञान मुनिपद नहीं है ।
बिना मुनि बने कोई शिव भी न होता ॥
बिना लक्ष्य के ही भटक हम रहे है ।
बिना तत्त्व निर्णय न समकित भी होता ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे उपयोग प्ररूपणाधे विंशतिम अधिकारे दर्शन ज्ञानोपयोग स्वरूप जीवराज हंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं अवगाहनस्थानप्रमाणरहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

निरुपमस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

श्री अन्तर्भाव अधिकार पूजन

ॐ

पूजन क्रमांक २३

एकोविंशति अधिकार

श्री अन्तर्भाव अधिकार पूजन

गुणजीवा पज्जत्ती, पाणा सण्णा य मग्गणुवजोगो ।
जोग्गा परूविदव्वा, ओघादेसेसु पत्तेय ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं सर्वावगाहनस्थानगुणकारोत्पत्तिरहितचैतन्यस्वरूपाय नम

ज्ञानानंदस्वरूपोऽहं ।

दोहा

इक्कीसवां अधिकार है अन्तर्भाव सुनाम ।
गोम्मटसार महान को बारंबार प्रणाम ॥

रोला

अन्तर्भाव समझकर स्वामी निज में आऊं ।
शुद्ध भाव भावना सदा ही उर में भाऊं ॥
जो विभाव हैं उन्हें रसातल में ही पटकूँ ।
स्वर्गादिक साताओं में प्रभु कभी न अटकूं ॥
शुद्ध भाव का स्वामी होकर बना विभावी ।
निज आश्रय ले हो जाऊं परभाव अभावी ॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं मत्स्यरचनारहितचैतन्यस्वरूपाय नम.

स्वयंभूस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

वीर छंद

औपशमिक भावों के बिन तो धर्म नहीं प्रारंभ होता।
बिन क्षायोपशमिक के कोई भी छद्मस्थ नहीं होता॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

भाव परिणामिक के बिन कोई भी द्रव्य नहीं होता।
पंचम भाव पारिणामिक से शुद्ध मोक्ष सौख्य होता॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.।

सच्चा कारण धर्म कर्म का भाव औदयिक है जानो।
औपशमिक क्षायिक क्षयोपशम भाव मोक्ष कारण मानो॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि.।

भाव पारिणामिक न बंध का अरु न मोक्ष का कारण है।
जैसा है वह वैसा ही है त्रिकाल वर्ती ध्रुव धन है॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि.।

संसारी प्राणी पांचों भावों का स्वामी होता है।
मुक्त जीव क्षायिक व पारिणामिक का स्वामी होता है॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

मिथ्यात्वादिक चारों प्रत्यय भाव औदयिक अन्तर्गत ।
वे ही प्राणी इन्हें पालते जो रहते विभाव में रत ॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है ।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है ॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

अंक बिना जैसे बिन्दी का कोई मूल्य नहीं होता ।
वैसे सम्यक् दर्शन के बिन व्रत का मूल्य नहीं होता ॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है ।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है ॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

सत्स्वरूप दर्शिता प्राप्त होते ही होता है आनंद ।
सम्यक् ज्योतिर्मय स्वभाव का सूर्य जागता है आनंद ॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है ।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है ॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि. ।

चौथे गुण स्थान से सिद्धों तक है आत्म प्रतीत समान।
चौथे में आते ही तू भी अंतर में अरहंत महान ॥
अन्तर्भाव शुद्ध होते ही समकित निधि मिल जाती है ।
अन्तर्मन की बंद कली भी तत्क्षण ही खिल जाती है ॥

ॐ ह्रीं अन्तर्भाव प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं जीवसमासकुलसंख्यारहितचैतन्यस्वरूपाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्यकुलस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद-वीर

ज्ञान की बात समझने में क्यों नहीं आती ।
मात्र अज्ञानी की ही बात हृदय को भाती ॥

इसलिए भव समुद्र पार नहीं हो पाता ।
कोई तरणी भी मुझे पार नहीं ले जाती ॥
ज्ञान के यान उड़ा करते हैं चारों ही ओर ।
किसी भी यान की शोभा मुझे नहीं भाती ॥
मैं तो चिकना घड़ा हूं बूंद नहीं रुकती है ।
वज्र की बन गई अनादि से मेरी छाती ॥
आज सद्‌गुरु ने मुझे ज्ञान रथ दिया अनमोल ।
अब तो बस बन गया है वह मेरी सहज थाती ॥
इस पै चढ़ करके मैं संसार पार पाऊंगा ।
शुद्ध संयम की पवन चारों ओर से आती ॥

ॐ ह्रीं द्वीन्द्रियादिकुलसंख्यारहितचैतन्यस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

ज्ञानकुलस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद हरिगीत

प्रकृति ने उपहार षडऋतु का दिया संसार को ।
प्रफुल्लित हो गई नदियां संग लायी ज्वार को ॥
खेतियां लहलहा उट्ठीं तरु हुए पल्लवित सब ।
सूर्य ने रक्ताभ बांटा चंद्र ने रजताभ अब ॥
पर्वतों ने गीत गाए दिशाओं ने रंग नव ।
वायु सन सन चली झंझावात लाई क्रान्ति नव ॥
किन्तु मुनि तो निर्विकारी ध्यान में तल्लीन हैं ।
शुक्ल ध्यान महान पाने को स्वयं में लीन हैं ॥
दृष्टि निज पर स्वावलंबी लक्ष्य में ध्रुव धाम है ।
आत्मा में वास उनका उन्हें सतत प्रणाम है ॥
पृथ्वी जल अरु अग्नि वायु वनस्पति सब मग्न हैं ।
विभावी परिणाम ज्ञानी के स्वतः ही भग्न हैं ॥

दृष्टि में निज ज्ञान दर्शन अरूपी शुद्धात्म है ।
कर्म रज से दूर है परिपूर्ण है परमात्म है ॥

छंद गीतिका

तुम्हारे ही चरण में मुझको मिली है प्रभु शरण ।
भवोदधि से तारने को तुम्हीं हो तारण तरण ॥
भव विपिन में भटकता था भाग्य से तुम मिल गए ।
तुम्हारी ही सुछवि का मैंने किया है प्रभु वरण ॥
नहीं कोई भी मिला कल्याण जो सब का करे ।
तुम्हीं हो संसार तारक तुम्हीं हो शिव सुख करण ॥
चर्तुगति के दुख बहुत मैंने सहे हैं आप बिन ।
हो गया विश्वास मुझको तुम्हीं हो भव दुख हरण ॥
जब तलक शिव सुख न दोगे नहीं मानूंगा प्रभो ।
नही छोडूंगा तुम्हारे साथ में पावन चरण ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे अन्तर्भाव नामे एकोविंशति अधिकारे परभाव स्वरूप जीवराजहंसय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं पक्ष्यादिकुलसंख्यारहितचैतन्यस्वरूपाय नम

दर्शनकुलस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

पूजन क्रमांक २५
द्वाविंशति अधिकार

श्री आलापाधिकार पूजन

गोयमथेरं पणमिय, ओघादेसेसु वीसभेदाणं ।
जोजणिकाणालावं, वोच्छामि जहाकमं सुणह ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं सुरादिकुलसंख्यारहितचैतन्यस्वरूपाय नमः

ज्ञायककुलस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का बाईसवां अधिकार ।
यह आलाप अधिकार है भविजन को हितकार ॥
गोम्मटसार जीवकान्ड का यह अंतिम अधिकार ।
सब जीवों के पास है मोक्ष प्राप्ति अधिकार ॥

छंद रोला

भविजन को हितकार ज्ञान का यह सागर है ।
जो अवगाहन करता उसको गुण गागर है ॥
तत्त्व स्वरूप जानकर अब तो निज को ध्याऊं ।
जिन प्रवचन सुन भेद ज्ञान कर शिव सुख पाऊं ॥
जीव कान्ड को समझ सभी जीवों को मानूं ।
सिद्ध समान सदा ही सब जीवों को मानूं ॥
मैं अपना जीवत्व जानकर निज में आऊं ।
निज पुरुषार्थ जगाकर सिद्ध स्वपद निज पाऊं ॥

श्री आलापाधिकार पूजन

ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं ।
ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं सर्वजीवसमासकुलयुतिरहितचैतन्यस्वरूपाय नम:

अनंतगुणकुलस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

वीरछंद

ध्रुव चैतन्य तत्त्व के भीतर गुण अनंत है शक्ति अनंत ।
नव पदार्थ अरु सात तत्त्व अरु छह द्रव्यों से भिन्न समंत॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥

ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

सकल ज्ञेय तो व्यक्त किन्तु चैतन्य तत्त्व अव्यक्त अनूप।
निर्मल मलिन समल पर्यायों से है भिन्न ध्रौव्य चिद्रूप ॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥

ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

शुद्ध निरंजन निज स्वरूप है उपादेय है तीनों काल ।
दयादान व्रत भक्ति आदि तो राग भाव है हेय त्रिकाल॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥

ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

दृष्टि बहिर्लक्षी है जब तक तब तक है भव का जंजाल।
दृष्टि अन्तरोन्मुख होगी तो हो जाएगा पूर्ण निहाल ॥

संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥
ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं नि ।

निज भगवान आत्मा का दर्शन ही सुख का मूल महान।
धन संपत्ति राज्य वैभव तो पूर्ण हेय है धूल समान ॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥
ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

आत्म रत्न को छोड धूल के पीछे होता पागल जीव ।
जड़ संयोगों में ममत्व कर बना हुआ ज्यों होय अजीव॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥
ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

संयोगों से मत घबरा तू संयोगी भावों को छोड़ ।
ले स्वभाव का साधन निज सिद्धत्व भाव से नाता जोड़॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥
ॐ ह्रीं आलापाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

एक देश ही उपादेय है संवर अरु निर्जरा प्रसिद्ध ।
सर्वदेश निज उपादेय ध्रुव तू है बना बनाया सिद्ध ॥
संसारालापों से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥
ॐ ह्रीं आलापाधिकारे प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

हेय जान आस्रव को तज दे कर्मबंध का सत्त्व विनाश।
तेरे भीतर भरा हुआ है अमित अनादि अनंत प्रकाश ॥

ज्ञाता दृष्टा ज्ञायक अपना एक मात्र है शुद्ध स्वरूप ।
गुण अनंत महिमा से मंडित शुद्ध आत्मा है चिद्रूप ॥
संसारातापो से मुझको बचना होगा प्रभु प्रतिपल ।
निज स्वभाव की छवि मुझको रचना होगी स्वामी उज्जवल॥

ॐ ह्रीं आलापाधिकारे प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं पर्याप्तिप्ररूपणारहितपरिपूर्णस्वरूपाय नमः ।

पूर्णानंदस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद मरहठा माधवी

आज मिली है निमिष मात्र में महिमा सम्यक् ज्ञान की।
भेदज्ञान विज्ञान पूर्वक आत्म तत्त्व श्रद्धान की ॥
गला मोह का पर्वत हिमसम परभावों की डूबी नाव ।
संयम तरणी मैंने पायी ह उत्तम निर्वाण की ॥
चला स्वरूपाचरण संग में तो सम्यक्त्वाचरण मिला ।
फिर पर्याय शुद्ध हो गयी गरिमा देखो ज्ञान की ॥
राग द्वेष हो गए तिरोहित जीवन्मुक्त दशा पायी ।
देह मुक्त होने की बेला आयी ध्रुव कल्याण की ॥

ॐ ह्रीं पर्याप्तिस्वामिरहितपरिपूर्णस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वपरमेश्वरस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद रोला

ये प्ररुपणा बीस जिनागम से पहचानो ।
सामान्य अरु पर्याप्ति अपर्याप्ति को जानो ॥
ये तीनों आलाप जानकर निज को जानो ।
गुण स्थान मार्गणा आदि सबको पहचानो ॥

इन्द्रिय गति अरु योग कषाय काय सब जानो ।
प्राण भव्य संयम संज्ञा संज्ञी सब मानो ॥
जीव समास जानकर अपना जीव पिछानो ।
गुणस्थान से ही अतीत होना है मानो ॥
सबसे पहिले उपशम समकित आवश्यक है ।
फिर क्षयोपशमिक समकित ही आवश्यक है ॥
फिर क्षायिक सम्यक् दर्शन पाना उत्तम है ।
सादि अनंतानंत काल रहता बिन श्रम है ॥
क्षायिक बिन कैवल्य ज्ञान मिलना दुर्लभ है ।
केवलज्ञान बिना तो शिव पद भी दुर्लभ है ॥

छंद [illegible]

ज्ञान ध्यान भव विराग में सदैव सावधान ।
एक बार दृष्टि में महान शुद्ध आत्म ज्ञान ॥
राग से हैं बहुत दूर आत्म ध्यान में सुलीन ।
वासना का नाम नहीं शुद्ध भावना प्रधान ॥
घातिया विनाश का यत्न करेगा सफल ।
आत्म बल से प्राप्त करेगा ये कैवल्य ज्ञान ॥
आत्म तत्त्व की महान शक्ति प्रगट हो गई ।
सिद्ध स्वपद पाएगा ये त्रिलोकाग्र में महान ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार जीवकाण्डे [illegible] अधिकारे [illegible] रहित [illegible] जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं शरीरनामकर्मरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नमः

[illegible] ।

[illegible]

अज्जज्जसेण-गुण समूह—संधारि अजिय सेण गुरु ।
भुवन-गुरु जस्स गुरु, सो राओ गोम्मटो जयउ ॥

[illegible]

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र - जीवकान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय नमः

तुम्हें जिन राजभर के स्वयं आवाज देते है।
तुम्हारा मोह भ्रम हरते तुम्हें निजराज देते है॥
मगर तुम्हारे से हतभागी वारुणी मोह की पीते।
तुम्हें सत् पथ बताने को तुम्हें गोदी में लेते हैं॥
बिठा संयम की तरणी पर तुम्हें भव पार ले जाते।
तुम्हारी भावतरणी वे स्वयं हाथों से खोते है॥
चलो जिनवर के पथ पर यदि परम कल्याण हो जाए।
जिनागम हो कि परमागम यही संदेश देते है॥

***

विषयों का जहर पीकर भरता रहा अब तक।
अमृत के घट को तजकर विषघटन करूंगा॥
डूबा था भवोदधि में अब होकर मैं आया हूं।
अपने ही बल से अब तो संसार वरूंगा॥

***

पूजन क्रमांक २५

कर्मकान्ड द्वितीय खंड

श्री गोम्मटसार कर्मकान्ड पूजन

गाथाएँ नौ सौ बहात्तर कर्म कान्ड लो जान ।
नेमिचंद्र आचार्य की कृपा भव्य गतिमान ॥

पणमिय सिरसा णेमिं, गुणरयणविभूसणं महावीरं ।
सम्मत्तरयणणिलयं, पयडिसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥१॥

स्थापना

ॐ ह्रीं पर्याप्तिनिर्वृत्यपर्याप्तकालविभागरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नमः
ज्ञानदेहस्वरूपोऽहं ।

दोहा

कर्म कान्ड पहिचान कर बंद करूं भव द्वंद ।
खोलूं एक मूहूर्त में द्वार मोक्ष के बंद ॥
कर्म वृक्ष के मूल को नष्ट करूं मैं आज ।
ले निष्कर्म स्वभाव को पाऊं निज पद राज ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं कर्मकान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं कर्मकान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं लब्ध्यपर्याप्तकस्वरूपरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नमः ।
निजदेहस्वरूपोऽहं ।

श्री गोम्मटसार कर्मकाण्ड पूजन

अष्टक

छंद ताटंक

ज्ञान भाव जल की गगरी दो अन्तर्मन को नहलाऊं ।
जन्म जरा युत मृत्यु रोग को नष्ट करूं निज सुख पाऊं ॥
कर्म कान्ड को पढूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूं सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

ज्ञान भाव चंदन सम्यक् दो निज मस्तक पर तिलक करूं।
ज्वर संसार विनष्ट करूँ मैं शीतल शान्त स्वभाव वरूं॥
कर्म कान्ड को पढूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूँ सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदन नि ।

ज्ञान भाव अक्षत गुण लाऊँ अक्षय पद को प्राप्त करूं।
पद अखंड की महिमा पाऊँ शिव सुख उर में व्याप्त करूं॥
कर्म कान्ड को पढूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूँ सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

ज्ञान भाव के पुष्प सजाऊं काम भाव संपूर्ण हरूं ।
महाशील गुण का सागर पा उसमें ही विश्राम करूं ॥
कर्म कान्ड को पढूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूं सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

ज्ञान भाव नैवेद्य सजाऊँ अन्तर्मन को तृप्त करूं ।
क्षुधारोग सम्पूर्ण नष्ट कर आशा तृष्णा सर्व हरूं ॥
कर्म कान्ड को पढूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूं सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

ज्ञान भाव के दीप उजेरूँ मिथ्या भ्रम तम नष्ट करूं ।
मोह दुष्ट को एक बार में अंतरंग से भ्रष्ट करूं ॥
कर्म कान्ड को पढ़ूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूँ सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

ज्ञान भाव की धूप सुगंधित लाऊँ कर्म विनाश करूं ।
शुक्ल ध्यान की परम शक्ति पा निर्मल आप्त प्रकाश वरूं॥
कर्म कान्ड को पढ़ूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूँ सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

ज्ञान भाव के फल प्रभु पाऊँ अपना मोक्ष निवास वरूं ।
त्रिलोकाग्र के शीष विराजूँ आत्मत्व विकास करूं ॥
कर्म कान्ड को पढ़ूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूँ सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

ज्ञान भाव के अर्घ्य चढ़ाऊँ पद अनर्घ्य अपना पाऊं ।
सिद्धपुरी में सदा विराजूँ फिर न लौट भव में आऊँ ॥
कर्म कान्ड को पढ़ूँ कर्म क्षय हेतु नाथ ऐसा बल दो ।
अष्टकर्म सम्पूर्ण क्षय करूँ सम्यक् दर्शन निर्मल हो ॥

ॐ ह्रीं कर्म कान्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं जन्ममरणकालप्रमाणरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नमः ।

अमूर्तिकस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

दृष्टि को बदलते रहे है सदैव हम ।
इसलिए न जा सका है अंतर का तम ॥

मोह मद्य पान करके हम दुखी हुए ।
स्वर्ग प्राप्त करके भी न हम सुखी हुए ॥
देह संसार भोग से ममत्व कर ।
अनादिकाल से ही नाथ दुखी हुए है हम ॥
इसलिए भटकते रहे है सदैव हम ।
राग में अटकते रहे हैं सदैव हम ॥
आत्म तत्त्व से सदैव मूर्छित रहे ।
अनात्मा में हम सदैव जाग्रत रहे ॥
विभाव भाव से ही सदा मित्रता रही ।
वासना के जाल में ही समर्पित रही ॥
भव भंवर में डूबते रहे सदैव हम ।
शुद्धात्मा से दूर रहे हैं सदैव हम ॥
अब क्या करें बताओ हमें जाएं हम कहाँ ।
अपना स्वरूप ज्ञानमयी पाएं हम कहाँ ॥
अंतरंग में तो राग द्वेष भरा है ।
वीतरागता बताओ पाएं कहां हम ॥
दिव्य ध्वनि के बोल भी सुनते रहे हैं हम ।
किन्तु फिर भी मोह में जमे रहे हैं हम ॥
उपादान के बिना अंधे रहे हैं हम ।
कर्म के निमित्त में सोते रहे हैं हम ॥

ॐ ह्रीं जन्ममरणकालप्रमाणरहितपरिपूर्णस्वरूपाय महार्घ्यं नि. ।

अमृतचित्स्वरूपोऽहं ।

जयमाला

गोम्मटसार महानग्रंथ करुणानुयोग का सागर है ।
यह विधान लघु उस सागर की ही नन्हीं सी गागर है॥
काल कठिन है समय नहीं है कौन पढ़े महाग्रंथ विशाल।
इसीलिए यह विधान रचना छोटी सी की है इस काल॥

चारों अनुयोगों का ज्ञान दिया जाता है जिन मत में।
अनुयोगों का सार आत्म अनुभव बतलाया जिनमत में॥
पहिले मिथ्यातम को नाशो जो है मुख्य बंध कारण।
फिर आत्मानुभूति होती है अनुभवमयी मोक्ष कारण॥
मिथ्यातम का दोष नाश कर दोष रहित होते श्रावक।
फिर निज से परिचय करके अनुभूति आत्म करते श्रावक॥
अगर प्रशंसा करना है तो सिद्धों की ही करना तुम।
यदि निंदा करना है तो अपनी निन्दा ही करना तुम॥
आस्रव तत्त्व हेतु यदि पूजन वीतराग की करते हो।
तो संसार वृद्धि का उपक्रम पूरा पूरा करते हो॥
चाहे जितना पुण्य करो मिथ्यात्व नहीं होता उज्ज्वल।
ज्यों कोयला सूक्ष्म चूर्ण करने पर कब होता उज्ज्वल॥
ज्यों कोयला अग्नि में जल जल हो जाता है पूरा लाल।
त्यों मिथ्यात्व आत्मश्रद्धा में जलता आता समकित काल॥
कुन्दकुन्द आम्नाय मध्य मिथ्यात्व अकिंचित्कर न कभी।
केवल यह सत्तर कोड़ा कोड़ी सागर का बंध सभी॥
जब मिथ्यात्व अकिंचित्कर है तो फिर उससे भय क्यों हो।
फिर समकित की क्या आवश्यकता है बोलो निर्भय हो॥
चारों अनुयोगों में है मिथ्यात्व नाश का प्रभु उपदेश।
नाम मात्र का जैनी भी कहता मिथ्यात्व बंध का वेश॥
जो मिथ्यात्व अकिंचित्कर कहते उससे नहीं कभी डरते।
करते निज मिथ्यात्व सुदृढ़ अपना सम्यक् दर्शन हरते॥
बड़े-बड़े आचार्यों ने इस पर कितने अधिकार लिखे।
बंध हेतु बतलाया इसको भोले प्राणी कौन दिखे॥
कुन्दकुन्द या उमा स्वामि हों पूज्यपाद या अमृतचंद्र।
नेमिचंद आचार्य सभी कहते मिथ्यात्व बंध का द्वंद॥

अत: कभी मिथ्यात्व अकिंचित्कर न भूल से भी मानो।
नरभव पाया है तो इसके क्षय का उपक्रम उर आनो॥
मानो या ना मानो भाई अपनी अपनी मरजी है।
आचार्यों की वही मानता जो कि मोक्ष का गरजी है॥
जिनाराधना का सम्यक् फल निजाराधना ही सुखरूप।
जिनाराधाना यदि इच्छायें पूर्ति हेतु है, तो दुख रूप॥
ज्ञानी को साधर्मी से वात्सल्य नहीं तो ज्ञानी कब।
साधर्मी से वात्सल्य है तो फिर वह अज्ञानी कब॥
बिन द्रव्यानुयोग के तीनों ही अनुयोग अपूर्ण सदा।
हैं चारों अनुयोग काल के जैनधर्म का सार सदा॥
मंगल गोम्मटसार शास्त्र की पूजा कर उद्देश समझ।
कर्मकान्ड से रहित अवस्था पाकर अब तो सुलझे सुलझ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार कर्मकान्डे भावकर्म द्रव्यकर्म नोकर्म रहिताय पदशुद्धस्वरूपाय जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि।

ॐ ह्रीं शाश्वतैक चित्स्वभावाय नम:।

निष्कर्मस्वरूपोऽहं

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं॥
नेमिचंद सिद्धान्त दे आशीर्वाद है।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है॥
इसीलिए शिव फल पाया है मैंने स्वामी।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी॥

इत्याशीर्वाद:

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान उत्तरार्ध

पूजन क्रमांक २६

कर्मकाण्ड प्रथम अधिकार

श्री प्रकृति समुत्कीर्तन पूजन

णमिऊण णेमिचंदं, असहायपरक्कमं महावीरं।
बंधुदयसत्तजुत्तं, ओधादेसे थवं वोच्छं ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं क्षुद्रभवरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नमः
महादेवस्वरूपोऽहं ।

पणमिय सिरसाणेमिं, गुण रयण विभूसणं महावीरं ।
सम्मत्त रयण णिलयं, पयडिस मुक्कित्तणं वोच्छं ॥

दोहा

गोम्मटसार महान का कर्म कान्ड है सार ।
प्रकृति समुत्कीर्तन प्रथम अनुपम है अधिकार ॥

छंद रोला

प्रकृति समुत्कीर्तन को जानूं बडे प्रेम से ।
जुड़ जाऊं कल्याण हेतु निज नित्य नेम से ॥
निज स्वभाव से बिना जुड़े कल्याण न होगा ।
बंध प्रक्रिया जाने बिन निज ज्ञान न होगा ॥
कर्मों का अवसान अगर तुमको करना है ।
कर्म प्रकृतियां सारी की सारी हरना है ॥
तो तुम अपने निज स्वभाव का ज्ञान करो रे ।
सकल मैं कर्म रज निमिष मात्र में अभी हरो रे॥

श्री प्रकृति समुत्कीर्तन पूजन

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर सवौष्ट् ।

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठ स्थापनं ।

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं वर्णपदवाक्यादिविकल्प रहित चित्स्वभावाय नमः ।

निर्विकारचित्स्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद पंचचामर

जल तरंग बज रही है ज्ञानमयी भाव की ।
पायी है मैने आज महिमा स्वभाव की ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

भूला था पर घर मे अनात्मा के मोह से ।
आगयी आज घडी राग के अभाव की ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्री कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

दर्शनी मृदंग की द्रुम द्रुम अपूर्व है ।
अंतिम है वेला इस जर्जर विभाव की ॥
बिगड़ी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

आत्म ध्यान वीणा के स्वर गूंजे मौन मयी ।
चर्चा है त्रिभुवन में मात्र शुद्ध भाव की ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

बहुत बार भूला हूं शिवपथ के पाने में ।
अबकी सफलता मिली इस अंतिम दावकी ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि. ।

समकित युत संयम ही शिव सुख का स्रोत है ।
औषधि मिली है आज कर्मो के घाव की ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

काल लब्धि लेकर के आयी है भेदज्ञान ।
सुध बुध सब बिसरी है अबतो पर भाव की ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खंड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनासनाय धूपं नि. ।

दर्शन के संग शुद्ध ज्ञान आज नाचता ।
महिमा त्रिलोक में है एक ज्ञान भाव की ॥

बिगड़ी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

शुद्ध आत्मा का रूप दर्शनीय वन्दनीय ।
त्रिभुवन में गूंज रही जय जय स्वभाव की ॥
बिगडी है आज द्युति देखो विभाव की ।
वेला भी आयी है कर्म के अभाव की ॥

ॐ ह्रीं कर्मकान्ड द्वितीय खड प्रकृति समुतत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियलब्ध्यपर्याप्तकस्वामिभेदरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नम ।

ज्ञानदेवस्वरूपोऽहं ।

महार्घ्य

मत्त सवैया

चेतन जब निज में आता है सौन्दर्य सहज मुसकाता है।
जब ज्ञान की महिमा आती है दर्शन भी स्वत. आ जाता है ॥
निज पर का भेद जान लेता उपशम उर में हर्षाता है ।
चारित्र स्वरूपाचरण तभी अंतर मे आ लहराता है ॥
तज कर अनात्मा की संगति चेतन शिवपथ पर आता है ।
खेते खेते सयम तरणी निज यथाख्यात पा जाता है ॥
कर्मो का महल ध्वस होता संसार हार सब जाता है ।
तब सिद्धपुरी में सिद्ध वधू का वैभव चेतन पाता है ॥

ॐ ह्रीं केवलिसमुद्‌घातरहितपरिपूर्णस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वपुस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

सोरठा

गोम्मटसार महान बंध नाश के हेतु है ।
करो बंध का ज्ञान फिर उपाय क्षय का करो ॥
है अनादि संबंध जीव कर्म का जानिये ।
दुग्ध नीर सम जान प्रथक प्रथक इनको करो॥
जीव अमूर्तिक शुद्ध कर्म मूर्तिक पुदगली ।
रूप गंध रस पर्श शब्द रहित चेतन सदा ॥
गोम्मटसार प्रसिद्ध नेमिचंद्र आचार्य कृत ।
आत्म ज्ञान के हेतु प्रकृति समुत्कीर्तन पढो ॥
पंच प्रकार शरीर कार्माण सब से प्रबल ।
शुक्ल ध्यान के मध्य इसको अभी जलाइये ॥

छंद ताटंक

प्रकृति तीर्थंकर भी करती जीवों का कल्याण नहीं ।
जब तक तीर्थंकर हैं तब तक होता है निर्वाण नहीं ॥
जो सर्वार्थ सिद्धि देव हैं उनसे उत्तम देशव्रती ।
व्रत धारण में सुर अक्षम हैं हो सकते हैं नहीं व्रती ॥
भाव मरण से द्रव्य मरण तक विविध प्रकार मरण जानो।
किन्तु समाधि मरण अरु पंडित पंडित मरण श्रेष्ठ जानो॥
इनकर्मों का संग दुखमयी भवमय पीड़ा देता है ।
पलभर को भी किसी जीव को चैन न लेने देता है ॥
आत्मा ने इस भव में रहकर समय समय सब कुछ पाया।
किन्तु आज तक शुद्ध धर्म का अंश एक भी ना पाया ॥

विद्या ज्ञान ध्यान शील तप जिसने कभी नहीं पाया ।
वह पशुओं से भी निकृष्ट है क्यों मनुष्य भव यह पाया॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार कर्मकाण्डे प्रकृति समुत्कीर्त्तननामे प्रथम अधिकारे निष्कर्म स्वरूप जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं लब्ध्यपर्याप्तकजीवप्रथमगुणस्थानविकल्परहितपरिपूर्ण स्वरूपाय नम ।

परमपूतोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पद दीपाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

कभी तो मिलेगा कहीं तो मिलेगा मुझे शुद्ध संवर।
शुभाशुभ के भावों से रहित ज्ञान निर्भर।।
तभी निर्जरा की पवन चल पड़ेगी।
विविध भाव आस्रव में ये ना अड़ेगी।
महासिद्धि होगी सकल कर्म को हर।।
निजातम की महिमा प्रकट हो मिलेगी
परम सिद्ध पदवी हृदय में खिलेगी
मेरी मुक्ति होगी बहुत शीघ्र सत्वर।।

***

ॐ

पूजन क्रमांक २७

कर्मकान्ड द्वितीय अधिकार

श्री बंधोदय सत्त्वाधिकार पूजन

(प्रकृति प्रदेशी स्थिति अनुभाग)

तित्थाहारा जुगवं, सव्वं तित्थं ण मिच्छगादितिए ।
तस्सत्तकम्मियाणं, तग्गुणठाणं ण संभवदि ॥

स्थापना

१३१ ॐ ह्रीं सासादनादिगुणस्थानरहितपरिपूर्णस्वरूपाय नम ।
सहजस्वदेवरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का कर्म कान्ड अधिकार ।
यह दूजा अधिकार है अष्टकर्म आधार ॥

छंद रोला

बंधोदय सत्त्वाधिकार को पूरा जानो ।
प्रकृति प्रदेश स्थिति अनुभाग बंध को जानो ।
प्रकृति बंध को जान प्रकृति कर्मों की हरना ।
बंध प्रदेश जानकर बंध प्रदेश न करना ॥
स्थिति बंध सदा जानो तुम जाग्रत होकर ।
स्थिति बंध न करना पर में मोहित होकर ॥
दुखदायी अनुभाग बंध से बचो सजग हो ।
कर्म सत्त्व सब जान रहो तुम सदा अलग हो ॥

ॐ ह्रीं बंधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं बंधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं बंधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

१३२ ॐ ह्रीं द्रव्यभावप्राणरहितबोधप्राणाय नम·

अनंतशक्तिप्राणस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद गीतिका

चेतना है कर्म की तो कुगतियों का बंध है ।
कर्मफल चेतना है तो जीव पूरा अंध है ॥
सत्त्व बधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्री बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

चेतना है जीव की तो जीव पूर्ण अबंध है ।
ध्रुव त्रिकाली शाश्वत शिव सौख्य सिंधु अद्वद है ॥
सत्त्व बधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्री बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चदन नि ।

मुक्ति पथ की रीत से मैं बे खबर हू आज तक ।
आत्मा की प्रीत से मै बेखबर हूं आज तक ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्री बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

शुद्ध आत्म प्रतीत को अब तक कभी जाना नहीं ।
ज्ञान उपवन है हृदय में यह कभी माना नहीं ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्री बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्प नि. ।

ली नहीं गंगोत्री चारित्र की भी आज तक ।
इसलिए संसार में ही भ्रम रहा हूँ आज तक ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्रीं बंधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

भक्ति रत्नत्रयी मैंने कभी भी पायी नहीं ।
गागरी अनुभव स्वरस की भी कभी भायी नहीं ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्रीं बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीप नि.।

पुण्य भाव प्रशस्त भावों से हुआ ना त्रस्त है ।
इसलिए शुद्धात्मा का सूर्य उसका अस्त है ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्रीं बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

प्रथम तीव्र कषाय करके पाप सर पर चढ़ाए ।
द्वितिय मंद कषाय करके पुण्य बहुत बढ़ाए ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्रीं बधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

स्वर्ग की ही कामना से शुभ क्रिया में व्यस्त है ।
शुद्ध भावों से बहुत ही दूर है अस्वस्थ है ॥
सत्त्व बंधोदय समझकर क्षय करूं मैं बंध भाव ।
बंध क्षय में पूर्ण सक्षम जीव का निज ध्रुव स्वभाव ॥

ॐ ह्रीं बंधोदय सत्त्वाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं मनोबलादिप्राणरहितबोधप्राणाय नमः ।

निजबलप्राणस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

कर्म से बंध हुआ करता है ।
ज्ञान ही कर्म बंध हरता है ॥
अज्ञानी कर्म वश हो रहता है ।
इसलिए दुख अनंत सहता है ॥
पाप का ही समुद्र भरता है ।
कर्म से बंध हुआ करता है ॥
पुण्य करके ही पाता है साता ।
पर असाता में वह बदल जाता ॥
फिर निगोदों के मध्य गिरता है ।
कर्म से बंध हुआ करता है ॥
ज्ञान का बल जो प्राप्त करता है ।
आत्म श्रद्धान व्याप्त करताा है ॥
कर्मो का बंध सर्व झरता है ।
फिर नहीं बंध हुआ करता है ॥

ॐ ह्रीं वीर्यान्तरायक्षयोपशमरहितबाधप्राणाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनंतवीर्यस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

वीरछंद

मूल कर्म की प्रकृति आठ है इकशत अडतालीस विशेष।
ज्ञानावरण दर्शनावरणी वेदनीय मोहनीय विशेष ॥

आयु नाम अरु गोत्र तथा है अंतराय बंधन जानो ।
मोह आवरण दर्शन मोह महा दुखदायक है मानो ॥
दर्शन आवरणी की नौ हैं ज्ञानावरणी की हैं पांच ।
मोहनीय की अट्ठाईस हैं अंतराय की भी हैं पांच ॥
आयु कर्म के चार भेद हैं गोत्र कर्म के दो हैं भेद ।
नाम कर्म के तिरानवें है वंदनीय के भी दो भेद ॥
ये ही उत्तर प्रकृति कर्म की इकशत अड़तालीस प्रधान।
नर भव पाया है तो चेतन कर लो अब इनका अवसान॥
पुण्य प्रकृतियां अडसठ जानो पाप प्रकृतियां इकशत जान ।
बीस प्रकृतियां पाप पुण्यमय हो जाती है उन्ही समान ॥
पाप प्रकृतियां स्वभाव घातक पुण्य प्रकृति भी घातक हैं।
ये सब मिलकर महाशक्ति से मोक्षमार्ग में बाधक हैं ॥
बज्र वृषभ नाराच संहनन पाना भी तो वश में है ।
फिर समकित पूर्वक संयमधर क्षय करना भी वश में है॥
वर्ण गंध रस स्पर्श रहित तुम पूर्ण अतीन्द्रिय महिमावान।
निज स्वभाव साधन के बल से पा सकते हो तुम निर्वाण॥
सर्व घाति तो चार कर्म है देशघाति भी तो हैं चार ।
सर्वघाति की इक्कीस, छब्बीस देश घाति की करो विचार॥
सत्ता में सब विद्यमान है उदय अल्प का होता है ।
जो इन सबको क्षय कर देता वही मुक्ति पति होता है ॥
अनंतानुबंधी जब तक है तब तक प्रभु सम्यक्त्व नहीं ।
अप्रत्याख्याना वरणी जब तक कोई व्रत हृदय नहीं ॥
प्रत्याख्याना वरणी यदि है तो संयम का नाम नहीं।
जब तक है संज्वलन घातिया का होता अवसान नहीं॥

प्रकृति प्रदेश स्थिति बंध अनुभाग बंध चारों जानो ।
प्रकृति प्रदेश स्थिति अनुभाग भी भिन्न भिन्न हैं पहचानो॥
पहिले गुणस्थान में होता सबसे अधिक कर्म का बंध ।
चौदहवें में कभी न होता किसी कर्म का कोई बंध ॥
कौन कौन से गुणस्थान में कितना कितना होता बंध ।
कौन कौन से गुण स्थान में कितना क्षय होता है बंध ॥
यह सब गोम्मटसार ग्रंथ पढ भली भांति से लो तुम जान।
अथवा अनंतनाथ पूजन में पूजांजलि ले लो सब जान॥
फिर कर्मो को क्षय करने का दृढ़ निश्चय लो उर में ठान।
बिना कर्म क्षय किए नहीं होगा तुमको शिव सुख सम्मान॥
अंतर्मुहूर्त से ले सत्तर कोडा कोडी सागर स्थिति बंध ।
यह सामान्य कथन है थिति का भेद प्रभेद अनेको द्वंद॥
सादि बध को भी तुम जानो तथा जान लो अध्रुव बंध।
मिथ्या भ्रम के कारण ही तुम बने हुए हो अब तक अंध॥
उदय सत्त्व अरु उदीरणा संकर्षण अपकर्षण जानो ।
जैसे भी हो इन कर्मो की सर्व प्रकृति क्षय कर मानो ॥
इन कर्मो का सत्त्व असत्त्व जान इनका अवसान करो।
जब तक इन का सत्त्व तभी तक दुख के हित आह्वान करो॥

ॐ ह्री गोम्मटसार कर्मकाण्डे बधोदय सत्ताधि कारनामे द्वितीय अधिकारे अवेध स्वरूप जीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

१३५ ॐ ह्री प्राणस्वामिभेदरहितबोधप्राणाय नम.

सत्ताप्राणस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

चित्र विचित्र चरित्र जीवका जिनवाणी वर्णन करती है।
अध निगोह से होता है प्रारम्भ मोक्षगति इसकी इति है॥
कभी चक्रवर्ती हो जाता।
कभी देवपद भी मिल जाता॥
चारोगति में भ्रमता रहता होती निज स्वभाव की क्षति।
अब सम्यक दर्शन पा जाता॥
मोक्ष मार्ग पर यह आ जाता।
मोक्ष पूर्ण होने पर मिल ही जाती पंचम गति है।

***

आनंद के समुद्र में सुस्नान करूंगा।
भवभार त्वरित सादा परिपूर्ण हरूंगा॥
दृष्टि हटा विभाव से मै अब नहीं डोलूंगा।
ज्ञायक स्वभाव अपना उर मध्य धरूंगा॥

***

ॐ

पूजन क्रमांक २८

कर्मकान्ड तृतीय अधिकार

श्री सत्त्वस्थान भंगाधिकार पूजन

णमिऊण वड्ढमाणं, कणयणिहं देवरायपरिपुज्जं ।
पयडीण सत्तठाणं, ओघे भंगे समं वोच्छं ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं प्राणसंख्यारहितबोधप्राणाय नम.

अभेदचैतन्यप्राणस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का कर्म कान्ड अधिकार ।
यह तीजा अधिकार है महिमा अपंरपार ॥

छंद रोला

सत्त्वस्थान भंगाधिकार को स्वामी जानूं ।
कर्मो की सत्ता को स्वामी दुखमय मानूं ॥
मोक्षमार्ग में उपशम से कुछ काम न होता ।
कर्मो की सत्ता क्षय बिन ध्रुवधाम न होता ॥
कर्मो की सत्ता क्षय का ही यत्न करो तुम ।
आत्म शक्ति से अब तो अपनी लग्न करो तुम॥

ॐ ह्री सत्त्वस्थान भगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्री सत्त्वस्थान भगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ: स्थापनं।
ॐ ह्री सत्त्वस्थान भंगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं आहारभयादिसंज्ञारहितनिरपेक्षस्वरूपाय नम.

निस्पृहस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद-मानव

चेतन तुम थक त्रम जाना शिव पथ पर चलते चलते।
थोड़ा सा समय लगेगा कर्मों को गलते गलते ॥
कर्मों का सत्त्व विनाशूं निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भंगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

भव भव से संचित सारे ही कर्म हुए एकत्रित ।
थोड़े श्रम बिन्दु गिरेंगे इन सबको दलते दलते ॥
कर्मों का सत्त्व विनाशूं निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भंगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि ।

मोहादि भावना ने ही लूटा है हमें सदा से ।
बीते हैं काल अनंतो चेतन को छलते छलते ॥
कर्मों का सत्त्व विनाशूं निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भंगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

शिव तरु का बीज मनोहर केवल सम्यक् दर्शन है ।
शाश्वत शिवसुख पाओगे शिव तरु के फलते फलते ॥
कर्मों का सत्त्व विनाशूं निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भंगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि.।

सिद्धों ने यही किया है हमको भी करना होगा ।
अन्यथा कष्ट पाओगे चहुँगति में जलते जलते ॥
कर्मो का सत्त्व विनाशूँ निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

आनंद अतीन्द्रिय धारा स्वयमेव आज आयी है ।
आनंद पूर्ण पाओगे इसके संग चलते चलते ॥
कर्मो का सत्त्व विनाशूँ निष्कर्म अवस्था पाऊ ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीप नि. ।

लो द्वार खुले शिवपुर के पावन शिव सरि उमडा है ।
अन्मुहूर्त्त लगता है शिव तरु को फलते फलते ॥
कर्मो का सत्त्व विनाशूँ निष्कर्म अवस्था पाऊ ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

ध्वनि गूंज रही जिनवर की ध्रुवधामी निज अंतर में ।
अस्वस्थ हो गया हूं मैं रागों में पलते पलते ॥
कर्मो का सत्त्व विनाशूँ निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्त्वस्थान भंगाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

सर्वोच्च तत्त्व शुद्धातम अब प्रगट हुआ अंतर में ।
भव दो भव और लगेंगे रागों को टलते टलते ॥
सध्या सिंदूर लुटाने आतुर है इस चेतन पर ।
सन्मार्ग आज पाया है जीवन के ढलते ढलते ॥

कर्मों का सत्व विनाशूं निष्कर्म अवस्था पाऊं ।
ज्ञायक स्वभाव की महिमा निज अंतरंग में लाऊं ॥

ॐ ह्रीं सत्कल्याण मंगाधिकार प्रत्यक्ष श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं आहारसंज्ञोत्पत्तिकारणरहितनिरपेक्षस्वरूपाय नमः ।

निराहारोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

राग की माधुरी ने लूट लिया ।
चारों गतियों में दुख अटूट दिया ॥
मत्त गज बन विवेक को छोड़ा ।
राग द्वेषों को हमने साथ लिया ॥
जितने भी थे अभक्ष्य सब खाए ।
दारुणी विषमयी का पान किया ॥
ज्ञान की बात भी नहीं मानी ।
पर में करके ममत्व पाप किया ॥
आंख है बंद बुद्धि है दूषित ।
मोह मिथ्यात्व में सदैव जिया ॥

ॐ ह्रीं भयसंज्ञोत्पत्तिकारणरहितनिरपेक्षस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्भयस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद गीतिका

परिपूर्ण यदि निर्दोष बनना चाहते हो तो सुनो ।
एकमात्र अदोष निज ध्रुव धाम के ही पट बुनो ॥

निर्मलानंदी स्वभावी सुतरु का फल प्राप्त कर ।
पूर्ण सुख की महावेला मिली उर सुख व्याप्त कर ॥
चिन्मयी चैतन्य का आनंद ही कुछ और है ।
शुद्ध बुद्ध स्वरूप ही संसार में सिर मौर है ॥
अभावो की जिन्दगी से उबरने का कर उपाय ।
स्वभावों के साथ रह तू स्वयं की ही कर सहाय ॥
आदि मध्य न अत है जो वही तो परमाणु है ।
आकार है षटकोण सम पर्याय सूक्ष्म स्थाणु है ॥
इसी के पडकर कुचक्रों में सदा भ्रमता रहा ।
निजानद स्वभाव भूला भवोदधि बहता रहा ॥
अब विभावी भाव मत कर राग द्वेष अभाव कर ।
बने जैसे स्वबल द्वारा शुद्ध आत्म स्वभाव वर ॥
द्रव्य निद्रा क्षय हुआ करती है मेरी रोज रोज ।
भाव निद्रा नही जाती यही तो है राज रोग ॥
भाव निद्रा नष्ट हो तो आत्म दर्शन हो सहज ।
आत्म दर्शन हो अगर तो मुक्ति मिलती है सहज ॥
भाव कर्म निरोध हो तो द्रव्य कर्म निरोध हो ।
द्रव्य कर्म निरोध तो संसार सर्व निरोध हो ॥
बनोगे निर्भार जब शुद्धात्मा का बोध हो ।
हृदय में आनंद नाचे शुद्ध ध्रुव आमोद हो ॥
आत्म दर्शन ज्ञानमय चारित्र ही शिव सौख्य प्रद ।
आत्म दर्शन के बिना चारित्र भवदुखमय अपद ॥

ॐ ह्री गोम्मटसार कर्मकाण्डे सत्त्वस्थान भगाधिकाकरना तृतीय अधिकारे कर्मसत्त्वरहित जीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

१४०. ॐ ह्रीं मैथुनसंज्ञासामग्रीरहितनिरपेक्षस्वरूपाय नमः

ब्रह्मानंदस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीश झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

आज मेरा नूतन जीवन है ।
भाव मरण से पीछा छूटा जीवन धनधन है ॥
समकित रवि अभ्युदय हुआ,
राग सर्वथा विजय हुआ,
अब न कहीं आठों कर्मों का कोई बंधन है ॥
परम समाधिमरण है पाया,
निज स्वरूप आया उजियारा
कोई भी तो नहीं कहीं भी अब भव क्रन्दन है ॥

ज्ञान की छाँव तले ।
मोह मिथ्यात्व गले ॥
मुक्ति का मार्ग पा राग संपूर्ण जले ॥ ज्ञान.॥
शुद्ध हो भाव मेरे
दोष हो अभाव मेरे, मेरा संसार टले ॥ ज्ञान.॥

ॐ

पूजन क्रमांक २१

कर्मकान्ड चतुर्थ अधिकार

पंचमभागाधिकार श्री पंचम भागाहार पूजन

जत्थ वरणेमिचंदो, महणेणविणा सुणिम्मलो जादो ।
सोअभयनंदि णिम्मल सुवोवही हरऊ पावमल ॥

स्थापना

१४१. ॐ ह्रीं परिग्रहसंज्ञोत्पत्तिहेतुरहितनिरपेक्षस्वरूपाय नम.
निष्परिग्रहोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का कर्मकान्ड सुविचार ।
यह चौथा अधिकार है पंचम भागाहार ॥

छंद रोला

पंचम भागाहार चूलिका पूरी समझूं ।
कर्म बध करने वाले भावों को वरजूं ॥
शुक्लध्यान की अनल जले वसु कर्म जलाऊं।
सर्व कर्म से रहित अवस्था है प्रभु पाऊं ॥

ॐ ह्री पचमभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् ।
ॐ ह्रीं पचमभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं ।
ॐ ह्री पचभमागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्री सज्ञास्वामिभेदरहितनिरपेक्षस्वरूपाय नम: ।
निष्कामस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

गीतिका

शुद्ध संयम भाव की तरणी मुझे अब मिल गई ।
भावना जागी हृदय में कली मन की खिल गई ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पंचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

सदाचारी आचरण चंदन बताया आपने ।
धर्म श्रावक तथा मुनि का भी सिखाया आपने ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि. ।

आपका उपकार हे प्रभु भूल हम सकते नहीं ।
मिला सत्पथ अब कुपथ पर कभी आ सकते नहीं ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पंचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

शरण पाकर आपकी हम तत्त्व निर्णय करेंगे ।
शुद्ध समकित प्राप्त करके स्वपद अक्षय वरेंगे ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन न किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पंचमभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

आज उर अंबुज सहज जिन रवि किरण पाकर खिला ।
जिनबिम्ब दर्शन का सुफल निष्काम भाव हमें मिला ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पंचमभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

निगोदों को भस्म कर पर्याय त्रस भी जला दूं ।
अनाहारी सदा से हूं अदेही बन सजा दूं ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पंचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

चार गति का तिमिर नाशूं सजाऊं पंचम स्वगति ।
तुव कृपा से हो गई है आज मेरी शुद्ध मति ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्रीं पचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि. ।

मुक्ति पथ के कंटको को देखते ही क्षय करूं ।
मोह सेनापति सहित ये कर्म आठों जय करूं ॥
अंत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्री पचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

द्वार खोलूं मुक्ति मंदिर के स्वयं निज शक्ति से ।
सदानंदी सौख्य पाऊं आप की ही भक्ति से ॥
अब न जाऊंगा कहीं भी क्योंकि निज घर मिल गया ।
शुद्ध ज्ञान स्वभाव अंबुज आज पूरा खिल गया ॥
अत भव का निकट आया आपके दर्शन किए ।
पुष्प सम्यक् ज्ञान जल सिंचित प्रभो मुझको दिए ॥

ॐ ह्री पचभागाधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं ज्ञानावरणादिकर्मप्रकृतिरहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः ।

ज्ञानपुंजस्वरूपोऽहं ।

महार्घ्य

छंद-गीत

ज्ञान ने आज गीत निज गाया ।
शुद्ध सम्यक्त्व संग यह लाया ॥
भेद विज्ञान ने की अगवानी ।
पूर्ण श्रद्धान का समय आया ॥
अब स्वरूपाचरण का राजा भी ।
मुझे शुद्धात्मा ही दरशाया ॥
अब तो अविरति का नाश भी होगा ।
चिर प्रमादों का अंत अब आया ॥
जा रहीं है कषाय अपने घर ।
पूर्ण आनंद घन हृदय छाया ॥

ॐ ह्री मार्गणास्थानरहितनिर्गतिस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैतन्यपुंजस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

वीरछंद

सकल विमल निर्मल दर्शन मय शुद्ध सर्वथा ज्ञान स्वरूप।
शाश्वत हूं आनंद स्वरूपी सहज परम अविकल्प स्वरूप॥
निज भावों को नहीं छोड़ता पर को नहीं ग्रहण करता ।
सबका ज्ञाता दृष्टा फिर संसार भ्रमण न कभी करता ॥
विभाव पुद्गल द्रव्य संयोग जनित रागादिक युत पर भाव ।
ग्रहण न करता सहज दृष्टि से चिन्तन करता आत्म स्वभाव॥
जो अग्राह्य को ग्रहण न करता अरु न छोड़ता ग्राह्य कभी।
सबको सर्व प्रकार जानता स्वसंवेद्य है सुदृढ़ सभी ॥
आत्मा आत्मा में निज आत्मा से निज आत्मा को जानो।
आत्म ज्ञान के लिए आत्म को आत्मा से ही पहचानो ॥

छंद-गीत

राग की रागिनी आराम न करने देती ।
वासना विश्व की विश्राम न करने देती ॥
अपनी शुद्धात्मा को देख कभी लेता हूं ।
कामना उसको भी प्रणाम न करने देती ॥
चारों गतियों में भ्रमाती है ये प्रभो हर वक्त ।
मुक्त होने का कोई काम न करने देती ॥
पुण्य पापों की जलन से मैं जला जाता हूं ।
साम्य भावों में ये विराम न करने देती ॥
चाहता हूं कि भव समुद्र पार अब कर लूं ।
कर्म जंजाल को तमाम न करने देती ॥
इसने पत्थर ही बनाया है घाट का मुझको ।
मुझे हिलने का कभी नाम न लेने देती ॥

ॐ ह्री गोम्मटसार कर्मकाण्डे पंचद भागाधिकारनमे चतुर्थधिकारे सर्वप्रथम रहित जीवराजहाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं गत्यादिमार्गणारहितनिर्गतिस्वरूपा नमः।

परमशुद्धोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मटसार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक ३०

कर्मकाण्ड पंचम अधिकार

श्री स्थान समुत्कीर्तन अधिकार पूजन

णमिऊण णेमिणाहं, सच्चजुहिट्ठिरणमंसियंघिजुगं ।
बंधुदयसत्तजुत्तं, ठाणसमुक्कित्तणं वोच्छं ॥

स्थापना

१४६ ॐ ह्रीं सान्तरमार्गणारहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः

सहजबुद्धोऽहं ।

दोहा

कर्म कान्ड का जानिए यह पंचम अधिकार ।
स्थान समुत्कीर्तन यही नाम परम हितकार॥

रोला

कर्म कान्ड को बंद करूँ मैं धर्म कान्ड से ।
निज स्वरूप को सदा बचाऊं कर्म कान्ड से ॥
कर्म प्रकृतियों की सत्ता सम्पूर्ण विनाशूं ।
निज स्वभाव साधना से सिद्धत्व प्रकाशूं ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् ।
ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ. ठ. स्थापनं ।
ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं जघन्योत्कृष्टान्तररहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः

परमचित्स्वरूपोऽहं ।

श्री स्थान समुत्कीर्तन अधिकार पूजन

अष्टक

छंद सिन्धु

सद्धर्म तत्त्व कथनी कैसे प्रभो सुनाऊँ ।
अरहंत दिव्य ध्वनि को कैसे हृदय बिठाऊँ ॥
मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोडता है ।
संबंध आस्रव से हरदम ही जोडता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि. ।

चाहा न दुख तनिक भी फिर भी अपार पाया।
सुख का समुद्र कैसे उर मध्य मैं बहाऊँ ॥
मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोड़ता है ।
संबंध आस्रव से हरदम ही जोडता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

श्रद्धान आत्मा का बिन भेदज्ञान दुर्लभ ।
वह भेदज्ञान पावम बोलो कहाँ से लाऊं ॥
मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोडता है ।
सबंध आस्रव से हरदम ही जोडता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि ।

सम्यक्त्व की प्रभा का पावन प्रकाश अनुपम ।
कैसे हृदय सजाकर मिथ्यात्व को भगाऊँ ॥
मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोडता है ।
संबंध आस्रव से हरदम ही जोड़ता है ॥

ॐ ह्री स्थान समुत्कीर्तन प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

शुद्धात्म तत्त्व चिन्तन जब तक न उर ग्रहेगा।
शिवपुर की ध्रुव पवन को कैसे कहाँ से पाऊँ॥

मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोड़ता है ।

संबंध आस्रव से हरदम ही जोड़ता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

बिन ज्ञान चंद्र पाए होता न शुद्ध चेतन ।

अर्पित करूं हृदय को सादर उसे बुलाऊँ ॥

मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोड़ता है ।

संबंध आस्रव से हरदम ही जोड़ता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

झलका प्रकाश उर में जिनध्वनि की गूंजसुनकर।

गोम्मटसार जिनश्रुत अन्तर में नाथ लाऊँ ॥

मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोड़ता है ।

संबंध आस्रव से हरदम ही जोड़ता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

कर्मों के सत्त्व का अब सम्पूर्ण नाश कर दूँ ।

निष्कर्म दशा हे प्रभु तत्काल आज पाऊं ॥

मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोड़ता है ।

संबंध आस्रव से हरदम ही जोड़ता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

निज सिद्धपुरी के ध्वज अब मैं ही लहराऊँगा।

तुमसे ही बल को पाकर रागों पै जय पाऊँगा॥

लोकाग्र विराजूँगा शाश्वत स्व सिंहासन पर ।

योगों को क्षय करके निज अनर्घ्य गति पाऊंगा॥

मिथ्यात्व मोह मेरा पीछा न छोड़ता है ।

संबंध आस्रव से हरदम ही जोड़ता है ॥

ॐ ह्रीं स्थान समुत्कीर्तन प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं सान्तरमार्गणाविशेषरहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः ।

सदाचित्स्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद गीत

मुक्ति वधू सुख दायिनि मेरे मन को भाई है ।
शिवपुर से पत्रिका उसी ने स्वयं पठाई है ॥
भेजा पत्र सुगंधित पावन,
भेजा है समकित मन भावन,
ज्ञान ज्योति पा संयम ने भी ली अंगडाई है ।
मुक्ति वधू सुख दायिनि मेरे मन को भाई है ॥
दर्श विशुद्धि भावना भायी,
शुद्धातम की छवि दर्शायी,
नव सोलह सिंगार सजा उर में मुसकाई है ।
मुक्ति वधू सुख दायिनी मेरे मन को भाई है ॥
हैं श्रद्धा की वंदन वारें,
ज्ञान तरंग चरित्र संवारें,
रत्नत्रय तरणी की महिमा हृदय समायी है ।
मुक्ति वधू सुख दायिनि मेरे मन को भाई है ॥

ॐ ह्रीं गतिनामकर्मरहितनिर्गतिस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निष्कर्मस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

वीरछंद

जैनं जयतु शासनम् का उद्घोष किया जिसने स्वीकार।
स्वाध्याय की सुरुचि जगाई पाया जिन आगम आधार ॥
भवतन भोग उदास हो गया जो भी प्राणी अबकी बार।
ज्ञान ध्यान वैराग्य प्राप्त कर करने लगा कर्म संहार ॥

पहिले चार घातिया नाशे फिर अघातिया किए विनाश ।
केवल ज्ञान प्रकाश प्राप्त कर पाया शाश्वत मुक्ति निवास॥

छंद मानव मालती

महावीर प्रकाश पाकर भ्रम तिमिर घन चूर कर लो ।
शाश्वत शिव सौख्य से निज हृदय को भरपूर भर लो॥
घातिया की घात में रह पूर्ण उसका बल हरो तुम ।
वीतराग स्वरूप रस को निमिष में आपूर भर लो ॥
वीर की सर्वज्ञता है ज्ञान रूप स्वपर प्रकाशक ।
त्रिकाली का आश्रय ले विषमता सम्पूर्ण हर लो ॥
वीरवाणी भव्य सादर हृदय में कर लो विराजित ।
दिव्यता के सूर्य से तुम कर्म वसु अब चूर कर लो ॥
सिद्ध पद सादर तुम्हारी ओर आतुर देखता है ।
चिर प्रतीक्षित ज्ञान पद ले आत्मा अभिषिक्त कर लो ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार कर्मकाण्डे स्थान समुत्कीर्त्तन नामे पंचअधिकारे परमशुद्ध स्वरूप जीवराजंहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं नरकगतिरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

नित्यसौख्यस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

पूजन क्रमांक ३१

कर्मकान्ड

षष्टम अधिकार

श्री आस्रव अधिकार पूजन

णमिऊण अभयणंदिं, सुदसायरपारगिंदमणंदिगुरुं ।
वरवीरणंदिणाहं, पयडीणं पच्चयं वोच्छं ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतिरहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः ।
निष्कुटिलस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान के कर्म कान्ड को जान ।
यह आस्रव अधिकार है षष्टम ज्ञान प्रधान ॥

छंद रोला

बीता काल अनादि आस्रव उर को भाया ।
पुण्य पाप आस्रव से भव का भ्रमण बढ़ाया ॥
आस्रव का बल हरने में संवर सक्षम है ।
बिन संवर के नहीं आस्रव होता कम है ॥
जब तक कर्मो का आस्रव है तब तक भव दुख।
जब आस्रव रुक जाता है तब होता है सुखं ॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौष्ट् ।
ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठ स्थापनं ।
ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

श्री आस्रव अधिकार पूजन

ॐ ह्रीं मनुष्यगतिरहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः

सरलस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद मत्त सवैया

श्रद्धान आत्मा का हो तो व्यवधान नहीं होता कोई ।
श्रद्धान नहीं हो तो सम्यक् ज्ञान नहीं होता कोई ॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

जब ज्ञान नहीं निर्मल हो तो चारित्र नहीं होता कोई ।
चारित्र नहीं सम्यक् होतो निर्वाण नहीं होता कोई ॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि ।

अतएव आत्मा की श्रद्धा अपना कर्त्तव्य प्रथम मानो ।
जीवादि सात तत्त्वों को तुम जैसे हैं वैसे ही जानो ॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

जब आत्म तत्त्व श्रद्धा हो तो तब संयम का तुम यत्न करो।
अविरति के भावों को क्षय कर दुखमयी असंयम नष्ट करो ॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्प नि. ।

जब संयम रस मीठा लागे तब पंच महाव्रत उर धारो ।
दृढ़ पंच समिति त्रय गुप्ति आदि अति हर्षित होकर स्वीकारो॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि. ।

निज आत्म ज्ञान के दीप जगा संसार तिमिर को क्षय कर दो।
शुद्धात्म तत्त्व के बल द्वारा अंतर का पूरा भय हर दो॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि ।

मिल गया मुक्ति का मार्ग तुम्हें रत्नत्रय हृदय सजाओ तुम।
फिर शुक्ल ध्यान की वीणा ले निज कर से सहज बजाओ तुम॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

निज संयम तरणी के द्वारा देखो भव सागर पार हुआ।
खुल गए स्वयं ही मुक्ति द्वार पलभर में क्षय संसार हुआ॥
आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

त्रैलोक्य शिखर पर नृत्य हुआ प्रमुदित है सिद्ध शिला पावन।
चेतन की बहुत प्रतीक्षा थी वह चेतन पाया मन भावन ॥
अब सादि अनंतानंत काल निज निजानंद रस पाएगा ।
तीनों लोकोंका एक एक कण नाचेगा हरषाएगा ॥

श्री आस्रव अधिकार पूजन

आस्रव महान दुखदायी है केवल संवर से डरता है ।
शुभ क्षणिक स्वर्ग साता दाता अरु अशुभ नर्क में धरता है ॥

ॐ ह्रीं आस्रव अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं तिर्यग्मनुष्यगतिव्यक्तिभेदरहितनिर्गतिस्वरूपायअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

निर्मलस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद दिग्वधू

आस्रव की हवेली को अब मुझे जलाना है ।
संवरी यशोध्वज को अब तो लहराना है ॥
चेतन के अंगना में अब निर्जरा नृत्य करने ।
आएगी ये सजधज कर इन बंधों को हरने ॥
प्रागंण उज्ज्वल होगा निर्मलता आएगी ।
रोली अनंत गुण की आकर बरसाएगी ॥
फल भेदज्ञान तरु के मुझको मिल जाएंगे ।
मन कमल बंद हैं जो वे सब खिल जाएंगे ॥
सम्यक्त्व प्राप्त होगा कैवल्य प्रभा वाला ।
इस मुक्ति भवन का अब खुल जाएगा ताला ॥
तनुवातवलय ऊपर है सिद्ध शिला उन्नत ।
चेतन का उसी पर है ध्रुव सिंहासन शाश्वत ॥
राजित होगा चेतन जीवत्व शक्ति पाकर ।
निज निजानंद रस से प्लावित होगा जाकर ॥
सुरपति वन्दना करके सौभाग्य जगाएंगे ।
अज्ञानमयी आस्रव तत्काल भगाएंगे ॥

ॐ ह्रीं देवगतिरहितनिर्गतिस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अनाकुलज्ञानस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद दिग्पाल

वह मन कहाँ से लाऊं जो मोह को भगा दे ।
वह ज्ञान कैसे पाऊं जो आत्मा जगा दे ॥
मिथ्यात्व दुष्ट मुझको हरदम ही घेरता है ।
वह मार्ग तो बताओ जो मोक्ष से मिला दे ॥
शिवपथ कहाँ मिलेगा कुछ युक्ति तो बता दो ।
सद्धर्म तत्त्व जानू जो भ्रम सभी हटा दे ॥
परभाव जितने भी हैं वे दुखमयी हैं पूरे ।
वह बल मुझे दो स्वामी जो आत्मबल जगा दे॥
अब तक भटक रहा हूँ बिन आत्मा को जाने ।
वह ज्ञान दो जो मुझको सन्मार्ग पर लगा दे ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार कर्मकाण्डे आस्रव अधिकारनामे षष्टम अझिकारे सर्वासुव रहित जीवराजहसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं सिद्धगतिपर्यायरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम. ।

सहजनिर्लेपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवीपाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्बाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद

ॐ

पूजन क्रमांक ३२

कर्मकान्ड

सप्तम अधिकार

श्री भाव चूलिका अधिकार पूजन

गोम्मट जिणिंदचदं, पणमिय गोम्मटपयत्थ संजुत्तां।
गोम्मट संग विसयं भावगयं चूलियं वोच्छं ॥

स्थापना

ॐ ह्री गतिमार्गणाजीवसंख्यारहितनिर्गतिस्वरूपाय नम

अभेदचित्स्वरूपोऽहं ।

दोहा

कर्म कान्ड का जानिए यह सप्तम अधिकार ।
आस्रव की यह चूलिका जानो भली प्रकार ॥

छंद रोला

यहीं भाव चूलिका महा मुनि वर्णन करते ।
बंध स्रोत शुभ अशुभ आस्रव पूरा हरते ॥
बाल बराबर भी यदि आस्रव शेष रहेगा ।
कर्म धार का तब तक सतत प्रवाह बहेगा ॥
आस्रव अशुचि घृणा के घर हैं दुखदायी है ।
चारों गति में भ्रमण कराते विष पायी हैं ॥
जो इनको क्षय करता है वह ज्ञानी होता ।
अष्टकर्म जंजाल सहज ही पूरा खोता ॥
आदिनाथ से महावीर तक सब तीर्थंकर ।
आस्रव क्षय करने को उर में धारा संवर ॥

मैं भी आस्रव क्षय करने का यतन करूं प्रभु ।
सम्यक् दर्शन अंगीकृत कर इन्हें हरूं विभु ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं धर्मादिपृथ्वीभेदरहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः

निजशिवस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद ताटंक

संयोगी भावों को तजकर आत्म बुद्धि से निज हितकर।
देह पडौसी मान जीव तू निज स्वरूप में रत रह कर ॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जराय मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

फिर एकान्त रूप मोह का भी अभाव हो जाएगा ।
ज्ञानानंद स्वरूप आत्मा स्वयं स्वत. हो जाएगा ॥
बध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र मैं रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चदन नि ।

अरहंतो के शुद्ध द्रव्य सम मेरा भी द्रव्यत्व महान ।
अरहंतों के गुणत्व सम ही मेरा भी गुणत्व गुणवान ॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

अरहंतों के पर्यायत्व समान श्रेष्ठ मम पर्यायत्व ।
गुण पर्याय सभी समान हैं सिद्धों सम मेरा द्रव्यत्व ॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

ज्ञान परिणमन ज्ञानरूप है चेतन का चेतना स्वरूप ।
मोह नाश करना ही उत्तम है अरहंतों सम आत्म स्वरूप॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

निज परमात्म तत्त्व आश्रय से रत्नत्रय प्रगटित होता ।
निर्विकार विज्ञान ज्ञानघन टंकोत्कीर्ण अमित होता ॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

नित्य निरंजन सदा एक सा रहने वाला सिद्ध स्वरूप ।
जिसे प्राप्त करने का पावन अनुष्ठान कर हे चिद्रूप ॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टमर्क विनाशनाय धूपं नि ।

शुद्ध आत्मा का स्वभाव ज्ञायक अबद्ध अस्पृष्ट नियत ।
है अनन्य तथा अविशेषी ना प्रमत्त है ना अप्रमत्त ॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा ।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में रीतूंगा ॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

किसी लिंग से ग्रहण न होता गुणस्थान मार्गणा नहीं।
दर्शन ज्ञान स्वरूप अरूपी एक शुद्ध है दोष नहीं॥
परद्रव्यों से सदा प्रथक है कभी विभाव प्रपंच नहीं।
एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का कर्ताभोक्तारंच नहीं॥
बंध मूल आस्रव को जयकर भाव शुभाशुभ जीतूंगा।
मोह राग द्वेषादि भाव से निमिष मात्र में जीतूंगा॥

ॐ ह्रीं आस्रव चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि

ॐ ह्री तिर्यग्गतिजीवसंख्यारहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः ।

अमलबोधोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

ज्ञान रवि के उदय का अवसर यही है ,
फिर नही ये ज्ञान रवि उर में झिलेगा ।
भूलकर भी देर मत करना जरा सी ,
फिर न यह अवसर कभी तुमको मिलेगा ॥
प्रथम आस्रव जीतने को सजग होकर ,
शुद्ध संवर की झलक उज्ज्वल दिखाओ ।
शुभ अशुभ का भेद मत करना जरा भी ,
शेष अणुभर भी बचे तो मत बचाओ ॥
मौन स्वर में गीत गाओ निर्जरा के ,
बंध कर्मों के स्वतः ही नष्ट होंगे ।
ज्ञान का रवि उदय होगा निज हृदय में ,
फिर न चेतन तुम्हें भव के कष्ट होंगे ॥

त्रिलोकाग्र महान स्वागत में खड़ा है
सिद्ध पद आतुर तुम्हारे ही लिए है ॥
इन्द्र शत शत वंदना की मधुर वेला
पूर्णतः जाग्रत तुम्हारे ही लिए है ॥
समयसार महान निज के पृष्ठ खोलो ;
पढ़ो उसमें क्या लिखा है सुनो चिन्मय ।
एक ही परमात्मा हो तुम अकेले ,
अतः अपने सिद्ध पद का करो निर्णय ॥

ॐ ह्रीं तिर्यग्गतियोनिमतिरहितनिर्गतिस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अलिङ्गोऽहं ।

जयमाला

छंद ताटंक

सब जीवों पर ममता धारो पंचेन्द्रिय संयमित करो ।
आर्त्तरौद्र परिणाम त्याग दो दुर्ध्यानों को त्वरित हरो ॥
धर्म ध्यान का चिन्तन करना यह सामायिक है अनुरूप।
साम्यभाव सम्मान करो नित प्रगटाओ निज शुद्ध स्वरूप॥
त्रस थावर षट कायिक के प्रति समता भाव हृदय में हो।
समभावों की आय सतत हो तो सामायिक की जय हो॥
द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव की शुद्धि मूल सामायिक का।
इसके बिन सामायिक करना मात्र ढोंग सामायिक का॥
सामायिक बिन आत्म शान्ति की आशा करना केवल स्वप्न ।
सामायिक बिन धर्म ध्यान का होना भी केवल दु:स्वप्न॥
नर भव आर्य क्षेत्र उत्तम कुल उत्तरोत्तर दुर्लभ है ।
आत्म धर्म इन सबसे दुर्लभ रुचि जागे तो सुसुलभ है॥

सभी प्रणियों को अपने प्रिय प्राण सभी से प्यारे हैं ।
सभी जीव दुख से डरते हैं सुख की इच्छा धारे हैं ॥
अत. मत सता किसी जीव को नहीं किसी का करना घात।
अगर भूल से भी कर बैठा तो फिर निजात्म का व्याघात॥
जो एकान्त विजन में जाकर ध्यानामृत सेवन करता ।
अद्वितीय सामायिक करता कर्म निर्जरा ही करता ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार कर्मकाण्डे आस्रव चूलिका अधिकारनामे सप्तम अधिकारे सर्वकर्मासुवहिन जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं मनुष्यजीवसंख्यारहितनिर्गतिस्वरूपाय नम:

निर्भेदचित्स्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढकर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद्र सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

रंच भी कषाय भाव मत करो जी।
पूर्ण अकषाय भाव उर धरो जी।।
क्रोधमान माया लोभ जीतो तुम अभी
राग द्वेष भावना से रीतो तुम अभी।
दृष्टि तो त्रिकाली ध्रुव पर धरो जी।।

***

ॐ

पूजन क्रमांक ३३

कर्मकान्ड

अष्टम अधिकार

त्रिकरण चूलिका अधिकार पूजन

णमह गुणरयणभूसण, सिद्धंतामियमहद्धिभवभावं ।
वरवीरणंदिचंदं, णिम्मलगुणमिदणंदिगुरुं ॥

स्थापना

१६१ ॐ ह्रीं पूर्वानुपूर्वीसंख्याविकल्परहितनिर्गतिस्वरूपाय नम- **पूर्वापररहितोऽहं ।**

दोहा

कर्म कान्ड का जानिए यह अष्टम अधिकार ।
नाम सुत्रिकरण चूलिका जय जय गोम्मटसार॥

छंद रोला

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र त्रिकरण ज्ञानमय ।
यह रत्नत्रय भव दुख हारी शुद्ध ध्यानमय ॥
मिथ्यादर्शन ज्ञान चरित्र महा दुखदायी ।
सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित्र परम सुखदायी ॥
खोटे कारण तजूं अनादि से जो करता हूँ।
सच्चे कारण पाने में प्रभु क्यों डरता हूँ ॥
अध: प्रवृत्ति करण करके कुछ ऊपर आऊँ ।
करूं अपूर्व करण पावन अरु आगे जाऊँ ॥
फिर अनिवृत्ति करण करके ऊपर बढ़ जाऊँ।
इसी भांति आगे बढ़ कर शिव सौख्य उपाऊँ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलि का अधिकार प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ ठः स्थापनं।
ॐ ह्री त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररुपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

ॐ ह्रीं मानुषीपरिमाणविकल्पसहितनिर्गतिस्वरूपाय नम

निर्लिङ्गचित्स्वरूपोऽहं ।

अष्टक

छंद भुजंगी

अगर राग होगा विलेपित हमारा ।
तो इस बार शिव पथ सुनिश्चित हमारा॥
अध प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्री त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

महल आस्रव का गिराना पडेगा ।
तो टूटेगा बंधों का निर्मित्त किनारा ॥
अध प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्री त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय ससारताप विनाशनाय चदन नि ।

परम शुद्ध संवर का संबल मिला है ।
सदा पुण्य पापों को जिसने संहारा ॥
अध प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

श्री त्रिकरण चूलिका अधिकार पूजन

कहाँ बंध का गढ़ रहेगा बताओ ।
अगर निर्जरा का मिलेगा सहारा ॥
अध. प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

हमें पूर्ण संयम का रथ मिल गया है ।
इसी ने त्रिलोकाग्र सबको उतारा ॥
अध प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

जरुरत हो अपने को देखें सजग हो ।
तो उद्धार होगा सहज में हमारा ॥
अध प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीप नि ।

न कोई भी झंझट रहेगी हृदय में ।
अगर मोह मिथ्यात्त्व को पहिले मारा ॥
अध. प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

परम तत्त्व के होंगे दर्शन सुनिश्चित ।
अगर अपनी शुद्धात्मा को निहारा ॥

अध: प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि ।

मिलेगा सुफल भेद विज्ञान का जब ।
त्वरित सूख जाएगी संसार धारा ॥
मिला है सुअवसर चलें मुक्ति पथ पर ।
जनम सिद्ध अधिकार है यह हमारा ॥
अध. प्रवृत्त अपूर्व अनिवृत्ति करण त्रय ।
करेंगे तो पाएंगे शिव सौख्य सारा ॥

ॐ ह्रीं त्रिकरण चूलिका अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं देवगतिजीवसंख्यारहितनिर्गतिस्वरूपाय नम: ।

निजवैभवसंपन्नोऽहं ।

महाअर्घ्य

गीत

ज्ञान कैवल्य की किरण पायी ।
अब नहीं मुझको किसी का डर है॥
मैं तो आनंदघन स्वरूपी हूं ।
गुण अनंतो भरा मेरा घर है ॥
ध्रुव त्रिकाली स्वभाव वाला हूं ।
ज्ञाता दृष्टा हूं मैं निराला हूं ॥
पूर्ण चैतन्यता का स्वामी हूं ।
मुक्ति रमणी से कल स्वयंवर है ॥
ज्ञान कैवल्य की किरण पायी ।
मुक्ति रमणी सभी सजी आयी ॥

उसकी वरमाला कंठ में पाकर ।
उसके संग सिद्ध लोक में जाकर॥
सादि से ले अनंत कालों तक ।
पूर्ण आनंद सौख्य सागर है ॥
ज्ञान कैवल्य की किरण पायी ।
अब नहीं मुझको किसी का डर है॥

ॐ ह्रीं सौधर्मादिदेवपरिमाणरहितनिर्गतिस्वरूपाय महार्घ्यं
अक्षयबोधस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद भुजंगी

नगाडे विभावों के सब फोड़ देना ।
ये रागों की ढोलक भी तुम तोड़ देना ॥
अगर मुक्ति पाने की इच्छा जगी है ।
तो अपने को अपने से तुम जोड़ देना ॥
परालंबी जीवन न जीना कभी भी ।
सहज स्वालबंन से ही जीना सदा ही ॥
नहीं लालसा पर की जागे हृदय में ।
समल राग गाना नहीं तुम कदा ही ॥
अपद छोड़ कर तुम स्वपद को संवारो ।
जिसे प्राप्त करना बहुत ही सरल है ॥
अपद को भयंकर महादुष्ट जानो ।
ये अमृत नहीं है हलाहल गरल है ॥
तेरी आत्मा शुद्ध है बुद्ध है ध्रुव ।
त्रिकाली महा है नहीं कुछ विरल है ॥

अगर अपने बीतर तू जागे निमिष भर ।
तो कल्याण तेरा सुनिश्चित विमल है ॥

छंद सरसी

अब ना लेंगे जन्म जगत में हम तो बारंबार ।
अंतिम जन्म हमारा है यह जाएंगे भव पार ॥
हमने सम्यक् दर्शन पाया ।
सम्यक् ज्ञान हृदय में आया ॥
सम्यक् चारित्र लेकर आया है आनंद अपार ।
अब ना लेंगे जन्म जगत में हम तो बारंबर ॥
हृदय स्वरूपाचरण झिला है ।
अब सम्यक्त्व चरण मिला है ॥
गुण श्रेणी निर्जरा मिली है ज्ञान हुआ साकार।
अब ना लेंगे जन्म जगत में हम तो बारंबर ॥
उत्तम श्रेणी क्षायिक पायी ।
केवल निजकिरणावलि आयी ॥
अरि रज रहसविहीन हुआ मैं ।
चहुदिशि जय जयकार ।
अब ना लेंगे जन्म जगत में हम तो बारंबार ॥

ॐ ह्रीं गोम्मटसार कर्मकाण्डे त्रिकरणचूलिका अधिकारनामे अष्टम अधिकारायरूप निर्मलस्वरूप जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं ग्रैवेयकादिदेवपरिमाणरहितनिर्गतिस्वरूपाय नम ।

शाश्वतचित्स्वरूपोऽहं ।

श्री त्रिकरण चूलिका अधिकार पूजन

आशीर्वाद

दोहा

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीष झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

बड़े उत्साह से रखा है मैंने पहिला चरण।
मुक्ति के मार्ग पै आया हूं ले जिनराज शरण।।

आज तक भटका था मिथ्यात्व के अंधेरे में।
यत्न करके भी न आया कभी उजेरे में।

कैसे निज को मैं जानता बिना स्वरूपाचरण।।
तत्त्व निर्णय किया तो ज्ञान हृदय में आया।

मेरा शुद्धात्म तत्त्व आज मुझे दर्शाया।
लेके संयम लिया है आज सम्यक्त्वाचरण।।

मुक्ति का मार्ग सरल मैंने आज पाया है
पूर्ण सिद्धत्व प्राप्ति का ही लक्ष भाया है
मैं ही सिद्धात्मा हूं सर्वदा शिव सौख्य धरण।।

***

ॐ

पूजन क्रमांक ३३

कर्मकान्ड

नवम अधिकार

श्री कर्मस्थिति रचना अधिकार पूजन

सिद्धे विसुद्धणिलये, पणट्ठकम्मे विणट्ठसंसारे ।
पणमिय सिरसा वोच्छं, कम्मट्ठिदिरयणसब्भावं ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं सर्वार्थसिद्धिजाहमिन्द्रसंख्याविकल्परहितनिर्गतिस्वरूपाय नमः ।
सहजचित्स्वरूपोऽहं ।

दोहा

गोम्मटसार महान का कर्म कान्ड विख्यात ।
यह नवमा अधिकार है कर्म स्थिति प्रख्यात् ॥

छंद रोला

कर्मो की स्थिति की रचना कौन कर रहा ।
इस स्थिति बंध क कारण कौन मर रहा ॥
कर्मो की स्थिति कम करने का मुझमें बल ।
स्थिति बंध नाशकर होऊं स्वामी उज्ज्वल ॥
एक समय में जीवों को विभाव से बंधती ।
एकसमय के अन्तराल बिन सदैव बंधती॥
महासिद्ध प्रभुओं को तो यह कभी न बंधता।
एक समय अन्तर्मूहुर्त से लेकर बंधता ॥

श्री कर्मस्थिति रचना अधिकार पूजन

सत्तर कोड़ा कोड़ी सागर तक का बंधना ।
जो स्वभाव में रहते उनको कभी न बंधती ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं।
ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं अहमिन्द्रतुल्येन्द्रियरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः

निरिन्द्रियज्ञानस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

गीत

ज्ञान भावना के बिना धर्म नहीं है ।
मोह वासना के बिना कर्म नहीं है ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूँगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूँगा ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जल नि ।

चेतना बिना न कोई जीव कहीं है ।
चेतना जहाँ है अरे जीव वहीं है ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूँगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूँगा ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि ।

शुद्ध भाव हो तो वहाँ राग नहीं है ।
राग भाव है तो शुद्ध भाव नहीं है ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूँगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूँगा ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि ।

आत्म भावना के कलश आज सजाऊँ ।
शुद्ध भावना के वाद्य श्रेष्ठ बजाऊँ ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूँगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूँगा ॥

ॐ ह्री कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

ज्ञान ध्यान के बिना विराग नहीं है ।
ज्ञान का प्रभाव हो तो राग नहीं है ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूंगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूंगा ॥

ॐ ह्री कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्य नि ।

साम्य भाव है तो पुण्य पाप नहीं है ।
पुण्य पाप है तो साम्य भाव नहीं है ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूंगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूंगा ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोहन्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

स्वभाव में तो रंच भी विभाव नहीं है ।
विभाव अगर है तो फिर स्वभाव नहीं है॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूंगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूंगा ॥

ॐ ह्री कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं नि ।

क्रिया कान्ड जड में कोई धर्म नहीं है ।
धर्म है तो कोई क्रिया कान्ड नहीं है ॥

श्री कर्मस्थिति रचना अधिकार पूजन

कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूंगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूंगा ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

धर्म है जहाँ वहाँ अधर्म नहीं है ।
अधर्म है जहाँ वहाँ पै धर्म नहीं है ॥
कर्म थिति बंध प्रभो नाश करूंगा ।
शक्ति सिद्धत्व का प्रकाश करूंगा ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं सर्वइन्द्रियादिरहितअनिन्द्रियस्वरूपाय नमः ।

निरिन्द्रियज्ञानस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

छंद माधव मालती

रूपमाला ज्ञान की निज पर प्रकाशक मिल गई है ।
शुद्ध समकित की कृपा से कली मन की खिल गई है॥
मिट गया भ्रम तम सदा को ज्ञान पाया सर्वदा को ।
परम रत्नत्रय सुरभि संयम सहित उर झिल गई है ॥
भावना सोलह पधारीं वासना भव की सिधारी ।
मोह भ्रम मिथ्यात्व की जड़ पूर्णत: अब हिल गई है ॥

ॐ ह्रीं कर्म स्थिति रचना अधिकार प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय महाअर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं मतिज्ञानावरणक्षयोपशमरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः ।

पूर्णज्ञानस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

छंद ताटंक

रवि शशि मुसकाते नभ तल पर ज्ञान प्रफुल्लित अंतर में ।
भाव मार्ग पाता है पावन निजानंद निज अंतर में ॥

मृत्यु अवश्यंभावी सबकी शाश्वत जीवन दुष्कर है ।
ईषादिक दोषों से विरहित सदाचार निज सुखकर है ॥
निजात्मा को सुखी बनाना चेतन का उत्तर दायित्व ।
किन्तु मोह के कारण भूला यह चेतन अपना दायित्व ॥
मानवता का नाम नहीं है दानवता के है आधीन ।
अंतर सामंजस्य नही है कहता अपने को स्वाधीन ॥
हर्ष विषादों की घड़ियों में समभावी रहना होगा ।
छोड राग की पच्चीकारी निज सरि में बहना होगा ॥
विकृत स्वार्थ दुखी करता है सम्यक् स्वार्थ सुखी करता।
आत्मार्थ जो साधन करता वह भवदधि शोषण करता ॥
कर्म स्थिति की रचना समझो बंध स्थिति से दूर रहो ।
निज स्वरूप अवलंबन लेकर निजानंद भरपूर रहो ॥

ॐ ह्री गमेमटसार कर्मकाण्डे त्रिकरण चूलिका अधिकारनामे नवम अधिकारे परम पारिणार्मिक भाव स्वरूप जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्री एकेन्द्रियन्द्रियादिरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नम.

अस्पृष्टस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद

रोला

गोम्मट सार महान ग्रंथ को शीश झुकाऊं ।
गुण स्थान श्रेणी चढ़कर निज पदवी पाऊं ॥
नेमिचंद सिद्धान्त देव आशीर्वाद है ।
मेरे मन में अब न शेष कोई विवाद है ॥
इसीलिए शिवपथ पाया है मैंने स्वामी ।
निज स्वभाव का आश्रय पाऊं अन्तर्यामी ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र ॐ ह्रीं कर्मकाण्ड प्ररूपक श्री गोम्मटसाराय नमः ।

ॐ

श्री गोम्मटसार विधान

प्रशस्ति

वीरिंदणंदिवच्छेणप्पसुदेण अयणंदिसिस्सेण ।
दसणचरित्तलद्धी, सुसूयिया णेमिचंदेण ॥
जस्सण्य पायपसाए, णंतसंसार जलहिमुत्तिण्णो ।
वीरिंदणंदिवच्छो णामानितं अभयणंदि गुरुं ॥

ॐ ह्रीं संसार दुःखरहित निजानंद स्वरूपाय नमः ।

सहजानंदस्वरूपोऽहं ।

दोहा

नेमिनाथ भगवान के वंदन करूँ त्रिकाल ।
मुक्ति मार्ग पर चल पड़ूँ हे स्वामी तत्काल ॥

छंद चौपई

जय जय नेमिनाथ भगवान । वन्दन करूँ करूँ बहुमान ॥
जीव अजीव तत्त्व दर्शाय । जीव तत्त्व ही शिव सुखदाय ॥
एक सहस्र वर्ष के पूर्व । नेमिचंद्र मुनि हुए अपूर्व ।
भव्य प्राणियों के हित रूप । रचे ग्रंथ आगम अनुरूप ॥
जब होगा स्वाध्याय महान । निज स्वद्रव्य का होगा ज्ञान ॥
रचा ग्रंथ श्री गोम्मटसार । बंध मोक्ष का इसमें सार ॥
जीव कान्ड पहिले लो जान । कर्म कान्ड की हो पहचान ॥
पहिले जानो बंध स्वरूप । फिर तुम समझो मोक्ष स्वरूप ॥
बंध मोक्ष दोनों पर्याय । आत्म द्रव्य शाश्वत सुखदाय ॥
चामुन्डराय गोम्मट आकृष्ट । परमागम श्रोता उत्कृष्ट ॥

नेमि चंद्र के शिष्य महान । चाहें एक आत्म कल्याण ॥
श्री गुरुवर के जोड़े हाथ । हमें ज्ञान दो हे मुनिनाथ ।
श्री आचार्य दया अवतार । किया निवेदन झट स्वीकार ॥
रचा श्रेष्ठ यह गोम्मटसार । सर्व प्राणियों को हितकार ॥
प्रमुदित हुए ग्रंथ पा जीव । मानो शिव पथ मिला समीप॥
दक्षिण कर्नाटक प्रख्यात । श्रवण वेलगुल है विख्यात ॥
बाहुबली विग्रह निर्माण । हुई प्रतिष्ठा आनंदमान ॥
चद्र सुगिरि है शोभावान । विंध्य सुगुरि बहु हैश्रुतजानहै।।
यहीं हुई रचना साकार । हुआ प्राणियों का उद्धार ॥
गूंजी चहुं दिशि जय जय कार । मुनि मन भी आनंदअपार।।
हुआ मुक्ति पथ सरल महान । भव्य जनों ने किया प्रयाण॥
लब्धिसार अरुक्षपणासार । सम्यक्ज्ञान चंद्रिका सार ॥
निज भावों की करो संवा । बंध मोक्ष का करो विचार ॥
निज परिणामों के अनुसार । फल मिलता है तद् अनुसार।।
ग्रंथ पूर्ण हो गया महान । रचा विनय से श्रेष्ठ विधान ॥
नेमि चंद्र आचार्य प्रसिद्ध । ज्ञान भाव से होंगे सिद्ध ॥
नृपचामुन्डराय प्रख्यात । गोम्मटसराय नाम विख्यात् ॥
सुना सुगुरु उपदेश महान । पाया भेद ज्ञान विज्ञान ॥
सफल हुआ यह आज विधान । करूं स्वयं का प्रभु कल्याण॥

छंद मत्त सवैया

मैं पूजन करने आया हूं मुझको जिन पूजन करने दो॥
जिन चरण भाग्य से पाए हैं चरणों का अर्चन करने दो॥
प्रासुक सामग्री लाया हूं अति सावधान जाग्रत होकर ।
मिथ्या भ्रम तम जय कर आया जिन स्वाध्याय में रत होकर॥
पहिले प्रक्षाल करूं प्रभु का फिर संस्तुति वंदन करने दो।
मैं पूजन करने आया हूं मुझको जिन पूजन करने दो॥

जल चंदन अक्षत पुष्प सुचरु अरु दीप धूप फल अर्पित हैं।
मेरी निजात्मा के प्रदेश हर्षित हो पूर्ण समर्पित हैं ॥
अब तो मुझको शुद्धात्म ध्यान जिन चरणों में ही करने दो ।
मैं पूजन करने आया हूं मुझको जिन पूजन करने दो॥
भव सुख आकांक्षा नहीं हृदय इन्द्रादिक पद की चाह नहीं।
चक्री पद भी यदि मिले प्रभो उसमें भी कुछ उत्साह नहीं॥
मैं तो निज वैभव का प्रेमी उसका ही चिन्तन करने दो।

दोहा

गोम्मटसार विधान की यह प्रशस्ति सुखरूप ।
सहज अध्ययन मनन से पट जाता भवकूप ॥

ॐ ह्रीं अनंत क्षुद्र भवरहित परिपूर्ण स्वरूपाय नमः पुष्पांजलि क्षिपामि

महादेवस्वरूपोऽहं

गोम्मटसुत्तल्लिहणे, गोम्मटरायेण जकयादेसी ।
सो राओ चिरकालं मामेण वीर मत्तंडी ॥
गोम्मट संगह सत्तं, गोम्मट देवेण गोम्मटंरइयं ।
कम्माण णिज्जरट्ठ तच्चट्ठव धारणट्ठंच ॥
गोम्मट संगहसुत्तं गोम्मटसिंह रूवरि गोम्मट जिणोय ।
गोम्मटराय विणम्मिय, दक्खिण कुक्कुड जिणोजयउ॥
जेणुब्भियं भुवदिमजक्ख तिरीटग्गा किरणजल धोया ।
सिद्धाण शुद्धपावेरे सोराओ गोम्मटो जयउ ॥
सिद्धंतुदयतडुग्गय, णिम्मलवरणेमिचंदकरकलिया ।
गुणरयणभूसणं बुहिमइवेला [illegible] भुवणलयं ॥

ॐ

श्री लब्धिसार पूजन

सिद्धजिणिंदवंदे आयरिय उवज्झाय साहुगणे ।
वंदिय सम्मद्दंसण-चरित्त लद्धिं परूवेमो ॥

स्थापना

ॐ ह्रीं इन्द्रियक्रमवृद्धिरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः

सहजब्रह्मस्वरूपोऽहं ।

दोहा

लब्धिसार की जानिये गाथा संख्या आप ।
तीन शतक इक्यानवे हरतीं भव संताप ॥
नेमिचंद्र आचार्य के श्रम को सतत प्रणाम ।
महाकृपा की आपने बतलाया ध्रुवधाम ॥
लब्धिसार ही सार है पंच लब्धि दातार ।
करणलब्धि निज प्राप्त हो करूं आत्म उद्धार ॥
नेमि चंद्र आचार्य कृत लब्धिसार जिन ग्रथ ।
शुद्ध भाव को ग्रहण कर हो जाऊं निर्ग्रंथ ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागम अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागम अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागम अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

ॐ ह्रीं इन्द्रियविषयक्षेत्रप्रमाणरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः

असीमज्ञानस्वरूपोऽहं ।

अष्टक

गीतिका

नीर सम्यक् प्राप्त करके जन्म मृत्यु जरा हरूँ ।
यथाख्यात स्वरुप अपना अंतरंग प्रकट करू ॥

लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि. ।

शुद्ध चंदन ज्ञानमय ले भवातप सब क्षय करूं ।
सहज शिवमय ज्योति पाकर सकल भव बंधन हरूं ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय संसारताप विनाशनाय चंदन नि. ।

शुद्ध अक्षत ज्ञान के ला स्वपद अक्षय मैं वरूं ।
भव समुद्र विनाश करके सिद्ध पद निज आदरूँ ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतं नि. ।

शुद्ध पुष्प स्वशील के ले काम की पीड़ा हरूं ।
प्राप्त कर निष्काम पद निज ब्रह्म में चर्या करूँ ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि. ।

शुद्ध चरु लाऊं स्वभावी क्षुधा की पीड़ा हरूँ ।
तृप्त आत्म स्वभाव पाकर हृदय ज्ञानामृत धरूँ ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं नि. ।

ज्ञान दीप प्रजाल निज के मोह विभ्रम को हरूँ ।
प्रकटकर कैवल्य ज्ञान प्रकाश नित आनंद करूँ ॥

लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय मोहान्धकार विनाशनाय दीप नि. ।

कर्म अरि सब जलाने को ध्यान धूप महान लूं ।
पद अपूर्व प्रगट करूं मैं सिद्ध स्वपद प्रधान लूं ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि. ।

मोक्ष फल की प्राप्ति के हित ज्ञान फल लाऊं अभी ।
निरंजन शिवमार्ग पाकर सर्व गुण पाऊं अभी ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि ।

भावना के अर्घ्य लाऊँ पद अनर्घ्य अभी वरूँ ।
सकल भव की व्याधियाँ हर कलुषता सारी हरूँ ॥
लब्धिसार महान का स्वाध्याय सुख का मूल है ।
नेमिचंद्र आचार्य की कथनी सहज अनुकूल है ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियविषयक्षेत्रप्रमाणरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः

ज्ञाननेत्रस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

वीरछंद

नरक त्रियंच देव गति में संयम का रहता सदा अभाव।
नहीं योग्यता है संयम की वहाँ असंयम का सद्भाव॥

एकमात्र इस नर भव में ही संयम की योग्यता महान ।
नर भव पाकर जो न ले सके संयम वह है मूढ़ अजान॥
बिन समकित संयम धारोगे तो वह होगा शून्य समान ।
समकित पूर्वक ही तुम संयम लेना जिनवच यही महान॥
संयम लेने के पहिले समकित का ही करना पुरुषार्थ ।
यह व्यवहार कृत्य निश्चय से अणुभर भी है नहीं यथार्थ॥

दोहा

नेमिचंद्र आचार्य का यह पावन संदेश ।
समकित युत संयम धरो धारो जिन मुनि वेश॥

ॐ ह्रीं चक्षुरिन्द्रियविषयसर्वोत्कृष्टक्षेत्ररहितातीन्द्रियस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

बोधचक्षुस्वरूपोऽहं ।

जयमाला

मन वच तन कृत कारित अनुमोदन से जिनवर का गुणगान।
क्रोधादिक चारों कषाय क्षय हेतु यही है सूर्य समान ॥
किन्चित मात्र न कोई मेरा किंचित् मात्र न मैं पर का।
यही अकिंचन भाव ज्ञानमय यही भाव मेरे घर का ॥
शल्य रहित हो व्रत धारूंगा उर निर्मलता लाऊंगा ।
व्रत लेकर भी शल्य रही तो नाथ अधोगति पाऊंगा ॥
दुष्टों से संसर्ग करूंगा त्वरित दुष्ट बन जाऊंगा ।
धर्मी से संसर्ग करूंगा तो धर्मी बन जाऊंगा ॥
जिसकी जैसी संगति होती वह वैसा ही बन जाता ।
एक सड़ा हो आम अगर तो पाल पूर्ण ही सड़ जाता ॥
पंच परावर्त्तन का समय बिताया अरे अनंतानंत ।
विष मिथ्यात्व न उगला अब तक कैसा द्रव्य दृष्टि भगवंत ॥

नर भव पाकर भी यदि मैं मिथ्यात्व न क्षय कर पाऊंगा।
तो फिर पंच परावर्तन का दुख काल अनंतों पाऊंगा ॥
यह मनुष्य भव अति दुर्लभ है दुर्लभतर जिनधर्म महान।
चिंतामणि को छोड कॉच के टुकडों पर मोहित अनजान॥
राग द्वेष रुपी परिणति दुर्ध्यान कराने में सक्षम ।
शुद्ध स्वपरिणति एकमात्र हर लेती है मिथ्याभ्रमतम ॥
जिनधर्मी गुणग्राही हो तो दुर्गुण ग्रहण नहीं करता ।
जैसे हंसा नीर क्षीर पा केवल क्षीर ग्रहण करता ॥
जिन्हें शास्त्र पढने सुनने में अरुचि उन्हें बहु समझाओ।
उनमें रुचि जाग्रत कर दो तुम धर्म प्रभाव सुप्रगटाओ ॥
भाव शुद्धि हो कार्य शुद्धि हो विनय शुद्धि ईर्या पथ शुद्धि।
भिक्षा शुद्धि प्रतिष्ठापन शयनासन वाक्य शुद्धि वसु शुद्धि॥
भव दुख रहित कर्म नाश हित नाथ समाधि मरण पाऊँ।
बोधिलाभ ले शिव पथ पाऊँ महामोक्ष मंगल पाऊँ ॥

दोहा

लब्धिसार का सारपा करूं आत्म कल्याण ।
निज स्वभाव की शक्ति से पाऊ पद निर्वाण ॥

ॐ ह्रीं लब्धिसार समन्वित श्री जिनागमाय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं परिपूर्ण बोधचित्स्वभावाय नम ।

सिद्धत्वलब्धिस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद :

दोहा

लब्धिसार जिन शास्त्र को वन्दूं बारंबार ।
पंच लब्धियां प्राप्त कर करूं आत्म उद्धार ॥

इत्याशीर्वाद :

ॐ

श्री क्षपणासार पूजन

तिकरण सुभयोसरणं, कमकरणं खवण देसमंतरयं ।
संकम पुव्व फड्डया किट्टी करणाणुभवण खमणाये॥

स्थापना

ॐ ह्रीं इन्द्रियाकारप्रदेशावगाहप्रमाणरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः ।
निजाक्षयधामस्वरूपोऽहं ।

दोहा

गाथा क्षपणा सारकी दो सौ बासठ ज्ञान ।
नेमिचद्र आचार्य कृत जिनआगम का ज्ञान ॥

वीरछंद

क्षपणा सार ग्रंथ के कर्त्ता नेमिचंद्र आचार्य महान ।
क्षपणासार ग्रंथ लिखकर के किया भव्य जन का कल्याण ॥
क्षपणा सार ग्रंथ को पूजूं जिनवाणी को करूं नमन ।
कर्म क्षयंकर शुद्ध आत्मा द्वारा काटूं भव बंधन ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् ।
ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् ।

१७७ ॐ ह्रीं स्पर्शनेंद्रियदेशावगाहप्रमाणरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नमः
अबद्धोऽहं ।

अष्टक

छंद ताटंक

निर्मल उज्ज्वल सलिल चढाऊं त्रय रोगों का नाश करूँ।
स्वाध्याय की परंपरा पा निज शुद्धात्म प्रकाश करूँ॥

क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का घाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि ।

शीतल मलयागिर-चंदन कर भेंट भवातप नाश करूं ।
स्वपर भेद विज्ञान पूर्वक केवलज्ञान प्रकाश करूं ॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय संसारताप विनाशनाय चंदन नि

अक्षय ला विजयार्ध सुगिरि से अक्षय पद को प्राप्त करूं ।
परम ज्ञान संपदा प्राप्ति हित अनुभव रस उर व्याप्त करूं ॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षत नि

नंदनवन के पुष्प चढ़ाऊं काम भाव विध्वंस करूं ।
यथाख्यात चारित्र प्रगटकर गुण अनंत सर्वांश वरूं ॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय कामबाण विनाशनाय पुष्पं नि ।

अनुभव रसमय सुचरु चढ़ाऊं क्षुधा वेदना नाश करूं ।
रत्नत्रय की प्रबल भक्ति से केवल आत्म प्रकाश वरूं॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

मैं दीपांग कल्पतरू से ला स्वर्ण दीप ही उजियारूं ।
विपरीताभिनिवेश नष्टकर मोह तिमिर दुख निर्वारूं ॥

क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि. ।

ध्यान धूप यह शुक्ल ध्यान की जला कर्म ईंधन जारूं।
सर्व प्रकृतियां क्षय कर अब तो संकट पूरा निरवारूँ॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्री कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूप नि ।

कल्प वृक्ष के सुफल चढ़ाऊं महामोक्षफल ही पाऊँ ।
मोक्षमार्ग सम्पूर्ण धार कर सिद्ध स्वपद निज प्रगटाऊं ॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय मोक्षफल प्राप्ताय फल नि. ।

अर्घ्य बनाऊँ अष्ट प्रकारी पद अनर्घ्य निज प्रगटाऊँ ।
भव रोगों की श्रेष्ठ महौषधि पाकर शाश्वत सुख पाऊँ॥
क्षपणा सार शास्त्र अति पावन परम शान्ति का दाता है।
भेद ज्ञान की निधि देता है अष्टकर्म का धाता है ॥

ॐ ह्रीं कर्म क्षय प्ररूपक श्री क्षपणासार शास्त्राय अनर्घ्यं पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं जातिनामकर्मरहितातीन्द्रियस्वरूपाय नम. ।

अतीन्द्रियज्ञानस्वरूपोऽहं ।

महाअर्घ्य

सूरज से मैं तिलक माँग कर लाया चंदा से चामर ।
तारों से यह माला लाया कंगन का दाता सागर ॥
काश्मीर से केशर लाया गंगोत्री से लाया जल ।
चंदन लाया मलयागिर से गंध बनी यमुना उज्ज्वल ॥

इतनी वस्तु संग्रहित करके आया हूं स्वामी द्वारे ।
बिन सम्यकित्त ही जप तप व्रत संयम स्वामी मैंने धारे ॥
अतः न पाया मार्ग मोक्ष का कोरा वेश धरा अब तक ।
चारों गति में मारा मारा स्वामी सदा फिरा अब तक ॥
केवल अट्ठाईस गुणों के धारी मार्ग न पाते हैं ।
पंच समिति त्रय गुप्ति युक्त मुनिवर ही शिव पद पाते हैं॥
वसु प्रवचन मातृका सदा ही माता सम पालन करतीं ।
मुनिवर के संसार दुखों को इक मुहूर्त में ही हरती ॥

दोहा

क्षपणासार महान का नित्य करूं स्वाध्याय ।
यह कर्म क्षय हेतु है ये ही शिव सुखदाय ॥

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियादिसामान्यसंख्यारहितातीन्द्रियस्वरूपाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

अतीन्द्रियज्ञानस्वरूपोऽहं

जयमाला

छंद-चामर

क्रोध के निमित्त में भी शान्त भाव क्षमा जान ।
मान अभिमान का अभाव मार्दव महान ॥
वक्रता का भाव ही शुद्ध आर्जव वितान ।
लोभ की प्रकर्ष रूप से निवृत्ति शौच जान ॥
प्राणि घात भोग वृत्ति त्याग संयम महान ।
हितमित प्रिय शुद्ध वचन समीचीन सत्य जान ॥
कर्म क्षय हेतु इच्छा निरोध तप प्रधान ।
सर्व परिग्रह का त्याग त्याग धर्म है महान ॥

परमें ममत्व त्याग आकिंचन धर्म जान ।
आत्म ब्रह्म में विराजमान ब्रह्मचर्यमान ॥
यही दशधर्म श्रेष्ठ आचरण योग्य है ।
आत्म हित हेतु यही श्रेष्ठ हैं मनोज्ञ है ॥
अध्रुव अनुप्रेक्षा का चिन्तन सुखकारी है ।
अशरण अनुप्रेक्षा ही तो भव दुखहारी है ॥
संसार भावना हरती संसार को ।
एकत्व भावना देती भव पार को ॥
अन्यत्व भावना भेद ज्ञान है महान ।
अशुचित्व भावना शुचिता की श्रेष्ठ खान ॥
आस्रव की भावना क्षय करती पुण्य पाप ।
संवर की भावना हरती सब आस्रव तमाम ॥
निर्जरा सुभावना कर्म बंध क्षय करती ।
लोक भावना प्रसिद्ध लोक भ्रमण है हरती ॥
बोधि दुर्लभ भावना महान ज्ञानमय ।
धर्म अनुप्रेक्षा करती संसार जय ॥
ये द्वादश अनुप्रेक्षा सर्वोत्तम मंगल हैं ।
जो भी जन ये भाते हो जाते उज्ज्वल हैं ॥
रत्नत्रय प्राप्ति ही धर्म बोधि है महान ।
परभव में संग जाए वह समाधि है प्रधान ॥
चौरासी लाख योनियों का करती अभाव ।
यह समाधि जीव को प्राप्त कराती स्वभाव ॥

छंद ताटंक

क्षपणासार पठन करने वाले मुनि मोक्षमार्ग पाते ।
आठों कर्मों को क्षय करके सिद्ध स्वपद निज प्रगटाते ॥

पहिले घाति कर्म क्षय करके नंत चतुष्टय निज पाते ।
फिर अघातिया भी क्षय करके सीधे ही शिवपुर जाते ॥
सादि अनंतानंत सौख्य था गुण समुद्र में बहते हैं ।
त्रिलोकाग्र पर सिद्धि शिला के ऊपर ही वे रहते हैं ॥
निज से अठखेली करते हैं निज के गीत सुनाते हैं ।
निज अनुभव अमृत रस पीकर परम शान्ति को पाते हैं॥

ॐ ह्री गुणस्थान मार्गणा जीवसमासआदि रहित विमलस्वरूप जीवराजहंसाय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं एकेन्द्रियादिविशेषसंख्यारहितातीन्द्रियस्वरूपाय नम

नित्यैकस्वरूपोऽहं ।

आशीर्वाद :

सम्यक् प्रतिमा पालन का उपदेश आपका मंगलमय ।
यद्वातद्वायदि पालन है तो है वही अमंगलमय ॥
प्रतिमाधारण के पहिले सम्यक् दर्शन धारो सुखकार ।
तब व्रत लेना सार्थक होगा प्रतिमा होगी कभी न भार ॥

दोहा

क्षपणा सार महान का सदा करूं स्वाध्याय ।
कर्म क्षयंकर धर्म ही शाश्वत शिव सुखदाय ॥

इत्याशीर्वाद :

---

*यह कागज की आभूषण छवि कितने दिन तक रह पाती है।
ये पर कृत उपाधियाँ सारी मुझको बहकाने आती है॥
क्षणिक बिनश्वर से मुझको क्या लेना देना है बतलाओ।
मुझको तो अविनश्वर सुख की ही पावनता उर भाती है॥
मुझे न कोई मान चाहिये मुझे नहीं सम्मान चाहिये ।
बस केवल आशीष चाहिये जो मुश्किल से मिल पाती है॥*

२५१

[illegible]

[illegible]

[illegible]

भावना के पर्वत पर ज्ञान का उजेरा है ।
वासना की धरती पर मोह का अँधेरा है ॥
क्रोध की प्रचुरता से नर्क दुख मिलता है ।
कोटि तैंतीस सागर ज्ञान नहीं खिलता है ॥
सातों ही नर्कों में मूढ़ता का डेरा है ।
भावना के पर्वत पर ज्ञान का उजेरा है ॥
मान की प्रचुरता से नीच गति मिलती है ।
देशना जिनवर की उनको नहीं झिलती है ॥
विनय का नाम नहीं मान का बसेरा है ।
भावना के पर्वत पर ज्ञान का उजेरा है ॥
माया की प्रचुरता से ही कुगति मिलती है ।
ऋजुता के भावों की चांदनी खिलती है ॥
कुटिलता के भावों ने बार बार घेरा है ।
भावना के पर्वत पर ज्ञान उजेरा है ॥
लोभ की ज्वाला से तृष्णा ही बढ़ती है ।
हृदय से ज्ञान किरण रंच नहीं जुड़ती है ॥
स्वर्ग पाकर भी दुखी ऐसा ये अंधेरा है ।
भावना के पर्वत पर ज्ञान का उजेरा है ॥
मिश्र परिणामों से मिलता नर भव सुन्दर ।
पाप पुण्यों को लिए डोलता है ये पर घर ॥
आस्रव बंधों का ये बना घेरा है ।
भावना के पर्वत पर ज्ञान का उजेरा है ॥
अब तो निज ज्ञान जगा मोह की नींद भगा ।
पर से ममता तज दे निज का ही ध्यान लगा ॥

मेरा मेरा करता है कोई ना तेरा है।
भावना के पर्वत पर ज्ञान उजेरा है ॥
दुखमयी कषायों ने ज्ञान से भ्रष्ट किया ।
एक पल सुख न दिया सर्वदा कष्ट दिया ॥
आज अवसर आया ज्ञान ने टेरा है ।
भावना के पर्वत पर ज्ञान का उजेरा है ॥

ॐ श्री जिन श्रुतान्तर्गत गोम्मटसाराय महाअर्घ्यं नि. ।

महाजयमाला

छंद तांटक

भव तृष्णा संसारिक लिप्सा ही विष लता भयावह है ।
बहु आरभ पाप का घर है नर्कागार परिग्रह है ॥
जब तक यह उच्छिन्न न होगा तब तक यह दुखदायक है ।
इसको क्षय करने की विधि ही एकमात्र सुखदायक है॥
देह भोग संपत्ति पुत्र परिवार आदि सब प्राप्त हुए ।
किन्तु न मेरे अन्तरंग में धर्म भाव प्रभु व्याप्त हुए ॥
ज्योतिष में नवग्रह दुखदायी होते यह दसवां ग्रह है ।
भव तृष्णा संसारिक लिप्सा ही विष लता भयावह है ॥
धन का मोह असीमित हो तो ज्ञान दीप बुझ जाता है ।
न्याय बुद्धि विस्मृत होती है निज विवेक मर जाता है ॥
इन भावों से "एगोधम्मोनलब्भई" कथनी सच है ।
शुद्ध भाव बिन कभी भी न हित होगा यह उत्तम जिन वच है॥
पर द्रव्यों में मोह भाव ही तो असीम दुख का द्रह है ।
भव तृष्णा संसारिक लिप्सा ही विष लता भयावह है ॥
पशु जैसा जीवन मत जी तू मत असभ्य बन हे प्राणी ।
ग्यारह अंग पूर्व नौ पढ़ कर भी क्यों रहता अज्ञानी ॥
अब से सोच समझकर करना कर्मों पर दोषारोपण ।
कर्म नहीं करते हैं कुछ भी भूल जीव की है क्षण क्षण॥

वही सिद्ध होता है जो इन सब से रहता निस्पृह है ।
भव तृष्णा संसारिक लिप्सा ही विष लता भयावह है ॥

ॐ श्री जिन श्रुतागम गोम्मटसाराय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि.

आशीर्वाद

दोहा

गोम्मटसार विधान की पूजन हुई समाप्त ।
आप कृपा से हे प्रभो महामोक्ष हो प्राप्त ॥

इत्याशीर्वादः

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं श्री गोम्मटसार शास्त्राय नमः

शान्ति पाठ :

दोहा

पारम शान्ति की प्राप्ति हित करूं आपका ध्यान ।
सुखिया हो ससार सब सबका हो कल्याण ॥
कर्म शक्तिया क्षीण हों सतत शान्ति हो नाथ ।
ज्ञान भावना जगे उर तजूं न तुव पद साथ ॥
राग भाव का नाश हो शुद्ध भाव उद्योत ।
आत्म शक्ति से प्राप्त हो महा शान्ति का स्रोत ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

नौ बार णमोकार मंत्र का जाप्य

क्षमापना

इस विधान की भूल सब क्षमा करो हे नाथ ।
गोम्मटसार महान को सदा झुकाऊं माथ ॥
अजर अमर पद प्राप्त हो हो जाऊं निष्कर्म ।
आप कृपा से प्राप्त हो वस्तु स्वरूप स्वधर्म ॥

पुष्पांजलि क्षिपामि

जाप्यमंत्र - ॐ ह्रीं गोम्मटसार समन्वित श्री जिनागमाय नमः –

ॐ

श्री चारित्र शुद्धि विधान पूजन

मंगलाचरण

अनुष्टुप

मंगलं पंच परमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरम् ।
मंगलं शुद्ध चारित्रं आत्म धर्मोस्तु मंगलम् ॥

पूजन स्थापना

ॐ ह्रीं त्रिकालचित्सस्वरूपानंतगुणस्वामी स्वरूपाय नमः

परंब्रह्मस्वरूपोऽहं

छंद गीतिका

चारित्र शुद्धि विधान पूजन करूँ प्रभु मंगलमयी ।
मोह क्षोभ विहीन निज चारित्र ही भवदुख जयी ॥
पंचव्रत पांचों समिति त्रय गुप्ति पालूँ प्रभु महान ।
सूर्य केवलज्ञान पाने को करूँ निज आत्मज्ञान ॥
चारित्र शुद्धि महान व्रत लूँ करूँ निज में वास विभु ।
इक सहस दो शतक चौंतीस करूँ मैं उपवास प्रभु ॥

छंद-दोहा

अष्ट द्रव्य प्रासुक चढ़ा पालूँ दृढ़ चारित्र ।
निरतिचार चारित्र हो पावन परमपवित्र ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्र अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्र अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं ।
ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्र अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणं पुष्पांजलि क्षिपामि ।

श्री चारित्र शुद्धि विधान पूजन

ॐ ह्रीं निरुपम सुखावास निजात्म स्वरूपाय नमः

केवलसौख्यसुधाकपोऽहं

अष्टक

छंद-रोला

निज शुद्धात्म स्वरूपाचरण हृदय में धारूँ ।
उज्जवल सम्यक् नीर प्राप्ति हित निजको वारूँ ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं नि.।

परमशुद्ध शीतल चंदन की सुरभि स्वलाऊँ ।
भव आताप विनाश करूँ शाश्वत सुख पाऊँ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं नि.।

ज्ञान पूर्ण अक्षत स्वभाव की महिमा आए ।
मेरा अपना अक्षय पद मुझको मिल जाए ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय अक्षतं फल प्राप्ताय फलं नि ।

शील स्वभावी पुष्प ज्ञानमय हृदय सजाऊँ ।
कामवाण को नाशूँ निजके वाद्य बजाऊँ ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय कामवाण विध्वंसनाय पुष्पं नि ।

परम तृप्ति दायक नैवेद्य ज्ञानमय लाऊँ ।
क्षुधा व्याधि को नाश करूँ प्रभु निजपद पाऊं ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं नि ।

मोह तिमिर नाशूँ स्वज्ञान के दीप जगाऊँ ।
मिथ्यात्वादिक पाँचों प्रत्यय बंध मिटाऊँ ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं नि ।

ज्ञान धूप की सुगंध पाकर निजको ध्याऊँ ।
अष्टकर्म अरिनाश करूँ ध्रुव सौख्य सजाऊँ ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय अष्टककर्म दहनाय धूप नि. ।

ज्ञानभाव फल की महिमा के दृश्य लखूँ मैं ।
महामोक्ष फल का सदैव ही स्वाद भरूँ मैं ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं नि. ।

ज्ञानभाव के अर्घ्य बनाले सतत् निरंतर ।
पद अनर्घ्य अविलम्ब प्राप्ति का श्रम हो तत्पर ॥
मोह क्षोभ से रहित आत्म चारित्र मिले प्रभु ।
ज्ञानभावना से हृदयाम्बुज त्वरित खिले विभु ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक श्री सम्यक् चारित्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं नि. ।

श्री चारित्र शुद्धि विधान पूजन

ॐ ह्रीं सर्वाभिलाषरहित निरवद्यरूपाय नमः

निरभिलाषस्वरूपोऽहं ।

त्रयोदश विधि चारित्र व्रत

के १२३४ उपवास

दोहा

परमश्रेष्ठ व्रत जानिए चारित्र शुद्धि विधान ।
बारहसौ चौंतीस हैं शुभ उपवास महान ॥
भेद सहित वर्णन करूँ करूँ आत्म कल्याण ।
तेरह विध चारित्र के पाऊँ पद निर्वाण ॥

पुष्पांजलि

दोहा

पंच महाव्रत जानिए शाश्वत सुख का सार ।
मंगलोत्तम शरण हैं ले जाते भव पार ॥

ॐ ह्रीं पर द्रव्य स्वीकार परिणाम रहित परिपूर्णज्ञाननिधि स्वरूपाय नम

अहिंसा महाव्रत के १२६ उपवास

वीरछंद

परम अहिंसा व्रत के हैं उपवास एकशत अरु छब्बीस ।
निज स्वभाव के भीतर रहने वाले हो जाते जगदीश ॥
मनवच काया शुद्धि पूर्वक शुद्ध अहिंसा व्रत धारूँ ।
निज चारित्र शुद्धिपूजन कर निज स्वभाव को स्वीकारूँ॥

ॐ ह्रीं अहिंसा महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्री त्रसस्थावरविविधहिंसाविदूरचारुशर्माब्धिपुर स्वरूपाय नमः

उत्तम सत् स्वरूपोऽहं परिपूर्णस्वरूपोऽहं

सत्य महाव्रत के ७२ उपवास

परम सत्यव्रत की महिमा के श्रेष्ठ बहत्तर हैं उपवास ।
निज शुद्धात्मा की मर्यादा में रहने का हो उल्लास ॥

मनवच काया शुद्धि पूर्वक शुद्ध सत्य व्रत उर धारूँ।
निज चारित्र शुद्धिपूजन कर निज स्वभाव को स्वीकारूँ॥

ॐ ह्रीं सत्य महाव्रत समन्वित श्री सम्यक चारित्राय अर्घ्यं नि.।

ॐ ह्रीं अशुभ परिणाम प्रत्यय रहित शुद्धचित्स्वरूपाय नम.

मंगलरूपज्ञानस्वरूपोऽहं

अचौर्य महाव्रत के ७२ उपवास

परम अचौर्य महाव्रत के भी श्रेष्ठ बहात्तर हैं उपवास ।
परभावों को ग्रहण न करना निजभावों में करूँ निवास॥
मनवच काया शुद्धि पूर्वक शुद्ध अचौर्य सुव्रत धारूँ ।
निज चारित्र शुद्धिपूजन कर निज स्वभाव को स्वीकारूँ॥

ॐ ह्रीं अचौर्य महाव्रत समन्वित श्री सम्यक चारित्राय अर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं समस्त विकथारूप वचनरचनारहित परमात्मस्वरूपाय नम

सहजानंदस्वरूपोऽहं

ब्रह्मचर्य महाव्रत के १८० उपवास

ब्रह्मचर्य व्रत के मन भावन एक शतक अस्सी उपवास।
महाशील का मुकुट धारकर पाऊँ स्वामी मुक्ति निवास॥
मनवच काया शुद्धि पूर्वक शुद्ध शील व्रत ऊर धारूँ ।
निज चारित्र शुद्धिपूजन कर निज स्वभाव को स्वीकारूँ॥

ॐ ह्रीं ब्रह्मचर्य महाव्रत समन्वित श्री सम्यक चारित्राय अर्घ्यं नि.।

ॐ ह्री कामविकारहित निष्काम स्वरूपाय नम:

नर्देहस्वरूपोऽहं

अपरिग्रह महाव्रत के २१६ उपवास

अपरिग्रह व्रत के महिमा मय दो सौ सोलह हैं उपवास।
अपरिग्रही अनिच्छुक बनकर निजस्वभाव मेंकरूँ निवास॥

मनवच काया शुद्धि पूर्वक अपरिग्रह व्रत उर धारूँ ।

निज चारित्र शुद्धिपूजन कर निज स्वभाव को स्वीकारूँ॥

ॐ ह्रीं अपरिग्रह महाव्रत समन्वित श्री सम्यक चारित्राय अर्घ्यं नि.।

ॐ ह्रीं त्रिकाल निरूपरणं निंदजन् परमस्वरूपाय नमः

निराकारूपोऽहं

दोहा

ये ही पाँचों महाव्रत पालूँ प्रभु निर्दोश ।

शुद्धि सहित चारित्र हो पाऊँ शिव सुख कोष ॥

छह सौ छयासठ जानिये पाँचों के उपवास ।

निज स्वभाव में कीजिये आप सदैव निवास ॥

ॐ ह्रीं अहिंसा सत्य अचौर्य ब्रह्मचर्य अपरिग्रह महाव्रत समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय महार्घ्यं नि.।

ॐ ह्रीं पंचषायरहित अपायरूप निर्मलस्वरूपाय नमः

परममयविपोऽहं

रात्रि भोजन त्याग के ९ उपवास

छंद-गीतिका

रात्रि भोजन त्याग व्रत के मात्र नौ उपवास हैं ।

जीव रक्षा हेतु श्रावक के सदा व्रत पास हैं ॥

आत्म चिन्तन आत्म मंथन आत्मा में जागरण ।

आत्मा में वास करना आत्मा ही है शरण ॥

रात्रि को भी आत्मा का ध्यान करना चाहिये ।

आत्मा के पास रह उपवास करना चाहिये ॥

ॐ ह्रीं रात्रि भोजन त्याग व्रत समन्वित श्री सम्यक चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं रागादि पुद्गलविकार रहित अविकारस्वरूपाय नमः

अनाहारक स्वरूपोऽहं

पाँचों समिति

ॐ ह्रीं संसार शरीर योग विकलरहित शुद्ध स्वरूपाय नमः

एकोऽहं

दोहा

पॉचों समिति महान हैं पालन कीजे आप ।
वसु प्रवचन मातृका यही हरतीं भव संताप ॥

पुष्पांजली

ईर्यासमिति के ९ उपवास

छंद-गीतिका

प्रथम ईर्या समिति भू को लखूॅ मैं जूडा प्रमाण ।
फिर चलूॅ मैं जाग्रत हो प्रति समय हो सावधान ॥
मात्र नौ उपवास इसके कभी प्रभु भूलू नही ।
आत्म झूला छोड़ करके कहीं भी झूलूॅ नहीं ॥

ॐ ह्रीं ईर्यासमिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्य नि ।

ॐ ह्रीं निर्बंध चित्स्वभाय नमः ।

अबंधस्वरूपोऽहं

भाषा समिति के ९० उपवास

शुद्ध भाषा समिति के उपवास हैं नब्बे महान ।
वचन हित मित प्रिय सदा हों करूँ सबका हित प्रधान ॥
मौन ही सर्वोत्तम है शुद्ध भाषा समितिमय ।
मैं रहूँगा आत्मा में जो सदा है ज्ञान मय ॥

ॐ ह्रीं भाषा समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्य नि ।

ॐ ह्री वचन क्रियारहित निजात्मतत्त्व स्वरूपाय नमः ।

चिच्चमत्कारमात्रोषहं

ऐषणा समिति के ४१४ उपवास

समिति जिसका नाम आगम एषणा कहता प्रधान।
चार सौ चौदह बताए गए हैं उपवास प्राण ॥
शुद्ध हो आहार सम्यक अहिंसा मय मितव्ययी ।
आत्मा की प्रीति ही है एकमात्र क्षुधाजयी ॥

ॐ ह्रीं एषणा समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं परविरहित निर्विकल्प स्वरूपाय नमः

राग द्वेषरहितोऽहं

आदान निक्षेपण समिति ९ उपवास

आदान निक्षेपण समिति उपवास नौ संयुक्त है ।
पूर्णत यह अहिंसक है व्रती गुण से युक्त है ॥
वस्तु का धरना उठाना हो विवेक सहित महान ।
ज्ञान की ही भावना का हृदय में हो कीर्तिगान ॥

ॐ ह्रीं आदान निक्षेपण समिति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं रागादि पुद्‌गल विकारहित निर्विकार चित्स्वरूपाय नमः ।

शुद्ध चैतन्य धातुस्वरूपोऽहं

व्युतसर्ग प्रतिष्ठापना समिति के १३ उपवास

है समिति व्युत्सर्ग दूजानाम है प्रतिष्ठापना ।
देह मल का त्याग कीजे ध्यान पूर्वक आपना ॥
स्वयं के भीतर समाना यही निज कर्तव्य हो ।
त्याग हो पर भाव का बस यही निज मतव्य हो ॥

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग समिति मन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं सहजसिद्ध नित्यनिरावरण कारणसमयसार स्वरूपाय नमः ।

कारणशुद्धस्वरूपोऽहं

दोहा

पाँच शतक इकतीस हैं पंच समिति उपास ।
निजस्वरूप में वास ही है सम्यक् उपवास ॥

ॐ ह्रीं पंच समिति प्ररूपक श्री सम्यक् चारित्राय महार्घ्य नि. ।

तीन गुप्ति

सोरठा

तीन गुप्ति पालन करूँ माता वसु प्रवचन कृपा ।
पाऊँ केवल ज्ञान ध्यान करूँ अन्तर्मुहूर्त ॥

ॐ ह्रीं समस्त पौद्‌गलिक विकाररहित परमात्म स्वरूपाय नम·

परमस्वभावोऽहं

पुष्पांजली

मनोगुप्ति के ९ उपवास

छंद-गीतिका

मनो गुप्ति विशुद्ध बिन कल्याण होता ही नहीं ।
जो न मन को गुप्त करते आत्महित करते नहीं ॥
उपवास नौ इसके कहे हैं हृदय से पालन करूँ ।
ज्ञानपूर्वक मातृका प्रवचन सुवसु धारण करूँ ॥

ॐ ह्रीं मनोगुप्ति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं निर्मलानंतगुणचित्स्वरूपाय नम. ।

नित्यशुद्धगुणस्वरूपोऽहं

वचन गुप्ति के ९ उपवास

वचन गुप्ति महान के उपवास नौ भी हैं प्रसिद्ध ।
मौन की महिमा अनूठी निराली है स्वयंसिद्ध ॥
वचन गुप्ति महान को मैं हृदय से पालन करूँ ।
ज्ञान पूर्वक मातृका प्रवचन सुवसु धारण करूँ ॥

ॐ ह्रीं वचन गुप्ति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्य नि ।

ॐ ह्रीं सकल पुद्गल वचन प्रपंच रहित शुद्धस्वरूपाय नमः

अकायशुद्धस्वरूपोऽहं ।

कायगुप्ति महान के उपवास नौमी जान लूँ ।
अहित काया का न हो यह ध्यान भी उर धार लूँ ॥
काय गुप्ति प्रधान का मैं हृदय से पालन करूँ ।
ज्ञानपूर्वक मातृका प्रवचन सुवसु धारण करूँ ॥

ॐ ह्रीं काय गुप्ति समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय अर्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं अविवेक नाट्यरूप वर्णादिमान पुद्गलरहित चैतन्यस्वरूपाय नमः

अतुलज्ञानस्वरूपोऽहं

दोहा

तेरह विधचारित्र में तीन गुप्ति हैं श्रेष्ठ।
बिना गुप्ति चारित्र तो है पूरा ही नेष्ठ ॥

ॐ ह्रीं तीन गुप्ति प्ररूपक श्री सम्यकचारित्राय महार्घ्यं नि.।

ॐ ह्रीं द्रंव्यभावना कर्मरहित निजस्वरूपाय नमः

नित्यनिरंजनोऽहं

दोहा

बारह सौ चौंतीस हैं कुल उपवास महान ।
यही शुद्धि चारित्र है निज चारित्र प्रधान ॥
जो इनका पालन करें वे ही पाते शुद्धि ।
जो डिग जाते मार्ग से उनकी खोटी बुद्धि ॥

पुष्पांजलि

महाअर्घ्य

छंद-हरिगीत

स्वानुभव रस तंत्र सार महान तंत्र विचित्र है ।
ज्ञान गंगोत्रीमयी निज आत्मा का चित्र है ॥

अतीन्द्रिय आनंद का निर्झर परम मंगलमयी ।
सिद्धपद सम्राट है यह शुद्ध ज्ञान जगज्जयी ॥
मोक्ष का कारण यही है कार्य भी यह है महान ।
इसीका आस्वाद लेकर हुए सिद्ध अनंत जान ॥
स्वानुभव रस प्राप्त करने के लिए हो आत्म ध्यान ।
मुक्ति सौख्य महान दाता यही मंगलमय महान ॥
यही है चारित्र शुद्धि प्रसिद्ध शिव सुख के लिए ।
जो बना चारित्रधारी उसी ने आनंद किए ॥
महाअर्घ्य करूँ समर्पित भाव से तुमको जिनेन्द्र ।
आज मैं भी हो गया हूं तुव कृपा से आत्मेन्द्र ॥
आत्मज्ञ प्रधान ही सर्वज्ञ होते हैं महान ।
नाशघाति अघाति सारे सिद्ध पद पाते प्रधान ॥

ॐ ह्रीं त्रयोदश विध चारित्र समन्वित श्री सम्यक् चारित्राय चारित्र शुद्धि दिगग्दर्शक महाअर्घ्यं नि ।

ॐ ह्रीं सम्यभावमय सम्यक्चारित्रस्वरूपाय नम.

सतत निर्मलोऽहं

जयमाला

छंद विजया

ये कैसा भजन है जो बाहर ही बाहर
ये पल भर को भीतर जरा भी नहीं है ।
ये कैसा जतन है तेरी शुद्धि का रे
जो बाहर है भीतर जरा भी नहीं है ॥
है चारित्र बाहर ही बाहर दिखावा
निजात्मा के भीतर जरा भी नहीं है ।

तो चारित्र शुद्धि का यह यत्न तेरा
विकल है सकल तो जरा भी नहीं है ॥

न व्रत तेरे सम्यक् समिति भी न सम्यक्
ये त्रय गुप्ति सम्यक् जरा भी नहीं है ।

अगर दृष्टि पर द्रव्य पर ही है तेरी
तो चारित्र शुद्धि जरा भी नहीं है ॥

संभल मूढ अब तो स्वयं में समा जा
निजातम ले बढ़कर के कोई नहीं है ।

यही शुद्धि चारित्र भूला सदा से
स्व चारित्र पूजा जरा भी नहीं है ॥

छंद ताटंक

निज चारित्र शक्ति का बल ही परम शुद्धि का दाता है।
साम्यभाव चारित्र सदा ही उत्तम मोक्ष प्रदाता है ॥
जो भी केवल ज्ञानी हुए सभी ने हर्षित इसको धारा है।
साम्य भाव चारित्र शक्ति से अष्टकर्म संहारा है ॥
मैं भी यह चारित्र धरूं प्रभु अंतरंग में निर्भय हो ।
नि शंकित हो निज स्वभाव की महिमा पाऊं जय जय हो॥
जब चारित्र शुद्धि होगी तब यथाख्यात भी होगा ही ।
केवल ज्ञान महान आत्मा में फिर प्रगटित होगा ही ॥
घाति कर्म क्षय करके फिर मैं अघातिया भी नाश करूं।
अपना निज सिद्धत्व सुपावन पल में पूर्ण प्रकाश करूं ॥
एक समय में मोक्ष जाऊँगा मुक्ति वधू के संग रहने ।
निजानंद आनंद कंद रस की ध्रुवधारा में बहने ॥
कृत कृत्य हो जाऊंगा मैं सिद्ध पुरी का पाऊंगा वास ।
निज चारित्र शुद्धि का है मुझको स्वामी पूरा विश्वास ॥

यह चारित्र महान शुद्धि पूर्वक ही मैं पालूँ स्वामी ।
जितनी भी बाधाएँ आएँ नाश करूँ अंतर्यामी ॥

छंद मत्त सवैया

जब जब स्वभाव पर दृष्टि गई तब तब यह जीवन धन्य हुआ।
पर द्रव्यों से पीछा छूटा निज से मैं पूर्ण अनन्य हुआ ॥
जब जब स्वभाव से हटी दृष्टि तब तक अनंत दुख पाए हैं ।
नर सुर नारक पशुगतियों में कर भ्रमण न कुछ सुख पाए हैं।
अब तो अपना कल्याण करूँ चारित्र शुद्धि करके स्वामी।
भव के बंधन सारे तोडूँ ऐसा बल दो अन्तर्यामी ॥

ॐ ह्रीं चारित्र शुद्धि दिग्दर्शक त्रयोदश विधि चारित्र प्ररुपक श्री सम्यक् चारित्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं नि. ।

ॐ ह्रीं सकल कर्मकलकरहित परम शुद्ध स्वरूपाय नम

परमशाश्वतानंदस्वरूपोऽहं

आशीर्वाद :

दोहा

पूर्ण शुद्ध चारित्र ही साम्य भावमय नाथ ।
यथाख्यात चारित्र पा होऊँ नाथ सनाथ ॥

इत्याशीर्वाद :

जाप्यमंत्र- ॐ ह्रीं सम्यक्चारित्राय नमः

मुनिपद अंगीकार किए बिन मुक्ति मार्ग है अति दुर्लभ।
निज परिचय बिन सम्यक् दर्शन महा कठिन है नहीं सुलभ।।
चिर अनादि से है व्यवहार किन्तु वह है व्यवहाराभास।
जो अनादि से बिन निश्चय चारित वह है निश्चय आभास
दोनों का समेल चाहिये तब कल्याण सहज होगा।
निश्चय पूर्वक ही व्यवहार सुसम्यक् हो तो सुख होगा।।

❋❋❋

संसार का किनारा आज मुझको मिल गया ।
शुद्धात्मा का कमल आज पूरा खिल गया ॥
शुद्धात्म गगन से लगी झड़ी स्वज्ञान की ।
अनुभव का जितना रस भरा अंतर में झिल गया ॥
शुद्धात्म ध्यान में दिखी है मुक्ति वधू अब ।
आँचल स्व सौख्य मयी अब पल में छिल गया ॥
मिथ्यात्व आदि पाँचों प्रत्यय हवा हुए ।
कर्मों के पर्वतों का मूल जड़ से हिल गया ॥
सम्यक्त्व सहित संयम जो लेता है प्राणी ।
उसको तो मोक्ष वृक्ष स्वतः पूर्ण फल गया ॥

卐卐卐

मात जिनवाणी झुलाती पुत्र निज चैतन्य राज ।
लोरियाँ गाकर सुनाती हृदय में उसके विराज ॥
ज्ञान का तू पुंज है आनंद घन परिपूर्ण है ।
गुण अनंतानंत का सागर स्वरस आपूर्ण है ॥
फिर बता तू क्यों दुखी है सच बताना पुत्र बात ।
क्षीण होता जा रहा मुख सूख तेरे गए गात ॥
मिथ्यात्व उलकापात ने ही किया है मेरा विघात ।
मोह झंझावात ने की दुर्दशा मेरी सुमात ॥
विपथ पर ही जा रहा माँ नहीं है सद्धर्म ज्ञात ।
मार्ग बतलादो मुझे माँ प्राप्त हो मंगल प्रभात ॥

卐卐卐

ज्ञान सम्यक्त्व लेके आया है ।
मोह मिथ्यात्व को भगाया है ॥
भेद विज्ञान की मंजिल पाई ।
तत्त्व अभ्यास रंग लाया है ॥
मुक्ति पथ में न अब रुकावट है ।
कंटकों को वे बीन आया है ॥
देश संयम है पूर्ण संयम अब ।
सभी भव पार इसने पाया है ॥
मुक्ति के द्वार अब खुले देखो ।
सिद्ध पुर राज्य इसने पाया है ॥

卐卐卐

ॐ

अनेकों विधानों के बाद श्री परमात्म प्रकाश विधान, श्री षटखंडागम विधान, श्री योगसार विधान, श्री द्रव्य संग्रह विधान श्री भक्तामर विधान, श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय विधान आदि के पश्चात् यह जिनागम का रहस्यपूर्ण **श्री गोम्मटसार विधान** आपके कर कमलों में प्रस्तुत है लाभ लें

प्रकाशन प्रतीक्षारत

१. श्री समयसार कलश विधान

२. श्री पद्मनन्दि श्रावकाचार विधान

२. समाधि शतक विधान

३. श्री कार्तिकेयानुप्रेक्षा विधान

४. श्री धर्मोपदेशामृत विधान

५. कसाय पाहुड विधान

अन्य विधान लिखने के लिए आपके सुझाव सादर आमंत्रित है।

दूरभाष **तारादेवी पवैया प्रकाशन** **४४ इब्राहीमपुरा**
५३१३०९ **भोपाल** **४६२ ००१**

राजमल पवैया रचित शताधिक पुस्तकों में से कुछ पुस्तकें

१ चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
२. तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र विधान
३ सम्मेद शिखर विधान
४. वृहद् इन्द्रध्वजमंडल विधान
५ शान्ति विधान
६ विद्यमान बीस तीर्थंकर विधान
७ चौसठ ऋद्धि विधान
८. पंचकल्याणक विधान
९ नंदीश्वर विधान
१० जिन गुण संपत्ति विधान
११ तीर्थंकर महिमा विधान
१२ याग मंडल विधान
१३. पंचपरमेष्ठी विधान
१४ पंच कल्याणक विधान
१५ कर्म दहन विधान
१६ जिन सहस्रनाम विधान
१७ कल्पद्रुम विधान
१८ गणधर वलय ऋषिमंडल विधान
१९ जैन पूजांजलि
२० तीर्थ क्षेत्र पूजांजलि
२१ श्रुत स्कंध विधान
२२ पूजन किरण
२३ पूजन पुष्प
२४ पूजन दीपिका
२५ पूजन ज्योति
२६ मंगल पुष्प द्वितीय
२७ मगल पुष्प द्वितीय
२८. मगल पुष्प तृतीय
२९ समकित तरग
३०. अपूर्व अवसर
३१ द्वादश भावना
३२. आदिनाथ भरत बाहुबलि पूजन
३३ आदिनाथ शातिनाथ
३४. शाति कुन्थु अरनाथ
३५ शाति पार्श्व महावीर
३६ नेमि पार्श्वनाथ महावीर
३७ गोम्मटेश्वर बाहुबलि
३८. भगवान महावीर
३९ जैन धर्म सार्व धर्म
४०. वीरों का धर्म
४१ जन मगल कलश
४२. जीवन दान
४३ सिद्ध चक्र वदना
४४. तीनलोक तीर्थ यात्रा गीत
४५ भक्तामर पद्यानुवाद
४६ चतुर्विंशति स्तोत्र
४७ जिनेन्द्र चालीसा संग्रह
४८ चतुर्विध भक्ति
४९ जिन सहस्रनाम हिन्दी
५० [illegible]
५१ मुनि वन्दना
५२. आत्म वन्दना
५३. समय
५४. [illegible]
५५ परमब्रह्म
५६. सैंतालीस शक्ति विधान आदि
५७ कुन्दकुन्द महिमा
५८ कुन्दकुन्द वाणी
५९ इन्द्रध्वज विधान
६०. [illegible]
६१. कुन्दकुन्द वचनामृत
६२. श्री कल्पद्रुम मंडल विधान
६३ श्री तत्त्वार्थ सूत्र विधान
६४ श्री [illegible] विधान
६५ श्री प्रवचन सार विधान
६६. श्री नियमसार विधान
६७. श्री अष्टपाहुड़ विधान
६८. श्री समयसार विधान
६९ श्री रत्नकरंड श्रावकाचार विधान
७० श्री [illegible] विधान
७१ श्री षट्खंडागम [illegible] विधान
७२ [illegible] विधान
७३ श्री पुरुषार्थ सिद्धि उपाय विधान
७४ श्री योगसार विधान
७५ श्री द्रव्य संग्रह विधान
७६. श्री [illegible] विधान
७७ [illegible] विधान
७८ श्री गोम्मटसार विधान
७९. श्री समयसार कलश विधान
८०. श्री [illegible] विधान
८१ श्री धर्मोपदेशामृत विधान

जय हो जय हो जिनवाणी की

बज उठी सरस [illegible] [illegible] वीतराग जिनवाणी की।
शुभ अशुभ बंध निज ध्यान मोक्ष जय हो वाणी कल्याणी की॥
जय हो जय हो जिनवाणी की ॥ जय ॥
अंतर में हुई झनझनाहट, निज में निज की प्रतीति जागी ।
रागों से मोह ममत्व भगा, मिथ्या भ्रम ईति भीति भागी ॥
जड़ता के घन चकचूर हुए जय जिनश्रुत वीणापाणी की॥
जय हो जय हो जिनवाणी की ॥ जय ॥
रस गंध स्पर्श रूपादिक सब यह तो पुद्गल की छाया है ।
यह देह भिन्न है चेतन से पुद्गल की गन्दी काया है ॥
जग के सारे पदार्थ पर है ध्वनि गूंजी केवलज्ञानी की ॥
जय हो जय हो जिनवाणी की ॥ जय ॥
चेतन का है चैतन्य रूप, इसमें है ज्योति अनन्त भरी ।
सुख ज्ञान वीर्य आनन्द अतुल, है आत्मशक्ति गुणवंत खरी॥
परमात्म परम पद पाती है चैतन्य शक्ति ही प्राणी की ॥
जय हो जय हो जिनवाणी की ॥ जय ॥

❖❖❖❖

जय बोलो सम्यक् दर्शन की

जय बोलो सम्यक् दर्शन की । रत्नत्रय के पावन धन की॥
यह मोह ममत्व भगाता है, शिव पथ में सहज जगाता है ।
जय निज स्वभाव आनंद घन की ।जय बोलो
परिणाम सरल हो जाते हैं, सारे संकट टल जाते हैं ।
जय सम्यक् ज्ञान परम धन की ।जय बोलो
जप तप संयम फल देते हे, भव की बाधा हर लेते हैं ।
जय सम्यक् ज्ञान परम धन की ॥ जय बोलो
निज परिणति रुचि जुड जाती है, कर्मों की रज उड जाती है।
जय जय जय मोक्ष निकेतन की ।जय बोलो

❖❖❖❖

तो से लाग्यो नेह रे

तोसे लाग्यो नेहरे त्रिशलानंदन वीर कुमार ।
तोसे लाग्यो नेहरे, कुन्डलपुर के राजकुमार ॥ तोसे
गर्भकाल रत्नो की वर्षा, सोलह स्वप्न विचार ।
त्रिशला माता हुई प्रफुल्लित, घर घर मगलाचार ॥ तोसे
जन्म समय सुरपति सुमेरु पर करें पुण्य अभिषेक ।
तप कल्याणक लौकान्तिक आ करैं हर्ष अतिरेक ॥ तोसे
चारघातिया क्षय करते ही पायो केवल ज्ञान ।
समवशरण मे खिरी दिव्यध्वनि, हुआ विश्व कल्याण॥तोसे
पावापुर से कर्मनाश सब पाया पद निर्वाण ।
यही विनय है दे दो स्वामी हमको सम्यक् ज्ञान ॥ तोसे
भेदज्ञान की ज्योति जगा दो अधकार कर क्षार ।
तुम समान मै भी बन जाऊँ हो जाऊँ भव पार ॥ तोसे

❖❖❖❖

चलो रे भाई सिद्धपुरी

देखो खडा है विमान महान, चलो रे भाई सिद्धपुरी ।
वायुयान आया है सीट सुरक्षित अभी करालो ।
सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित के तीनो पास मगालो ॥ देखो
नर भव से ही यह विमान सीधा शिवपुर जाता है ।
जो चूका वह फिर अनन्त कालो तक पछताता है ॥ देखो
रत्नत्रय की बर्थ सभालो शुद्धभाव मे जी लो ।
निज स्वभाव का भोजन लेकर ज्ञानामृत जल पीला ॥ देखो
निज स्वरूप मे जगरुक जो उनको पहुँचाएगा ।
सिद्ध शिला सिहासन तक जा तुमको बिठलाएगा ॥ देखो
मुक्ति भवन मे मोक्ष वधू वरमाला पहनोगी ।
सादि अनत समाधि मिलेगी जगती गुण गाएगी ॥ देखो

❖❖❖❖